स्मृति ग्रंथ

स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी



प्रेरणा स्त्रोत

श्री राम-सत्य लोकहित ट्रस्ट

"बोधपुंज" जुना, बिलासपुर (म.प्र.)

लोकार्पण दिनांक - १६-९-९६ (गणेश चतुर्थी)

मेरी मां, हमारी मां

(स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी) निर्वाण १९-१-९०

संभवत:
मेरी मां उनमें से थीं
जो अपने लिए कम जीती थीं
दूसरों के लिए ज्यादा जीती थीं ।
उनकी बाहें इतनी बड़ी थीं,
न जाने कितनी ममता भरी,
न जाने कितनों को आत्मवत् समेटी थीं ।

उनका दिल इतना बड़ा था,
न जाने कितनी करुणा भरी थीं
न जाने कितनों को अपना सा,
माना था, जाना था ।

उनका आंचल इतना बड़ा था,
बरगद सा फैला उसी की छांव सा,
न जाने कितनी ठंडक लिए,
न जाने कितनों को दुख तपन से,
बचाया था अपनत्व जताया था ।

मेरी मां, हमारी मां
केवल दूसरों के लिए करती थीं,
कर्मयोगी सी,
बिना प्रतिदान चाहे, प्रतिफल के
अपनों से भी, अपने लिए,
कभी कुछ चाहा नहीं, लिया नहीं ।
धरती सी सहती थीं,
वही सब जो धरती भी सहती है ।
बिना कहे, सभी सुने,

इसीलिए शायद,
धरती की, धरणी की, श्रेणी
मां की श्रेणी बनी
मां बनी धरणी
या धरणी ही मां बनी ।

मेरी मां, हमारी मां,
धर्म को तत्व से जानती थीं ।
दया ही धर्म है,
दूसरों के लिए जीना ही कर्म है,
इन्हीं दोनों रास्तों पर चलना,
और चलते–चलते बिना रुके,
विलीन हो जाना, हमारी मां का,
अचानक ही मोक्ष है ।
इसी दया, इसी कर्म तथा इसी मोक्ष को,
वे जीते जी, जीती थीं
संकलन से दूर, दानी सी
मानी वे जाती थीं ।

मेरी मां, हमारी मां,
ममता की दरिया सी,
निर्मल बन निर्मल कर,
बहती थीं, रहती थीं,
पर उनकी ममत्व की नदी के,
मोह किनारे नहीं थे
जो उनके जीवन प्रवाह को
बांध सके केवल स्वजनों के
मोह के किनारों के बीच सीमित रख सकें

उनकी ममता का प्रवाह
वहां प्रवाहित होती थी
जहां कोई प्यासा हो
दुखी हो, ममत्व से विहीन हो
यह वह मानस था
जिसने न जाने कितनों की
मां, उन्हें बनाया था ।

मेरी मां, हमारी मां
बिना पढ़े ज्ञानी थी
यदि ज्ञान का मतलब,
अपने जीवन के उद्देश्य को जानना है ।
करीब और पास
दूरों का भी साथ
सभी की समझ
और जीतों को सम्हालना है ।
वे शाश्वत मां की कहानी थीं,
हर एक की जुबानी थीं ।
अचानक निर्मोही की विग्रह सा जाने,
मुझे न जाने क्या उन्हें बतानी थीं ।
क्या उन्हें जतानी और क्या उन्हें सुनानी थी ।

मेरी मां, हमारी मां,
दुनियादारी का कानून
जहां तुमने जीते जी चलने न दी
किसी को दुख न देना
जहां तुम्हारा नियम था
वहीं तुम्हारी आखिरी
अलविदा का दुख

कैसे माना तुमने देना
हमें सब छोड़कर
सब के दिलों को तोड़कर
और उसके बाद अब
कौन दे पाएंगी दिशा
तुम्हारे चुने निर्वाण पर।

मेरी मां, हमारी मां,
निस्वार्थ से परमार्थ तक
तुम्हारी सफल यात्रा
को, क्या दें हम
आखिरी प्रणाम
या एक छोटी मात्रा
तुम्हारे जीवन के आयाम का
चुन लें हम
फिर भी क्या
यहां की वीरानी
कोलाहलों के बीच का सूनापन
कोई भर पायेगा
तुम्हारे बाद सब झेलने
दुख-सुख में सबके साथ चलने
सबको साथ चलाने,
तुम्हारे बिना
मेरी मां, हमारी मां
तुम्हारे बिना ।

डॉ. हर्षवर्धन – ३०-१-९०

संस्मृति सत्यवति

समाधिरूपा गृह कार्य दक्षा ख्याता स्थते स्त्यवती तिनाम्बा।
सत्यं समाचार गुणं दघाना नारी विशिष्टा च वभूव एका ।।

तस्याश्चरित्रं लघु स्वल्पमात्रं वकुं समीहे अति आदरेण।
श्रीराम खेलावन शर्मणा मया कूतं प्रबन्धं निजभानृ भावम् ।।

मध्यप्रदेशः ऋर्षि देववासः मध्य स्थितः भारत वर्ष देशे।
तन्यध्यवर्ति ऋषिणामवासो बिलासपुरः मंडल मास्थितोवै।।

अन्तर्गतः तस्य विलासपुरस्य ग्रामो विशेषेा झुलनैक नामः।
यत्र स्थिता साधक देव पूजकाः यज्ञ स्थलीव निश्धुश्च भूर्मिम्।।

यज्ञं च दानं पठनं च कुत्रचित, गृणन्ति देवान् निजभक्ति भाजनाः
विघार्थिनो यत्र रटन्ति वेदान् धर्माप्लुन तत्र समस्त वेशः ।।

ग्रामाधिकारि गुण धर्म धारि अभ्यागतान् सन्त ऋषीन प्रपूजकः।
अनन्त रामेति सवर्य ब्राम्हणः चान्द्रायणो गौत्र इति स्पदंस्यात्।

पत्नि सुशीला गृहणी वरिष्ठा हीरामतिनार्म् रराज तद् गृहे।
नामानुकारं गुण धर्म मानं मणेर्यथा कान्ति मथि र्मात स्थात्।

व्रतोपवासादि समाचरन्ति, अभ्यागतान् तत्पर भेाजयन्ति ।
मतिः प्रयन्नाः सद्भक्ति भावै उमारमायाम् खलुजुग्म कायाम्।

वैसाखमासे शुभ शुल्क पक्षे तिथौ नवभ्याम् रविवासरे च।
पंचाधिकं सप्तनि पुण्य वर्षे एको न विशति शता द्विप्रवर्ममाना।।

प्रवर्तमाने शुभकालयोगे प्रासूत कन्या गुण धर्मिणी सा।
अनन्त रामस्तु प्रमोद भावं अनेक दानं व्यतरत समायाम्।।

यथा सदाचार क्रम प्रणीतः संस्कार जीवस्य इहात्र लोके
रीत्या न्यवर्तन श्री अनन्त रामः तथा नुसारं गुणिनाम् निदेशः।

दिनं सप्राप्तः शुमनामकारं पुरोहितः पडितवर्य धीमान्।
आगत्य पंचाग सहान्य पुस्तकम व्यलोकयत् शुद्ध विवेक भावैः।

उमेति सत्य श्रम लक्ष्मी संपदा सांकेनिता लक्षणयुक्ष वालिका।
अनोऽत्र सत्यावति नामकार आधायिका सत्य गुणा न्नियम स्यात्।।

संवोध्य चैवम सः बाह्मणोगतः पुरस्कृतो भोजननदान नस्त्रै।
आह्लादितः तत्र अनन्तराम तथैव हीरामति सुव्रता च।।

भुखा कृतिः सुन्दर सुन्दर भ्रवौ विशाल नत्रो वचसः स्फुटत्वं।
सुचारू हासं वर लक्षणा कृति लक्ष्मौ उमालाक्षणिकः एकत्व।।

दिनं दिनं वर्धति कन्यका सा पितु गृहेलालन पालने च।
अनन्त रामोपि प्रसंन्न चेता नवं नवं मोद निलोक्य वालिका।

प्राप्ते वयेसप्तम वर्ष कन्या पर्यस्फुटत् गौरि गुण च तस्याम्।
परिश्रमं वृद्ध जनांश्य सेवया तथानुसार दिन चर्यया च ।।

पूजास्थलं लिम्पति गोमयेन आनाय्य पुष्पं तुलसी दलं च
सत्यं वचो व्यवहरति चकन्या, प्रमोदभावं वर दम्पति द्वौ।

सेवा प्रदातुं निजमासंरच सदाव्यतिष्ठत् स्थल संनिधिच।
पूजा स्थले भोजन पाक शालाम् सेवा स्थले वृद्ध जनांश्चभिक्षुकान्।।

एवं विघः गौरिगुणं प्रवर्धित सेवा प्रधानं वचनंच सत्यम्।
सत्येनि नामा गुणधर्म संयुता प्रकाशितो लौकिक चर्चया च ।।

वयः स प्राप्तः दश वर्ष कालम् उद्धादितं लक्ष्मी गुणं च तस्याम्।
मुद्रागताहस्त तले च तस्याः प्रसादिता साः खलुवृद्ध मात्रा।।

पश्चात दिनं कश्चित वीतकांल प्राप्तः सानेता मदुका का मेला।
तत्र स्थिताः सज्जन भक्ति भाजना गच्छन्तितदर्शन स्नान हेतवे ।।

पितु रमुज्ञां अधिगम्य सत्या मात्रा सहानेक सुकन्यकाभिः।
पित्रा प्रदत्तं वहुरूप्यकं च जगाम मेला बहु गोद भावम्।।

क्रीतं कया क्रीउनकं चवस्नुनम! काचन क्रीडाति निजअंग भूषणम।
क्रीणाति श्रेष्ठं परिधानमन्या, एवं विधः विनिमय द्रव्य तत्र।।

निवर्त्थ सत्यागुरू देव दर्शनात् मात्रा प्रयुक्तास्तुरराध भोजनम् ।
आहूय विप्रान गुरू देव भिक्षुकोन् स्व हस्त सेवा प्रददानिवालिका।।

नकिच्चिदुत्साहन केतु मिच्छा मुद्रा प्रयुक्ता श्चप्रयोजनीयान्।
सेव्यासदालक्ष्मी न भोग योग्या एवं वचोभिः परितुष्य मानाः।।

अल्पा वया सामति निश्चला ध्रुवा, उद्घाटिता सुद्धि सा पौवदैहिका।
अर्थस्य विघा प्रति पद्धमाना, संस्कार वीजानिव बुद्धि योगे।।

आश्चर्य वत पश्यति कूश्चिदेनाम् आश्चर्य वसवदतितथैव चान्यः।
नकश्चिदाश्चर्य हि जीव लोके प्रयुक्त-मभ्यास जनास्तु दर्लभाः।।

सदाशरीर श्रम सेवया च अर्थ व्ययः दीन हितायनिश्चयम्।
उमां रमां अर्चन व्यज्यमानः चचार सत्या दिन चर्यया च।।

प्राप्ते वये चन्द्रमुखी उदेनि लावण्य युक्ताः द्युति चन्द्रकान्ता।
अचंन्चलः योवन निश्चला मतिः विभाति वाला वर दैवसंपदा ।।

विशाल नत्रौ मधुरा च वाणी हासो विलासो वर अग बालिका ।
प्रसन्न मूतैः रनवद्यरूपा न वर्णनीया शुभ लक्षणाकृति ।।

अनन्त रामस्य तु चिन्तनं भवेत वरः सुयोग्यः लभताम् नु कुत्रचित् ।
श्री राम गोपाल वरः प्रतिष्ठः लोहर्सी ग्रामे – धनिनो विप्र पुत्र।।

सः शिक्षितः शुभ्र सुचारू रूपः कन्या प्रदेया समभाव तस्मैः।
एवं विधः रीत्यनुसार सर्वा वाक्दान फलदान किया निवर्तिता।।

यथा दिनं निश्चित व्याह योगं श्रीरामगोपाल वरः सुविज्ञः।
वरातिभिः संगसुसेब्यभाना सभागमन् तत्र सुभ्राम झूलनाम्।।

ग्रामस्य वीथिन परिभार्ज्य माणान् संलिप्य मानान खलु भितयश्च।
सुसज्यमानाः वर मडपादयः पुष्पै बरे मंगल तोरणादिभिः।।

श्रीरामगोपाल प्रयाति मंडपं वरार्चनं हेतु सुविज्ञ धीमान्।
यथा उपेन्द्रः उपमानमेति वृणोति लक्षी समभाव मेतत।

वरार्चनं च मधुपर्क दानं करोति श्रद्धालु अनन्त रामः
उपैतु कन्याम् इति निर्दिदेश पुरोंहितोमंडप मध्य आसने।।

संमृत्य शुद्धोदम नीय वस्त्रं शाटो पमं चिहिनत चन्द्रतारकेः।
रत्ने विशेषै रूपगुह्य मालाम् समा सजत् केश ललाट शोभाम्।।

नीलारविन्देव सुशोभतुः द्वौ नेत्राज्त्रनौ चारू अलकृतौच ।
चूडी विशेषै रधिहस्त नाडिका चकास्ति कन्डाभरणं तदीया।।

सौभागिनी मंगल गीत गायिनी आनाय्य सत्याम् शुभ मंडल स्थले।
उपाविशत् सा इतरे चआसरे पूजा विधातुं वर कांक्षिणीयम्।।

मौरे ललाटे पटवस्त्र चात्मनि वक्षस्थले स्वर्ण विशेष रत्नैः ।
दधातिशोभां नर पुगवानाम् श्री राम गोपाल मनोज्ञ रूपः ।।

विधाय पूजां श्री उमा गणेशं नवग्राहादीनपरोश्च देवान्।
आवाहनं पूजन स्थापनं च अकारयत पंडित कर्म वेता।।

अनन्त रामः परिपूर्ण कामः समाचरत पितृ गणान प्रमोदम्।
विधाय पाणिग्रहणं चकर्मम् प्रापूरयत सार्थक कन्यादानम्।

आशिर्वचोभिः सहगोत्र सारवा उच्चारितौ पंडितवर्थ धीमता।
प्रदक्षिणा सप्तपदी किया च वम्रामतु राम गोपाल सत्ये।।

संपूज्यदेवं श्री उमा महेशं चचार कृत्यं खलु ग्रन्थि वंधनम्।
एवं विधः रामगोपाल सत्ये प्रायोजयेताम् पतिपत्नि भावे।।

अनेकदानै सह कन्या दानं रत्नैविशेषै सह स्वर्ण दानं ।
विधाय गोदान अनन्त रामः व्यसर्जयत् प्रीति करं जामातृकम्।।

सन्मानयिन्वा बहु मिष्ठ भौजनै सुशाट नस्त्रै प्रणयादिभिश्च
व्याहे समाप्ते निपुणः सप्रही व्यसर्जयत तान् समधीन बरातीन।।

एवं विघः रामगोपाल वर्यः यथा विधाऩं उपयम्य सत्याम्।
वरानिभिः संग समानयत् ताम् लोहर्सी ग्रामं निज पैत्रिक स्थम्।।

गृहे उषित्वा वरदम्पति द्वौ सत्या चरन्ती श्रमदान कृत्यम्।
ज्येष्ठांश्च वृद्धान् खलु भोजयन्ति सुपाच्य मन्नं द्विदल च शाकम्।।

अथ प्रयाति नगरं जबलपुर अध्येतु कामः श्री रामगोपालः।
सत्यामयस्थाप्य पितु गृहे पुनः वभार पीडा दयितु र्वियोगः।।

विद्यां पठित्वा श्रमश्रद्धया च तथैव सकल्प सुनिश्चता मतिः।
श्री रामगोपाल सर्मोतरच्च उपाधि लब्ध्वा वरस्नात कस्य।।

गृहम् सभा गम्य सवान्धनै सः जनाश्च सर्वा अभिभावकाश्च।
संतुष्यमानाः विरलः प्रमोदः संव्याप्य मानो गृह ग्राम सर्वत्र।।

व्यतीय माने ग्रीषमावकाशे प्रारम्यमाणे च नवीन सत्रो।
श्रीरामगोपाल पुनः समैच्छत पठामिविंद्या व्यवहार वादीनाम्।।

वेला प्रपन्ना लघु संकटावहा प्रतीपभावं उपरोध वन्धुमिः ।
अन्याश्चवालाः पठनाय योग्यास्तं मुद्राहरणं सुलभं न भन्यते।।

श्रुत्वा गिरम ताहशी मित्र भावाम्, सत्या स्वरूपे प्रति पघ माना।
प्रादुर्भवत लक्ष्मी विपन्न काले जगाद सत्या मधुराभिः वाणिभिः।।

न किञ्चिदस्ति उपरोध मुद्रया प्रबोधयन्ति पतिदेव सुब्रतम्।
सुसज्य मानोभव सद्यमेव विद्यात्वया निश्चय प्रापणीया।।

हर्षे समाप्याद्रित भिन्नदेह– श्री रामगोपाल कृतज्ञ भावात्
प्रयाति दूरं नगर चनागपुरम् हर्षचशोकं ग्रहणाय विद्याम्।।

पितुगृहे वासकरोति सत्या सन्देश पत्रै परिबुध्यमाना।
पत्युरनुज्ञां परिपालयन्ति प्रयोजनीयान् समुपैति तत्परः।।

एवं विघः वर्ष द्वयम व्यतीतः सदावकाशे दयितामुपैति।
परिश्रमादम्युपगभ्य विद्या श्री रामगोपाल ग्रहमणच्छत्।।

वर्षमच युग्माधिक चत्वारिशत ईशस्य श्री राम गपोल वर्यः
उत्तीर्णताम्र गच्छति लब्ध विद्याम्। विधिर्विशेषे च परिक्षमाणे।।

वृणोमिमार्गम माधिवतृणां नृणाम् चरामि चयव्यिवहार वादीनाम्।
स्थान मधिष्ठाय बिलासपुरेबरे एवं विघः जीवित माचरामि ।।

यथादिनं भ्रातृ गणांश्चमातरम् प्रास्तौत श्री रामगोपाल स्वमतम्।
वरिष्ठ भ्राता श्री श्याम सुन्दरः प्रतीपभावेन जगाद उत्तरम्।।

कृंत व्ययम यत पठनस्य हेतवे तवार्थ भांग परिपूर्णतांगतम्।
अंतः परम बालक वर्ग पत्रचषः गच्छन्ति शाला पठनाय आवयो।।

उपार्ज्य मुद्रां स्वयमेव कुत्रतः योग्योसिगन्तु व्यवसाय हेतवे।
न चाश्रयः लाभ करोभविष्यति अर्थस्यभार नहिनोहु शक्तुमः ।।

श्रुत्वातदर्थ अभिभूय कांक्षी, विमूढतां कि करवाव्यगच्छत।
सत्यातदाकर्ण्य समृद्ध भावम् सम्बोधयामास पतिं पतिव्रता ।।

नचिन्तनीया खलुमुद्राहार्या प्रसीद देव भव शोक हीनः
अग्रेसरित्वा कुरू कार्य सर्वम् प्रयोजनीयम् गमनं बिलासपुरम्।।

संचारिणी शक्ति त्रयीव सत्या प्रोत्साहयन्ति श्री रामगोपालम्।
उपक्रमं साधय प्रेसयन्ति उमारमायाम् समुपाश्रयन्ति ।।

एवं विघः रामगोपालधीरः समासद्च्च नगरं बिलासपुरम्।
शुल्कानुरूपं अधिगृह्य गेंहं व्यवस्थितो भूदनुकूल वेशे।।

विद्योपयोगः धन मर्जनाय नित्यं परापेक्ष परोन्मुखी स्यात्।
जनस्य कार्यम् व्यवहार प्रक्रिया ज्ञानं नितांन्तंमधिव मृणां सदा।।

तद् ज्ञान हेतौ प्रथमं नवीनाः कस्याभिवकतुर्गुण माश्रयन्ति ।
वर्षंचद्धिवर्ष मितं कदा कदां सेवन्ति ज्ञानार्जन काक्षिणः तान्।।

वक्तावरिष्ठः श्रीकुंजबिहारी श्रीरामगोपालेन सेवितोभूंत।
ज्ञानार्जनं केवल सेवालाभः न मुद्रालाभः पर्यन्त वर्षेम्।।

अयंसकालः खलु संकटावहः आसधमाना कठिना व्यवस्था।
प्रतीपभावं न सहाय कार्यम् स्वभ्रात्रृणां संकट काल सूचकम्।।

अत्रान्तरे कश्चित् वीत काले श्रीराम गोपाल विभर्ति साहसम्।
एकस्य जाल्मस्य पपात जाले ससंकटः गर्हित गाधमानः।।

न दर्शनं तत्र स्वभ्रातृणाम् क्वचित्तथैव ततुल्य न भागनेयो।।
न गौरहा ज्ञापन मात्र जायते स संकटः गौरव शालिनो गतः।।

श्रीराम खेलावन गेन्द लालौ आसदमानौ च समीप वार्तिनौ।
सहायकौ किन्तु चबालभावे अवोध वन्तौ नगरस्य कौतुकम्।।

सम्बोध्यतीव पतिं पतिव्रता प्रोत्साहयन्तीव समीप वर्तिनम्।
सम्पादयन्ती गृहकार्यसर्वम् हस्तश्रमः यत् समयानुकुलं।

सत्या तु संचारयतीव तेषु चोत्साह भावं नु अपास्य कुंठाम्।
माधुर्यव्यवहार उदार भावै अतोषयत तांश्च समीप वर्तिन्।।

निष्ठा रमायाम पतिभक्तिमास्थिता गृणाति कष्टं लघुभाव मेव
दृष्ट्वा तदातत्पर्ति भक्ति गौरवं ससंकटः तस्य प्रसाद हैतुकः।।

अथव्यतीतः खलुकाल संकटः न्यायाधिकारी श्री वोवड़े महान्।
श्रीराम गोपाल मनोज्ञ वृतिनम् दादातिश्रेष्ठां सुकरांव्यवस्थां ।।

सत्या सदा अर्चयतिं उमारमाम उदार व्यवहार जनेषु पत्युः।
व्याजेन तत संकट काल पातम् रमाप्रदतंजन ख्याति लाभम्।।

सदा सदा जयजयतः उमारमे समा गमो नित्य कृती जनानाम्।
श्री रामगोपाल वराधिवक्ता जनस्य कार्यो परि मुद्रालाभः।।

यानयान् न्यवर्तत जयशीलएषः तैरेव अन्यानपि आनयन्ति।
ख्यातिः धनम् नित्य नवम् ववर्ध श्री रामगोपाल वरिष्ठ वक्ता।।

एवं व्यतीयाय सकष्ट कालम् उपक्रमं अभ्युदयाय तूर्णम्।
सत्या सदा हर्षित भाव धन्या प्रासूतपुत्रम् गुणनाम हर्षम्।।

यथा 2 वर्धतिपुत्र दैहिकः तथा तथा कार्य्र फलेग्रहीश्च।
सुलक्षणं पुत्रविलोक्य दम्पति श्री रामगोपाल कृतार्थ रूपः।।

रमा प्रसादान्ननु सत्वशीलता यदर्जिता श्रीमति सत्ययाऽ खिला।
अवर्धयत् रामगोपाल वक्ता आर्शिर्वचोभिरिव सिद्धी लब्धा।।

ईशा शताद्धि खलुएकोनविशति समाचतुश्चत्वारिंसत सुवाच्या।
प्रारंभ्य माणमुदयायहेतवे, आरोहणं उत्तम राजयोगम्।।

गच्छत्सु कालेषु दिनक्रमेषु, अथाधिवक्ता श्री राम गोपालः।
गृहस्य निर्माण करोमिशीघ्रमधत संकल्प इतिब्रुयाणः।।

एवं चसंसाधन संचय क्रमं भूम्चर्जनः कार्य्रकरान्नियोजनम्।
अन्यानिवस्तुनी प्रयोजनानि आलम्भनं कर्मयथैव प्रारभत्।।

दरस्यखननं श्रमिका न्नियोजनं वाहैप्रयुन्यै नयनादि इष्टकान ।
गृहस्यनिर्माण प्रसर्पितोभूत सत्या सुसंकल्प फ़लेग्रहीवः।।

बोधस्य प्रुंजः इतिबोध पुज संज्ञार्थ नामानमदस्त पडितः।
भवन्ति कल्याण प्रदनि नित्यम् दैवादि पूजा शुभकार्य तदृगे।।

संपूज्य देवं श्री गणेश गौरीम् महानुभावो निज निर्मितेगृहे।
अभोजयत बन्धु गणांश्च ब्राम्हणान् सत्या सुपाच्यम् निज हस्त पाकम्।।

नबन्धु मित्रान खलुदृष्टि गोचरान काले अतीते बहुत संकटावहे।
जिहेमि तदुल्लेखयितु उपेक्षां पुरूषार्थ शीलश्च कथं च तेच।।

उदेति श्रीभारत वर्ष व्योम्नि श्री राम गोपाल वरिष्ठ वक्ता
अलंकरोति पदवी वरिष्ठा भास्वन सदाभास्करवत् प्रतिष्ठः।।

अनेक काले पटले प्रतिष्ठः पदं अनेकं गरिमाय माणः।
देशस्य सवोच्च पदं दधानः रराज श्री रामगोपाल विज्ञः ।।

सत्यासदाराजति बोधपुज्ये सहानुगै शिक्षित पंच पुत्रैः।
योगेश एकोद्विनियः प्रसान्तः तृतीय पुत्रस्य विनोद नामः।।

हर्ष चतुर्थः श्री अशोक पंचमः सर्वेगुणज्ञा सकला सुलक्षणा।
उमारमां पुजतिनित्यमेव सएवं सत्वः उदयाय हैतकः।।

अनेकदानमवशाननददाति सुभोजनं चापि ददाति भिक्षुकान्।
अनेक वस्त्रै सह कम्बलादिमिः न्ययोजयत दीन जनान दरिद्रान्।।

सदा सदा रामगोपाल तस्यै ददाति आस्थां गरिमा मयिंश्च ।
तथैव सत्या अनुशीलयन्ति पत्युः सदाचार प्रयोजनानि ।।

युग्माधिकं सप्तति वर्ष प्राप्ते निर्वाणमापत विगत स्पृहैव।
तीर्त्वा भवाब्धि च सुचारू वृत्या उमारमायाम्बहु भक्ति भावै।।

विज्ञापयन्ति फलका प्रतिष्ठिता सत्येतिवाच्या अधिबोध पुंजे।
दृष्टा तदर्थ च प्रबंध मेतन कृतम् मया रामखेलावनैन ।।

तस्याः प्रतीकात्मक बोधपुज्यः स्थितः पृथिव्याभिव मूक चिहन्।
अयम! स पत्र स्मृतिपत्र नामा युमान्त कालं स्मरणं प्रदास्यति।।

ओम शन्ति, ओम शन्ति, ओम शन्ति,

प्रबंध कर्ता
राम खेलावन रामप्यारी
समदरिया (डगनिया वाला)

रामखेलावन
समदरिया

दिनांक 07/07/2005

रामप्यारी रामखेलावन

भूमिका

श्री राम–सत्य लोक हित ट्रस्ट का लोकार्पण, यह नाम अपने आप ही सम्पूर्ण है। लोकहित में श्रीराम के शाश्वत सत्य को लोकार्पित कर स्वर्गीया सत्यवती की पुण्य श्लोक आत्मा की चिन्तन शान्ति की व्यवस्था जो कर सके वे धन्य हैं। कितने ऐसे हैं जो श्रीराम हृदयगम करने का प्रयास करते हैं। उनके सत्य को स्वीकारना तो और भी कठिन है। फिर भी ऐसा नहीं कि ये विपुला पृथ्वी जनहितकारी लोगों से शुन्य हो गये हैं। महामानव पैदा होते रहे हैं, आज भी हैं और आगे भी होते रहेंगे। उन्हें भले ही वह सम्मान उनके जीवनकाल में न मिल पाया हो जिसके वे अधिकारी रहे हैं, जो सम्मानित है वही दूसरे का सम्मान करना जानता है। क्योंकि किसी के गुण को पहिचानने के लिए स्वयं गुणी होना परमावश्यक है। किसी को तौलने के लिए हमारे पास वाट होना जरूरी है। यह वाट भी उसी वजन का हुआ करता है जितना कि तुलनीय पदार्थ। इसी न्याय के अनुसार लोक हितेषी व्यक्ति ही लोकहितकारी ट्रस्ट की स्थापना में सामर्थ्यवान हो सकते हैं। जिसके घर में दिए का प्रकाश विद्यमान है वही मंदिर को प्रकाशमान करने की क्षमता रखता है। ऐसे सक्षम व्यक्तियों को हम प्रणाम करते हैं।

स्वर्गीया श्रीमती सत्यवती देवी निश्चित ही दीनजनों के लिए सहृदया थी। तभी उनकी स्मृति में महान कल्पना को चरितार्थ करने के लिए इस बहुहितकारी ट्रस्ट की स्थापना संभव हो पा रही है। जीवनकाल में जो महत्ता का प्रतिपादन करती रही हैं उनकी ही आत्मा इतनी बड़ी प्रेरणा का अजस्र स्रोत बन सकती है। आज के इस अन्याय पूर्ण युग में लोकन्याय के ट्रस्ट का निर्माण हार्दिक स्वागतेय हैं। हम बधाई दे उन्हें जिन्होंने इतनी बड़ी बात की कार्यान्वित करने का संकल्प लिया है। उसी प्रकार से आत्म विश्वास और नारी कल्याण तथा साधनहीन व्यक्तियों के दुःख हरण का जो उपाय सोचे वह धन्य है। आपकी हमारे प्रति अपेक्षा व्यर्थ नहीं जायेगी। हमारा सम्पूर्ण समय और समर्थ सहयोग आपको शत प्रतिशत समर्पित है। जीवन का जो भी क्षण इस लोकोपकारी कार्य में लगेगा उसी को हम सार्थक मानेंगे। आपकी तिहरी यज्ञवेदी में हमारी आहुति को स्वीकार करें।

इस पुण्य कार्य में आपने हमें स्मरण किया इसके लिए हम कृतज्ञ हैं। हमें इस महान उद्देश्य में सहभागी बनने के लिए आमंत्रित किया उसके लिए अनुगृहीत हैं। हमारी योग्य सेवा पर आपका शाश्वत अधिकार है।

आचार्य सरयूकांत झा

भूतपूर्व प्राचार्य,

छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर

क्रांति दिवस ९ अगस्त ९६

-अनुक्रमणिका-

१. समर्पण

★

२. ट्रस्ट के उद्देश्य एवं लोकार्पण

★

३. संदेश

★

४. लेख शृंखला, संस्मरण, अभिव्यक्तियाँ

★

५. जीवन परिचय

★

६. चित्रावली

★

७. जीवन परिचय, ट्रस्ट संस्थापक सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी

★

८. चित्रावली सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी

संदेश

फोन 324867
M - 582 पद्मनाभपुर
दुर्ग (म प्र.) ४९१००१

दानेश्वर शर्मा
संपादक

प्रिय तिवारी जी,

स्नेह नमस्कार,

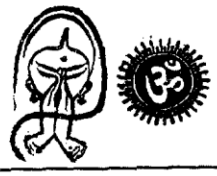
मुझे यह जानकर अतीव हर्ष हो रहा है कि भारतीय नारी के प्रतीक, ममतामयी प्रेरणा स्त्रोत दया एवं करुणा की मूर्तिमयी, विदुषा माननीया 'स्व. सत्यवती तिवारी जी' की स्मृति ग्रंथ प्रकाशित की जा रही है।

यह ग्रंथ नारी कल्याण के पथ प्रदर्शक के रूप में अविस्मरणीय रहेगी। श्री राम सत्य ट्रस्ट के लोकार्पण, समाज सेवा हेतु अशेष बधाईयां एवं शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

दानेश्वर शर्मा

लोक न्याय - जनहित - समाज सेवा - आत्म विकास - नारी कल्याण - सामाजिक स्वास्थ्य



श्री राम-सत्य लोकहित ट्रस्ट

SHRI RAM SATYA CHARITABLE TRUST

संस्थापक- पं. रामगोपाल तिवारी पूर्व सांसद, सहकारिता पुरुष

पोष्ट
बोधपुंज, जूना बिलासपुर
बिलासपुर (म.प्र.)

मुख्य न्यासी	कार्यकारिणी सदस्य	कार्यकारिणी सदस्य	क्षेत्राधिकारी समाज सेवा
आचार्य डॉ. हर्षवर्धन तिवारी	श्रीमती कविता तिवारी	श्री अशोक तिवारी	श्री रामग्रिलावन तिवारी
रविशंकर विश्वविद्यालय	महिला प्रकोष्ठ	पुरुष एवं युवा प्रकोष्ठ	फुलझर

सलाहकार समिति

माननीय सदस्य
स्वामी सत्यस्मानंद जी
डॉ. गोविंद नारायण सिंह
भूतपूर्व राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री
श्री अरविन्द नेताम पूर्व केन्द्रीय मंत्री
श्री अशोक राव मंत्री म.प्र. शासन
श्री कौशल प्रसाद चौबे पूर्व कुलपति
श्री रामलाल कश्यप पूर्व कुलपति
श्री केयूर भूषण पूर्व सांसद
डॉ. कन्हैयालाल शर्मा विधायक
डॉ. मन्नूलाल यदु
डॉ. कृष्ण देव कपिल स.ब्रा. इन्टरनेशनल
श्री रामकुमार अग्रवाल पूर्व विधायक
श्री श्यामलाल चतुर्वेदी
डॉ. रत्नावली सिंह
श्री रामशरण तिवारी ICWA
डॉ. देवचरण मधुकर विधायक
डॉ. ओंकार शर्मा क्म्
श्री आर.पी. मिश्रा
प्रो. टी. एस. ठाकुर भिलाई
आचार्य व्ही.पी. शर्मा
पदेन सचिव छ.ब्रा. समाज
एवं महिला प्रकोष्ठ, बिलासपुर
आचार्य आर.पी. पाण्डे
श्री आर.जी. शुक्ला
श्री डी.आर. शर्मा
अध्यक्ष बार एसोसियेशन
श्रीमती रामप्यारी शर्मा
श्री कौशल शर्मा
डॉ. बाबूलाल पाण्डे, कोरबा
डॉ. विनय पाठक
डॉ. राजीव रत्न

ट्रस्ट के उद्देश्य एवं लोकार्पण

समाज कल्याण एवं ग्रामीण अंचल का छत्तीसगढ़ में परिस्कार मेरे जीवन के विचारों कार्यों एवं सहकारिता सामाजिक एवं राजनैतिक उपलब्धियों को प्रभावित करते रहे। मेरी स्वर्गीय धर्मपत्नी सत्यवती का इन सबों में सार्थक योगदान रहा और वे आजीवन गरीबों, दुखियों एवं जरुरतमंदो की मदद अपने जीवन में व्रत की तरह करती रहीं । उनके स्वर्गारोहण के बाद मैं अपने परिवार उपरोक्त भूमिका के निर्वाह में जो रिक्तता का मैंने अनुभव किया तब से उनकी स्मृति एवं प्रेरणा से एक धर्मादा निधि का उपरोक्त कार्यों में समाज सेवा हेतु करने विचार करता रहा तथा पुत्र डॉ. हर्ष को प्रेरित करता रहा कि ऐसी कुछ पारिवारिक जिम्मेदारी वह अपनी माँ की सेवा भावना के अनुरुप उसकी स्मृति में प्रारंभ करे । मित्रों शुभेच्छुओं से उत्साहजनक चर्चायें की । परिवार के सदस्यों से भी सलाह मांगे। अब शेष समय इसी ट्रस्ट के माध्यम से समाज सेवा तथा आध्यात्म में बिताने का उद्देश्य है जिसके माध्यम के रुप में इस ट्रस्ट का आज के पावन पर्व पर लोकार्पण किया जा रहा है व्यवस्था की जा रही है ।

इस ट्रस्ट के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

(१) समाज के जरुरतमंदों तथा निःसहाय लोगों की आर्थिक सहायता, सामाजिक, न्यायिक, चिकित्सा व्ययों के लिए करना ।

(२) छत्तीसगढ़ में समाजसेवी संस्थाओं के निर्माण में समाजसेवी लोगों को प्रारंभिक अवस्था में प्रेरित कर मदद करना ताकि शासन के समाज सेवी कार्यक्रमों को व्यापक आधार मिले।

(३) साधन हीन युवा वर्ग को यथोचित मदद करना जो जरुरत मंद है तथा अध्ययन, अध्यवसाय में बढ़ना चाहते हैं ।

(४) सामाजिक, धार्मिक कार्य तथा छत्तीसगढ़ी सरयू पारी ब्राम्हण समाज के निसहाय बच्चों के सामूहिक व्रत बंध कन्याओं के सामूहिक विवाह नारी कल्याण आदि में मदद करना।

(५) व्यक्तिगत एवं सामाजिक न्याय प्राप्त कराने में मदद करना तथा उपयुक्त मौलिक विचारों कृतियों के प्रकाशन में प्रेरक एवं सार्थक बनना ।

पं. रामगोपाल तिवारी

१६-९-९६ गणेश चतुर्थी

संस्थापक

Dr. HARSHA VARDHAN TIWARY
M. Sc., Ph. D. (I.I. Sc.Bangalore)
Founder Life Member A.V. ICTP. ITALY
PROFESSOR & HEAD
DEAN, FACULTY OF SCIENCE
Chairman, Board of Studies in Electronics



SCHOOL OF STUDIES IN ELECTRONICS
PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY
RAIPUR (M.P.) 492010 INDIA
PH.: RES.: 535548

दिनांक १६-९-९६ गणेश चतुर्थी

मुख्य न्यासी - श्री राम सत्य लोकहित ट्रस्ट
बिलासपुर

मुख्य न्यासी की कलम से

माँ एवं ककाजी ने मुझे समय समय पर कठिन गृह कार्य दिये और उन्हीं के द्वारा दिये गये आत्मिक शक्ति एवं विश्वास से मैंने उसे निभाया भी । अब ककाजी के द्वारा दिये इस चुनौती पूर्ण कार्य की भूमिका निर्वाह का आंकलन तो भविष्य ही करेगा ।

माँ ने अपने प्रकृति दन्त गुणों से अभिभूत होकर समाज सेवा भावना से दीन हीन जन, असहाय को सहायता देती रही । यह उनके जीवन का आजीवन व्रत था, जो उनके रहते हमारे घर की परम्परा तथा पहचान थी । उनके स्वर्गारोहण के बाद ककाजी ने उनकी रिक्तता में हमारे घर की उस पहचान एवं परम्परा को जाने देखा जिसके असहाय भी सहायता के लिए निहारा करते थे । अब विकल्प के रूप में अपने संकल्प को वे साकार करने मुझे कहते कि तुम्हारी माँ की स्मृति में एक धर्मादा निधि स्थापित कर उनके द्वारा इस घर को दी गई इस पहचान को वे अक्षुण्य रखना चाहेंगे । इस पर बीच बीच में मेरी ककाजी से अनेक सलाह मशविरे हुए । मित्रो, शुभेच्छुओं परिवार जनों के विचार भी लिये और अंत में वह संकल्प "श्र. रामसत्य लोकहित ट्रस्ट और उसके उद्देश्यों के रूप में अभिभूत का आज जीवंत हुआ । मां के चिंतन विचार एवं जीवन इसके प्रेरणाश्रोत हैं । अपने सोचने के तरीके से मैंने इस ट्रस्ट में मां एवं ककाजी दोनों के प्रथमार्ध नामों एवं विचार दिशाओं को समाहित कर इसका नाम श्री रामहित लोकहित ट्रस्ट निश्चित किया । गांधीजी की भी परिभाषा में जो काम है वह समय है और जो सत्य हैं वही काम है "थैंक गॉड"। तो इस तरह राम एवं सत्य एक सिक्के के दो पहलु या एक रथ के दो पहिये की तरह है जिसका उद्देश्य समाज सेवा के रथ से दीन असहाय लोगों को उनके पड़ाव तक पहुंचाने में सहायक बनना है अतः इसी लिये जहां एक ओर इस ट्रस्ट के लोकार्पण के अवसर पर माँ पर स्मृति ग्रंथ का विमोचन कर उनके व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व को समाज सेवी लोगों के बीच लेखों विचारों के माध्यम से उद्घाटित करना तो है ही पर उस ग्रंथ में भी उत्तरार्ध में ककाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समावेश मैंनने आवश्यक समझा अन्यथा ककाजी के बिना माँ का स्मृतिग्रंथ अधूरा हो जाता । सविनय, सभी समाज सेवियों द्वारा इस समाज सेवा यज्ञ में अपकी ऊपरी ओर से सहयोग आहूति देने, प्रार्थना के साथ .....

- हर्षवर्धन तिवारी

श्रीनिवास तिवारी

अध्यक्ष,

मध्यप्रदेश विधान सभा



फोन : कार्यालय : ५५१६४६, ५५००८१
निवास : ५५३५४८, ५५०२२५
ई-४४, (४५, बंगले)
भोपाल - ४६२ ००३
दिनांक : ०८-०९-९६

संदेश

जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीराम - सत्य लोकहित ट्रस्ट का लोकार्पण एवं स्व. सत्यवती तिवारी पर केन्द्रित संस्मरण ग्रंथ का विमोचन किया जा रहा है ।

हमारी संस्कृति में परहित के समान बड़ा अन्य कोई धर्म नहीं माना गया है । वस्तुतः मानव सेवा, समाज की सेवा से बढ़कर कोई दूसरा कार्य नहीं है । यह पुनीत कर्म और धर्म नर से नारायण तक, राजा से रंक तक और वसुंधरा के एक छोर से दूसरे छोर तक तादात्म्य स्थापित करने और एक दूसरे में समाहित हो जाने का मार्ग प्रशस्त कर देता है । बिरले होते हैं ऐसे लोग जिन्हें सेवा का और ऐसी सेवा संस्थाओं की स्थापना और संचालन का पुण्य अवसर मिलता है ।

स्व. सत्यवती तिवारी की कामनाओं के अनुरूप यह ट्रस्ट मानव समाज के लिए आशा और ज्योति का केन्द्र बने, यही कामना है ।

(श्रीनिवास तिवारी)

सूर्य कुमार तिवारी
न्यायाधीश
कलकत्ता, उच्च न्यायालय

कलक
०८-०८-९९६

प्रिय डॉ. हर्ष,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वर्गीया श्रीमती सत्यवती तिवारी के त्यागमय जीवन से प्रेरित होकर *"श्री राम सत्य लोकहित न्यास"* स्थापित किया जा रहा है ।

आर्त व्यक्तियों की सेवा परम धर्म है । व्यास मुनि ने कहा है :-

"परोपकाराय पुण्याय, पापाय परिपीडनम्" ।

राजा रन्ति देव ने ईश्वर से प्रार्थना की थी :-

"नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग न पुनर्भवम् ।

काययेदुःखतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम्" ।

ऐसे परोपकारोन्मुख न्यास की स्थापना निश्चय ही स्तुत्य है ।

सफलता की कामनाओं सहित ।

भवदीय
(सूर्य कुमार तिवारी)
न्यायाधीश

Dr. Krishan Dev Kapil
General Secretary

KALKA
ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय
कालका (हरियाणा–भारत) 133302
दूरभाष : 01733
20595

संदेश

मानव की यह महत्वकांक्षा रही है कि उसका नाम अमर रहे। जीवन भर इसी प्रयास में लगा रहता है। महान कार्य करे और व्यक्ति कल्याण, समाज सुधार और राष्ट्र उत्थान के लिए जुटा रहे। जो व्यक्ति अपनी क्षमता, योग्यता और साधनों का सदु–पयोग करे, महान माने जाते है।

यह एक रचनात्मक कार्य है। अपनी भावनाओं ओर जीवन को सिद्धातों को रचनात्मक रूप देने के लिए ट्रस्ट अर्थात न्यास की स्थापना करके लोक कल्याण एवं जनहित की भावना को उजागर किया जावे।

तिवारी परिवार ने श्री राम सत्य लोकहित न्यास की स्थापना करके समाज सेवा, आत्म विकास, नारी कल्याण एवं सामाजिक न्याय के लिए शोध संस्थान की स्थापना करके स्वस्थ चिंतन का मार्ग प्रशस्थ किया है।

हम व्यतिगत रूप से एवं ब्राह्मण अंतर्राष्ट्रीय कि ओर से प्रभु से इस महत कार्य की सफलता हेतु प्रार्थना करते है। अपनी शुभकामनाएं अर्पित करते है। हमारा समर्थन सद्भाव एवं सहयोग सदा श्री राम सत्य लोकहित ट्रस्ट के लिए रहेगा। तिवारी परिवार के लिए साधुवाद।

जय श्री भगवान परशुराम।

शुभ चिंतक
डॉ. कृष्ण देव कपिल

C. T. B.MENON
Deputy Zonal manager

SHIPPING CONSULTANT
Central Food Corporation
of India
Madras - 20

Message

My self and my family members are pleased to know that you all propose to publish a book dedicated to your Mother loved by all irrespective of caste and creed.

So for as my family members are concerned they cant forget her on account of her love and attection towards us all as we are her own family members.

Yours,
C. T. B. MENON

- Poetry on our Ma -

By-Yashvardhan
IV th class, National Convent
& Sujata

My grand mother was a great women.
She was famous like shining star of our society
She always gave water to thirsty
and food to hungry
and clother to poor.

She was like a bright moon in the dark sky
in dispair of sufferer
Her loving care, glory and brightness spreads
the hapiness every where.

She was friend to all
and foe to non,

Such was my grand mother
Such was my ma
With whom we live together
She was like a spring in all weather.

इंदिरा प्रियदर्शिनी महिला नागरिक सहकारी बैंक रायपुर

प्रेस काम्पलेक्स, सद्दानी चौक, सदर बाजार, रायपुर (म. प्र.) 492001

श्रीमती लीला पारीक

अध्यक्ष

संदेश

"विशुद्ध कर्म ही कल्याणकारी है" गीता के भावार्थ को श्री राम सत्य लोकहित ट्रस्ट द्वारा स्थापित उद्देश्यों को पूर्ति में सम्बल होगा । आशा है कि यह ट्रस्ट अपने क्रिया कलापों द्वारा साधन विहीन व्यक्तियों का सहायक एवं जरूरतमंदों को सामाजिक न्याय दिलाने में सक्षम होगा । मेरा सहयोग सदैव आपके साथ है ।

ट्रस्ट अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में दिनों दिन प्रगति करे ।

ट्रस्ट के लोकार्पण एवं उसकी प्रेरणा स्त्रोत स्व. सत्यवती तिवारी के विचार एवं लेख संकलन के विमोचन के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं अर्पित है ।

आपका,

लीला पारीक

संदेश

इस जनहित तथा पवित्र कार्य के शुभारंभ के लिए बहुत धन्यवाद। मुझे सलाहकार समिति में रखा, इसके लिए कृतज्ञ हूँ।

आपका,
रामकुमार अग्रवाल
पूर्व विधायक, रायगढ़

ट्रस्ट संबंधी पत्र प्राप्त हुआ है।
सराहनीय है।
आपकी सक्रियता की उपज है।
आगे वृक्ष बनेगा।
कितनों को छाया मिलेगी।

आपका,
श्यामलाल चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार, तिलकनगर

संदेश

छत्तीसगढ़ के महान विभूति सहकारिता पुरुष, श्रद्धेय काका श्री पंडित राम–गोपाल जी तिवारी का संपूर्ण जीवन सेवार्थ, एवं संघर्षरत, चिंतन एवं रचनात्मक कार्य छत्तीसगढ़ वासियों विशेष कर ग्रामीण खेतिहर मजदूरों, किसानों, बाल, वृद्ध, युवा, महिला वर्ग की भलाई में बीता।

माँ सत्यवती उनकी सहभागी के रूप में साक्षात छत्तीसगढ़ महतारी जैसे उदार हृदय – सबकी मां थीं। उनके संबंध में यह छोटी सी रचना प्रस्तुत है। इसे तिवारी जी ८० वें वर्षगांठ - गणेश चतुर्थी दिनांक १६. ९. १९९६ को माता जी की स्मृति में प्रकाशित होने वाले ग्रंथ में प्रकाशित करने की स्वीकृति देवें।

आपका,

राम सिलावन तिवारी

फुलझर

D. R. Sharma
Advocate
Honorary Professor
Kaushalendra
Rao Law College
president Bilaspur
Bar Association

Vinoba Nagar
Bilaspur

संदेश

महोदय,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने ऐसे ट्रस्ट का निर्माण किया है, जिसमें जनता का हित सर्वोपरि है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आपके इस पुनीत कार्य में सफलता मिले। आपने मुझे मनोनीत कर इस पुनीत कार्य में सहयोग देने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

आपका,
डी. आर. शर्मा

मां की आदर्श मूर्ति

श्री रामखिलावन तिवारी
अध्यक्ष फुलझर,
तहसील – लोरमी, जिला – बिलासपुर

छत्तीसगढ़ के महान सपूतों की शृंखला की माला में मोती की तरह जगमगाते शौर्य के धनी भारत के यशस्वी, सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल जी तिवारी को समाज सेवक के कीर्तिमान के शिखर तक पहुंचने में उनकी अर्धांगिनी स्व. सत्यवती मां का सर्वोच्च स्थान था। श्री तिवारी की कीर्ति पताका के आधार दंड के स्थान पर मां का स्थान था। जिस प्रकार श्रीराम के साथ श्री लक्ष्मण का स्थान था।

"रघुपति कीरति विमल पताका, दण्ड समान भयऊ जस जाना"
(तुलसीकृत रामायण से)

माँ सत्यवती सभी स्थानों पर एक आदर्श गृहणी की छाप छोड़ गई। जिस प्रकार माँ जगदम्बिका अपने विभिन्न स्वरूप धारण कर पापी मन को सुख, समृद्धि व सुरक्षा प्रदान करती है, उन्हीं आदर्शों को अपने जीवन का आधार मानकर मां ने एक सफल गृहनी ममतामयी माँ कुशल परिवार के सम्माननीय आदर्शों की मूर्ति हमारी माँ को शत्–शत् प्रणाम के साथ श्रद्धा सुमन अर्पित कर ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब को उनके आदर्शों पर चलने की शक्ति दें।

मां सत्यवती ने अपने सभी कर्मों में अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया। जैसे तिवारी जी (कका) ने सामाजिक व राजनैतिक जीवन में। मैंने एक पारिवारिक सदस्य व पुत्रवत स्नेह पाकर माँ के उदार भाव को देखा, वह संक्षिप्त में निम्नानुसार हैं:–

सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल जी तिवारी से मेरा घनिष्ठ पारिवारिक संपर्क १९६६ में हुआ, जब उन्हें अकलतरा विधान सभा से कांग्रेस का टिकिट मिला। मैं सहकारिता के क्षेत्र में विपणन संस्था अकलतरा का संचालक मंडल का सदस्य था और स्व. राजेन्द्र कुमार सिंह के निकट अनुयायी के रूप में सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ता भी। तिवारी जी को कुमार साहब ने समर्थन किया व पूरे चुनाव में साथ रहकर हम लोगों ने कार्य किया। तिवारी जी विजयी होकर पं. द्वारका प्रसाद मिश्र के मंत्रीमंडल में विधि व सहकारिता राज्य मंत्री बने। अपने स्वयं फुलझर को छोड़ उस अवधि में ग्राम फरहदा तहसील जांजगीर में

रहकर सामाजिक कार्यकर्ता भी था । तभी से आज तक श्रध्येय तिवारी जी एवम् माँ ने मुझे अपने पुत्र के समान स्नेह व मार्गदर्शन दिया । समाज एवम् राजनीति में पहचान बनी कि मैं तिवारी जी का कट्टर समर्थक एवम् कृपापात्र हूँ ।

वैसे तो माँ का स्थान सभी के लिये सर्वोच्च होता है किन्तु महान आदर्शों को कठोरता से पालन कर समाज का विश्वास व सम्मान प्राप्त कोई विरले ही होते हैं । उनमें माँ सत्यवती तिवारी एक है । उनके कुछ आदर्श जो मैनें देखा प्रस्तुत है ।

एक सफल समाज सेवी

पं. रामगोपाल तिवारी भी एक किसान परिवार में जन्म लेकर मूलतः छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र हैं । उन्होंने शिक्षा के पश्चात वकोली व्यवसाय अपनाकर छत्तीसगढ़ के महान सपूतों में देश व समाज की सेवा का व्रत लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया जिसके आधार स्थल में उनको अर्धांगिनी माँ सत्यवती का सर्वोच्च स्थान है । जैसा कि तिवारी जी के स्मृति ग्रंथ में अनेक शुभ चिंतकों ने मां के आदर्शों का उल्लेख भी किया है ।

तिवारी जी की निष्कपट चरित्र उदात्त उच्चतम राष्ट्रीय चिंतन, सामाजिक प्रतिभा के साथ जैसे-जैसे सफलता के सोपान पर कदम बढ़ाते गए वैसे-वैसे वे पारिवारिक जीवन में कम व सामाजिक जीवन में अपना अधिकतम समय देने को बाध्य थे । उनका वीतराग, समाज सेवी का उदार व्यक्तित्व व विचार समाज सेवा केंद्रित था । उन्हें इस अभियान में सफलता दिलाने में मां सत्यवती का सर्वोच्च योगदान मिला । तिवारी जी के कार्य में कहीं बाधा न हो, बिना बताए समय की आवश्यकता और मनोवैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण कर समाधान चिंतन व पति सेवा, तथा समाज सेवा में विशेषज्ञ थी ।

तिवारी जी के जीवन भर इस अवधि में आने वाले, एक से एक विशिष्ट, समाज सेवी, परिजनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, आम आदमी व विभिन्न समस्या का समाधान चाहने वालों तथा किसी व्यवसाय के साथ राजनीति से जुड़े वर्ग का भारी संख्या में आना एक दैनिक कार्यक्रम व घर का अभिन्न अंग बन गया । पर घर की पूरी व्यवस्था माँ के हाथों में थी प्रत्येक आगतुंक के स्वागत, सत्कार, चाय स्वल्पाहार भोजन विश्राम की उचित व्यवस्था माँ के हाथ में थी । उनमें स्थिति समझने व तत्काल उचित निर्णय लेने की क्षमता थी इसी से सभी आगंतुक तिवारी की सेवा से लाभान्वित तथा माँ स्नेह की प्रशंसा के संदेश वाहक: बने और तिवारी जी को उत्तरोतर राजनैतिक प्रगति का अवसर मिला जिसका आधार स्वरूपा माँ सत्यवती थी ।

राजनीति में सहभागी

तिवारी जी ने समाज सेवा के क्षेत्र में पदार्णण करने के पश्चात स्वतंत्रता के के पूर्व व पश्चात, लोकतांत्रिक, विधि से निर्वाचन प्रक्रिया में भाग लेकर राजनैतिक दल, सहकारी क्षेत्र, विधानसभा एवम् लोकसभा चुनावों में सक्रिय भाग लेकर विशाल जन समूह का समर्थन व सहयोग पाने में सफलता अर्जित की ।

मैं ६६ से आज तक सभी चुनावों में तिवारी जी का सक्रिय व विश्वासपात्र कार्यकर्ता था । मुझे बड़े से बड़े कार्य व जिमेम्दारी दी गई । इस बीच मैं पाया कि चुनाव के बीच तिवारी जी के द्वारा मनोकांक्षा पूर्ति न कर पाने पर कभी-कभी कार्यकर्ताओं तथा मतदाता में रोष था । वे आक्रोश व्यक्त कर समर्थन न करने की भावना व्यक्त करता । इसी बीच माँ सत्यवती प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में, अपनी टोली के साथ गांव–गांव की यात्रा कर अपने उच्चतम आदर्श, स्नेह, शक्ति, वाणी से कका जी की व्यस्तता व उनके द्वारा जनहित में किए कार्यों का ब्यौरा देकर मतदाता, की हुई उपेक्षा को पर गलती स्वीकार कर राष्ट्रहित व समाज सेवा में तिवारी जी को विजयी बनाने अपील करती तो कठोर से कठोर हृदय पिघल कर कका जी को समर्थन देने बाध्य होता है ।

इस प्रकार तिवारी को राजनैतिक प्रक्रिया के सुध्द करने में माता जी का सर्वोच्च योगदान रहा । मेरा मत है कि तिवारी जी अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सहकारी पुरुष नहीं बन पाते, जब तक उनके दायित्व के ५० % कार्यभार माँ सत्यवती ग्रहण नहीं करती

आगंतुकों व दीन दुखियों के प्रति करुणा

माँ सत्यवती उनके घर आनेवाले प्रत्येक आंगतुकों के प्रति सचेष्ट थी कि उनके हितों की रक्षा हो और घर आनेवाले यहां के व्यवहार से प्रसन्न रहे व बाहर तिवारी जी के अच्छे समर्थक बने । माताजी ने गरीबों के प्रति करुणा का भाव सदैव मन में रखती उनकी उपेक्षा को सहन नहीं करती । यदि किसी ने सहकारी या राजनीतिज्ञों से पीड़ित होने की शिकायत की हो तो माताजी उनके लिए लड़ पड़ती चाहे स्वयं तिवारी जी ही क्यों न हो तथा न्याय दिलाकर ही चैन लेती थी । सहकारी बैंक बिलासपुर के मैनेजर से चपरासी तक माँ को अपना संरक्षिका मानकर दुःख, दर्द सुनाते और न्याय पाते । आज भी हमारे कर्मचारी मां की तरह उन्हें स्मरण करते हैं ।

समाज के हितों में जागरुक भूमिका

माँ भी एक सद् गृहस्थ एवम सही मायने में समाज सेवा के उच्चतम कीर्तिमान स्थापित कर किसी पद में न रहते हुए भी जो सेवा की, सम्मान अर्जित किया वह बड़े पदों में रहने वालों को भी उपलब्ध नहीं होता ।

माता भी घर व परिवार के मान सम्मान में वर–कन्या के शादी, विवाह एवम् सभी के पारिवारिक सुख-दुःख में भी अपनी जिम्मेदारी निभाया करती थी तथा हम सब के बीच परस्नेह व मैत्र स्थापित करने में सफल होती। माता जी के पहल पर सैकड़ों जोड़े वैवाहिक बंधन में बाधकर सुखी पारिवारिक जीवन जीकर मां के उपकार को स्मरण करते है।

मेरी बच्ची देवकी को शादी लगाने माता जी स्वयं फरहदा आकर बच्ची को आशीर्वाद देकर गई थी। एक स्थान में संस्कार नहीं था, इससे दूसरे योग्य स्थान में उनकी पहल पर शादी लगाई गई जो मेरे पहल से संभव नहीं था। मेरी बच्ची आज भरे पूरे परिवार की धनी कुलीन समाज मे सुखी व सम्माननित है। इस प्रकार अनगिनत जोड़े उनके पहल पर लाभन्वित हुए।

बिन बताए चेहरा देखकर समस्या जानने की माता जी की अद्भुत् क्षमता थी

तिवारी जी के सामाजिक एवम राजनैतिक जीवन में कई प्रकार के समस्या पीड़ित लोग घर आते। कोई बता पाते, कोई नहीं बता पाता। किंतु जब मां से मिलते तो चेहरा देखकर माँ उनकी समस्या या कठिनाई को भांप लेती और स्पष्ट कहकर उन्हें स्वीकार कराके समाधान में योगदान कर उन्हें संतुष्ट करके भेजती।

इन ३० वर्षो के लम्बी अवधि में मुझे कई बार समय असमय तिवारी जी के पास बिलासपुर, अकलतरा, कोरबा, जांजगीर, भोपाल, दिल्ली जाना पड़ता। एक बार जब तिवारी जी कांग्रेस के अध्यक्ष थे, तब भोपाल गये, तिवारी जी ७४ बंगला के बी-२३ निवास में रहते थे, मैं उनसे मिलने भोपाल गया। रात १० बज चुके थे। मैं ट्रेन छोड़कर देरी होने के भय से बिना बताये सीधे बगले में गया। सभी लोग भोजन कर चुके थे। उन्होंने मेरा चेहरा देखकर पूछा बेटा भोजन किया है कि नहीं। मैं समय देखकर उनसे भोजन कर लिया कहा। इस पर वे नाराज होकर बोली तुम भोजन नहीं किए ही संकोच में झूठे बोलते हो। रात में बिना खाये नींद नहीं आयेगी। अपने मन में संकोच नहीं करनी चाहिए। और हठ करके बहू प्रतिमा एवम् भाई प्रशांत तिवारी को निर्देशकर मुझें भोजन कराई। मैं सुखपूर्वक विश्राम कर पाया। उस दिन के बाद मुझे झुठ बोलने या संकोच करने की हिम्मत नहीं हुई। माँ जी मुझे नाम से पुकारती थी। मैं अपने जीवन में उनका स्नेह व उपकार को नहीं भूल पाऊंगा।

उच्चतम मानवता की प्रतिमूर्ति

स्व. माता को जहां पर भी छोटी से बड़ी आवश्यकता से परिचित टकराव रोककर समन्वय करने की क्षमता, संतुलन को बनाये रखते एक बड़े परिवार की प्रमुख भूमिका का सरलता से निर्वहन किया करती। आवश्यक व परिवार के सदस्यों के तथा सभी शादी व सामाजिक कार्यों में अपनी भूमिका वे कष्ट झेलकर भी निभा लेती थी। उनकी जानकारी में कोई भिखारी उनके घर से कभी खाली नहीं गया। किसी को पैसा किसी को अनाज, किसी को भोजन। सभी को कुछ न कुछ जरुर मिलता।

अध्यात्मिक कार्यों में रुचि व भागीदारी

स्व, माताजी अपने पैतृक संस्कार के धनी व उज्चतम परमार्थ के पोषक अध्यात्म व व्रत, पर्व त्यौहारों में कुलीन परम्परा का सफलता पूर्वक निर्वहन कर अपने परिवारों के खुशहाली के लिए ईश्वरापूजन, व्रत रखने यज्ञ-पूजापाठ तपध्यान व होम-हवन कराने में तिवारी को सलाह देकर कार्य करके का आयोजन, श्रीमत्भागवत पुराण, सत्यनारायण कथा, महामृत्युं-जय यज्ञ शिव अभिषेक का विधिवत आयोजन कर, दान दक्षिणा ब्राह्मण भोजन, गौसेवा, तुलसी की नित्य पूजा कर एक वैदिक परम्परा का निर्वाह सफलता पूर्वक करते ईश्वर पर अगाध विश्वास रखती। किसी की निंदा या द्वेश–वश प्रतिशोध की भावना से आलोचकों का निंदा न कर अपना मूल्यवान समय जनसेवा, परिवार पालन,ईश्वर आराधना में लगाकर "लोक, समाज सुखियों भवन्तु," के वेदवाक्य को अपने जीवन का सामान्य कार्य मानकर एक सफल गृहणी का उदाहरण प्रस्तुत किया।

माता जी इच्छा मृत्यु पाने में सफल रही

स्व. सत्यवती माँ निष्ठावान एवं श्रध्दापूर्वक किए कार्यों के सफलता पर उन्हें अटूट विश्वास था। उनके संपर्क में आनेवाले लोगों में माता के सीख व सुझाव पर चलने की प्रेरणा मिलती। जो मानते लाभान्वित होते नहीं जो मानते वे भटकते थे।

इन्ही सब सद्गुणों के कारण माँ सत्यवती पति के रहते संसार से विदा पाने ईश्वर से प्रार्थना करती थी। समय आने पर उनको यह इच्छा पूरा हुई ओर माता जी अपने अंतिम समय में तत्काल निश्चित मात्रा की बीमारी से परमेश्वर के चरणों के सामने भौतिक शरीर त्यागकर परमात्मा में आत्मा का विर्सजन कर पायी।

स्व. माँ स्वर्गवासी थी। शास्त्रों में लिखा है " सदगुणी स्वर्ग से आई थी और पुन: स्वर्ग गमन किया। ईश्वर ऐसी आदर्श माँ, आदर्श गृहणी, आदर्श जीवन एवम् इच्छा मृत्मु पाकर सफल मानवीय जीवन जोने सभी को अवसर प्रदान करें।



मीठे बोलों की शक्ति

(जो स्व. सत्यवती जी की जीवन शैली थी)

–आचार्य रमेशचंद्र महरोत्रा
भूतपूर्व अध्यक्ष, डीन, चेयरमेन, कला संकाय
रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

मनुष्य अपने शरीर में एक छोटे से काँटे का भी चुभना सहन नहीं करता। वह उसके चुभते ही आह-ऊह करने लगता है। यही बात उसके मन की भी है। सामान्यतया वह एक भी कड़वी बात पसंद नहीं कर पाता। यदि सच में देखा जाए, तो गाली और अपशब्द किसी के शरीर पर जाकर कभी नहीं चिपकते, लेकिन फिर भी उन्हें 'प्राप्त करनेवाला' व्यक्ति प्रायः जोर से तिलमिला जाता है। किसी सुंदर चित्र में महिला की सिर्फ एक भौंह साफ हो जाए, तो आप चित्र को किस श्रेणी में रखेंगे। किसी अच्छे गाने की बस आधी पंक्ति बेसुरी हो जाए तब आप उस गाने को कितने नंबर देंगे। किसी बहुत बड़े संत में केवल चरित्र संबंधी दोष विद्यमान हो तब आप उसे कितना आदर दे सकेंगे।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य को आत्मोन्नति और परहित के लिए एक भी कड़वा बोल न बोल कर भीतर और बाहर दोनों ओर से ही मीठा होना चाहिए। यदि व्यवहार से किसी मनुष्य को पीड़ा पहुंचती है, तब हम मानवीयता के उच्च धरातल पर सही नहीं कहे जाएँगे, यदि कोई व्यक्ति निम्न स्तर का है, तो उसे सुधारने की झोंक में हम भी निम्न स्तर के हो जाएँ, यह स्थिति हमें आत्म-विकास के विपरीत ले जानेवाली है। यदि गंदगी को धोना है, तो उसे साफ पानी से ही धोया जा सकता है।

बोली की मिठास में बहुत शक्ति होती है,किसी कड़वे व्यवहार को भी मिठास के साथ पी कर वातावरण को अत्यंत सुखद बना देने का एक उदाहरण गांधीजी के जीवन से देखिए। एक बार भड़के हुए दंगों में अपने बच्चे की मृत्यु से व्यथित एक पुरुष जब उन दंगों को बंद करवाने के सत्याग्रह पर कई दिनों से उपवासरत गांधीजी के पास जा कर उनके उपवास के तोड़े जाने के समय उनकी ओर रोटी फेंकते हुए यह बोला कि "ले खा ले, तेरी इच्छा पूरी हुई", तब गाँधीजी ने उससे बेहद मिठास भरे अपनत्व से कहा कि तुम किसी ऐसे बच्चे को गोद ले लो, जिसके माता-पिता दोनों इन दंगों में मर गए हों।" आधे मिनट पहले का वह खूंखार भेड़िए-जैसा आदमी अश्रुधारा के साथ गांधी जी के चरणों में लोट गया।

किसी की बुराई को समूचा पचा कर, शिवजी के समान गरल को उदरस्थ करके बदले में अच्छाई और कल्याण के मोती मुंह से निकलना सरल काम नहीं है, पर असंभव भी नहीं है। संसार में ऐसा कर दिखाने वाले कितने ही व्यक्ति हो चुके हैं-- जो पैदा होने के समय अन्य बच्चों से भिन्न नहीं थे। उन्होंने सब कुछ दुनिया में आने के बाद ही आत्म-विकास और जनहित भावना की सीढ़ियों पर निरंतर चढ़–चढ़ कर अर्जित किया। आदमी कितना भी बड़ा बन सकता है, क्योंकि उसमें बुरे को अच्छे में बदल देने की अनंत क्षमताएँ है। वह बोलों के माध्यम से पशुओं को भी अपना बना लेता है।

★ ★

दीदी - एक संस्मरण : स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी

लेखिका **श्रीमती मंजूश्री मिश्रा**
अधिवक्ता
गोड़पारा बिलासपुर

"न गृहं गृहिणी विना"

यह अकाट्य सत्य है, भारतीय जीवन पद्धति में संयुक्त परिवार व्यवस्था शाश्वत काल से चलकर आज तक अपनी सार्वकालिकता में अडिग, स्थिर है। नारी पुरुष दोनों जीवनरथके के समान, गुण, धर्म उपकरण होते हुए भी नारी का महत्व अधिक होता है यह केवल लोकोक्ति नहीं वरन प्रयोगसिद्ध है, इसका ज्वलंत उदाहरण मैंने देखा स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी (पूज्य रामगोपाल जी तिवारी की पत्नी) 'दीदी' के व्यवहार और व्यक्तित्व में। सन् १९७९ में मैं विवाहिता होकर चांपा से विलासपुर आयी।

'दीदी' मेरे स्वसुर पं. रमाकान्त मिश्र अधिवक्ता को वहिन इस नाते थीं कि दीदी के चौथे क्रम के भाई श्री शत्रुघ्न प्रसाद पाण्डे विगत ५५ वर्ष पूर्व जव वे १०–१० वर्ष के थे विधिवत सम्पादित "महाप्रसाद" (मित्रता स्थापित का एक धार्मिक रीति) थे, मेरे ससुर जो को कोई वहिन नहीं थी, इसलिए दीदी ही उनको सगी वहिन सी आदरणीया और और मान्या थी, वे मेरे ससुर पर वहुत स्नेह रखती थीं। इसी सम्बंध वे से मुझे आशीर्वाद देने आयी थीं मैंने देखा, एक गोरी स्वस्थ्य और कान्तिवती भद्रस्वरूपा देवी सी प्रतिमा मेरे सामने थी, मैंने उनका चरण स्पर्श किया। आशीर्वाद के साथ कुछ भेंट देकर मुझे नाम लेकर कहा मंजू! अव यही तुम्हारा परिवार है वेटा! हम सव तुम्हारे अपने हैं सुखी रहो।

आज भी वह वात्सल्य का सम्बोधन पुराना नहीं हुआ है। मैं ऊँची शिक्षा के लिए अध्ययनरत थी। एल. एल. बी. को पढ़ाई में उनकी वड़ी वहू श्रीमती कविता तिवारी और मैं एक साथ हो गई, इससे उनके घर मेरा आना–जाना भी होता था। वे प्रातः नहा धोकर पूजा करके पारिवारिक व्यवस्था किया करती थीं, अत्यत व्यस्त कार्यक्रम वाले, अधिवक्ता, सांसद पति, पांच पुत्र, वहुएँ, नाती–नातिन से भरा भव्य भवन सवका, प्यार स्नेह आवश्यकताओं कीपूर्ति का अद्भुत प्रशासनिक ढंग से कुशल संचालन देखकर मैं प्रसन्नता के साथ चकित रह गयी फिर तो उनके प्रति श्रद्धा और आदरभाव के अतिरक्त उनके गुणों का जाने-अन–जाने प्रभाव भी मेरे मन में आने लगा। दूसरे शब्दों में वे मेरे परिवार संचालन की अव्यक्त गुरु ही वन गई।

जूना बिलासपुर, कुम्हारपारा की महिलाएँ उनके व्यवहार एवं उच्च विचार की चर्चा प्रायः किया करती थीं। एक संस्मरण है श्रीमती आशा धोबीन हमारे घर का कपड़ा धोती थी उसने बताया कि श्रीमती तिवारी (वकीलीन दीदी) मुहल्ले के किसी भी लड़की के विवाह गौने में स्वयं जाकर उसे आशीर्वाद देती हैं और तीज त्यौहार में गरीब मातृ विहीन किसी भी लड़की को अपने घर बुलाकर साड़ी, कपड़े, पकवान आदि माँ की तरह ममता पुर्वक दुलार एवं आदर करती हैं। ऐसे अनेक व्यवहारों की घटनाएँ महिलाओं से सुनने को मिलता था।

उनका संसार त्याग उनके लिए तो धार्मिक दृष्टि से मुक्तिप्रद रहा। धार्मिक चर्चा में मैंने सुना है –

"पति पुत्रवती साध्वी द्वयोरग्रेमृता यदिः।
मुक्तिःकरतले तस्याः, नान्यो कर्ममपेक्षतिः॥

यदि सौभाग्यवती नारी पति पुत्र के समक्ष प्राण त्याग करे, तो उसके लिए अन्य कर्म न भी किए जाएँ तो भी उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है। उनके लिए तो अच्छा भले ही हो किन्तु परिवार से उनका जाना एक अपूरणीय क्षति है, परन्तु मृत्यु का शाश्वत सत्य तो अनिवार्य है। उनका स्मरण करती हुई, उनको प्रणाम करती हूं।



उनकी समभाव की ममता

सुजित कानू
गांव नूतन बाजार, आसाम

मुझे यह जानकर अत्याधिक प्रसन्नता हुई है कि श्रीमती तिवारी जी की याद में एक स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे यह लगता है कि यह स्मृति ग्रंथ उनके द्वारा दिए गए प्रेम के बदले छोटी सी श्रद्धांजलि मात्र ही है।

जिस प्रकार सभी महान व्यक्तियों की सफलता में किसी एक नारी का हाथ होता है, वैसे ही ककाजी की सफलता का श्रेय भी अम्मा जी को ही जाता है।

अम्मा परिवार के प्रति अपने दायित्व को पूर्ण रूप से जानती थी एवं उसका पालन करने में पूर्ण रूप से सक्षम भी थी। वे प्रत्येक आगंतुक को नारायण स्वरूप मानती थी एवं अतिथियों का वह समुचित सत्कार करती थी। अतिथि देवो भव को हिंदु संस्कृति का पालन उनने आजीवन किया। मैं अम्मा को अधिक समय से तो नहीं जानता हूँ, परंतु जब मैं कलकत्ता के गेस्ट हाऊस में कार्यरत था तभी से अम्मा जी से मेरा परिचय हुआ था। मेरे जीवन से तो मां का आँचल बहुत पहले से ही उठ गया था, परंतु अम्माजी की ममता, आत्मीयता एवं अंतरंगता प्राप्त करके वह फिर जीवित हो उठा।

आज उनकी स्मृति में मुझे वह दिन याद आता है, जब वह खरीददारी के लिए गई हुई थी और लौटते समय मेरे लिए भी कपड़े खरीद लाई। उन्होंने अपनी ममता पर भेद-भाव की परछाई मात्र भी न पड़ने दी। उनका प्रेम निश्छल एवं अंतर्मन से हुआ करता था। उनके मन में सभी के प्रति सम्भाव था वे हमेशा अभ्यागतों एवं घर में कार्य करने वालों का समुचित ध्यान रखती थी घर में भोजन के समय जितने प्रकार के व्यंजन बनते थे, वे इसका ध्यान रखती थी कि सभी को वे सभी चीजे समान रूप से मिली है या नहीं। वे इतनी दयावान थी कि सभी की उनको विकट परिस्थितियों में समुचित सहायता करती थी।

उनके आकस्मिक निधन से न केवल उनके परिवार को अपार क्षति पहुँची, बल्कि सभी शुभचिन्तकों को उनके अभाव का आभास होता है।

卐 बड़ी बहिन का बड़ा दिल 卐

छोटी बहिन, **रामप्यारी**

कैसे और कहां से लिखूं बहिन के बारे में कुछ सूझता ही नहीं, परंतु हर्ष के आग्रह के कारण लिख रही हूँ । हम दो बहन एवं पांच भाई थे । हमारे पिताजी न तो धन के धनी थे और न ही विशेष पढ़े–लिखे थे, परंतु मन के काफी बड़े थे । अपने बच्चों का लाड़ दुलार तो सभी करते हैं, परंतु जितना हम लोगों का हुआ वह परिस्थितियों से काफी ज्यादा था । यह सुनकर शायद लोगों को आश्चर्य हो कि उन्होंने अपने बच्चों से कभी बात नहीं की । अपने जीवन के अंतिम समय में मुझसे व छोटे भाई से कुछ बातें करने लगे थे ।

हम दोनों बहनों में भी कोई झंझट नहीं हुआ । बड़ी बहिन की शादी काफी छोटी उम्र में ही हो गई थी, उस समय हमारे जीजाजी पढ़ रहे थे । अतः काफी समय तक बहिन अकेली रही थी । जीवन में काफी कठिनाईयां आती हैं, मगर उनका पहले से कोई अनुमान नहीं रहता । मेरी भी शादी में काफी अड़चनें आयीं, उस समय बहन बिलासपुर में रहती थी । इसे विधि का विधान ही कहेंगे कि मैं भी बिलासपुर आ गई ।

उस समय मुझे बहिन को देखकर ऐसा महसूस होता था जैसा कि जब पहाड़ में आग लगी हो, उस समय कहीं शीतल जल को देखकर संतोष होता है । वे हमेशा मुझे समयानुसार शिक्षा देती थी, तथा धैर्य बंधाती थी, उनको कोई लड़का नहीं थी । वो मुझे ही लड़का की तरह मानती थी और मैं भी उनको मां की तरह ही मानती थी । वह जो भी कहती मैं उसका हमेशा पालन करती थी । मेरे पिताजी कहा करते थे कि उनका स्वभाव (बहिन का) उन्ही की तरह है सीधा व सरल । वह कभी दिखावा नहीं करती थी । वह हरदम सही कार्य ही करती थी । सबको समान रूप से मानती थी । वह किसी को कब क्या देती थी, यह किसी को मालूम नहीं हो पाती थी । उसी समय कुछ परेशानियों की वजह से मुझे झुलना गांव (पितृगृह) में रहना पड़ा । उसके पूर्व हम दोनों साथ–साथ ही मायके आते–जाते थे ।

एक बार जब हम लोग मायके में थे व उन्हें किसी कारण बिलासपुर आना पड़ा, तो मैं उन्हें पहुंचाने बैतलपुर बस स्टैन्ड गई थी, वहां पर हम दोनों बहुत रोई तथा मुझसे ज्यादह मुझे अकेला छोड़ने के दुख में वह रोई । तथा बिलासपुर पहुंचकर उन्होंने वहां से मेरे लिए भगवान का सिंहासन, विष्णु भगवान की मूर्ति एवं शंकर जी की मूर्ति तथा और काकी

सामान भिजवाई । अभी भी वो मुर्तियां मेरे पास हैं, उन्हें देखकर मुझे काफी शांति महसूस होती हैं । फिर समय चक्र के साथ मुझे पुनः बिलासपुर आना पड़ा । कुछ दिनों पश्चात पिताजी की मृत्यु हो गई तथा दीदी (मां) झुलना में थी । बाद में वे छोटे भाई के पास कोरबा चली गई । उन्हें देखने को मुझे बार–बार वहां जाना पड़ता था । एक दिन मैं बहन बोली, मुझे बार–बार जाना अच्छा नहीं लगता, तब वह बोली तुम्हें बार–बार जाने में अपमान लगता है न परंतु दीदी के प्रति कुछ कर्तव्य समझकर तुम्हें उनके रहते तक अपमान सहना होगा । मुझे हमेशा वो बातें याद आती हैं मेरे कारण वो मांग में सिंदूर लगाना छोड़ दी थी । मर्यादाओं का पालन हमेशा करती थीं, हरदम रामायण गीता का पाठ किया करती थीं । जब तक झुलना में थी नियम से रोज सुबह नहाने के पश्चात तालाब में पीपल के पेड़ के नीचे रामायण पाठ करती थीं (उस समय हम लोग वही तालाब में नहाने जाते थे) ।यह उनकी दिनचर्या ही थीं ।

क्या–क्या बताऊँ, मैं कहती कि वो मेरे लिए ही यह सब करती है, परंतु वो सबके लिए भी उतना करती थीं । यह तो पूर्व में भी लिख चूकी हूं कि हम लोगों में से कोई भी अपने पिताजी से बात नहीं करते थे तथा उनके सामने बैठते भी नहीं थे । एक समय जब हम दोनों बहिनें झुलना में थी, उस समय बहन भोजन बनाती थी तथा मैं बाहर का काम करती थी उस समय वहां पर काफी बिल्लियां थीं, अतः कोई भी भोजन करने बैठते तो डंडा लेकर बैठते थे, जो कि हम लोग वहां पहिले से रख देते थे । एक बार मैं पिताजी को परोस रही थी तथा डंडा रखना भूल गई थी, पिताजी काफी जल्दी–जल्दी बोलते थे । सूंटी लाओ मेरी समझ में नहीं आया तथा पूछने का तो प्रश्न ही नहीं था अतः उनके सामने कटोरा में दूध, रोटी रखी थी, उसे अंदर ले गई । वे भोजन आधा करके कुछ देर रूके रहे, फिर बिना कुछ बोले हाथ धोकर चले गये । बाहर दीदी (माँ) पूंछी कि इतनी देर क्या कर रहें थे, वो बोले मैं सूंटी मांगा तो ये लोग रोटी उठाकर ले गये । मैं कुछ देर इंतजार किया मगर रोटी नहीं दिये, तो आ गया । ऐसे थे हम लोग ।



हमारी मां - मेरे साथ लंदन से बिलासपुर तक

सत्यम, पोता

हमारी माँ (दादी) उन औरतों मे से थी, जो अपने लिए कम और दूसरों के लिए ज्यादा काम किया करती थीं। वह हर कार्य सुनियोजित तरीके से करती थीं। उन्होंने अपने और दूसरों के बच्चों में कभी भेद भाव नहीं किया। हर बच्चों को वह एक सा प्यार देती थी। वह अपने जान पहचान के किसी भी व्यक्ति की कोई भी अपेक्षा बिना मांगे ही पूरी कर दिया करती थी। जितना उन्होंने दूसरों के लिए किया, उसका शायद ५% ही उन्होंने अपने लिए किया होगा। हमारी दादी माँ बहुत दयालु थी, उनसे किसी का दुःख देखा नहीं जाता था, जो भी दुखी व्यक्ति उनके पास आता था, उनसे जहां तक बन सकता उतना उस व्यक्ति का दुःख वह कम कर देती थीं।

उनकी एक बहुत अच्छी आदत थी कि वो अपने हर खुशियों को दूसरों में बांट दिया करती थीं और उनको जो दुख होता अपने ही अंदर रखती, किसी पर जाहिर होने नहीं देती थीं। शायद इन्हीं सब कारणों की वजह से वो हमारे दादादी को घर की छोटी-मोटी बातों और समस्याओं से दूर रखती थीं। जिसके फलस्वरूप हमारे दादा जी एक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति बने। दादाजी की सफलता के पीछे हमारी दादी माँ का बहुत सहयोग था।

उनके साथ मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य यह था कि जब मैं लंदन में अपनी मां डॉ. रीता के गर्भ में था, तब मेरी दादी ने अपनी चतुर्थ पुत्र-वधू डॉ. रीता तिवारी को प्रथम संतान को जन्म दात्री बनाने लंदन जैसी जगह में २-३ माह का साथ दिया। अपने इतने बड़े भरे पूरे संयुक्त हिन्दू परिवार की जिम्मेदारी के रहते 'सात समुंदर पार'।

मेरे पापा ने मेरा नाम उनके प्रथम अक्षर से प्रारंभ कराया और सत्य वर्धन कहलाया। पर मेरी दादी मां की इच्छा कुछ और थी, उन्होंने मेरे जन्म की सुबह ही डिलवरी के लिए मम्मी को बता दिया था, तुम फिक्र न करो। रात में सपने में देखा है। सत्य-नारायण भगवान की कथा घर में हो रही है। लड़का ही होगा, जो उनके आशीर्वाद से पूर्ण हुआ।

मेरी मम्मी बताती है कि एक दिन वे दादी मां के साथ घर की खरीदी करने लंदन के व्यस्ततम सुपर मार्केट में गई थीं। उनके हाथ से १००-५० पौंड गुम गये या उनके पर्स से किसी ने निकाल लिया। मम्मी को पता लगा तो रोने लगी अपनी लापरवाही का ख्याल कर। तुरंत दादी ने दादाजी से लेकर ५० पौण्ड उनके व्यक्तिगत खरीददारी के लिए दिया और विदेश में बहादुर भारतीय नारी बनने का निर्देश दिया।



अविस्मरणीय – व्यक्तित्व

ऋचा शर्मा
एम. ए. अंग्रेजी
विनोबा नगर, सी. एम डी. कालेज, बिलासपुर

"फ़ानूस बनकर जिसकी हिफाज़द हवा करे ।
वो शम्मा क्या बुझे, जिसे रौशन खुदा करे ।।"

विनोबा नगर बिलासपुर में स्थित हमारे निवास स्थान 'विकल्प भवन' के नीचे-वाले कमरे में एक तस्वीर है, चेहरे पर ओज है, थोड़े काले वालों के बीच झांकते हुये श्वेत वालों की झलक इनके अत्यधिक चिन्तनशील होने का अहसास कराते हैं । माथे पर कत्थाई लाल बड़ी एक बिन्दी सूर्य की किरणों को सी छटा बिखेर रही है जो इनके बेहद अनुभवी होने का बोध कराते हैं । उनकी तस्वीर से लिपटी सफेद फूलों की माला उनके सादगीपूर्ण जीवन को इंगित करते हैं । इस तस्वीर के कई पहलू हैं ।

जो हाँ ये तस्वीर उन्हीं की है, जिन्हें हम सब बड़ी माँ कहते थे । और जो हमारी दादी की बड़ी बहिन थी और बड़ी बहिन की जिम्मेदारियों को उन्होंने अपने जीवन के अंतिम सफर तक बखूबी निभाया । मैंने उनके साथ ज्यादा समय नहीं गुजारा पर जितना कम समय उनके साथ व्यतीत किया है उसकी धुंधली सी याद मुझे अभी भी है और उस अल्प–अवधि में भी उनके सानिध्य में मुझे जो प्यार और ममत्व मिला, वो बहुत ज्यादा था । उनकी तस्वीर को देखने से एक और दृश्य मेरी आँखों के सामने उभरता है । अपने हम उम्र महिलाओं से घिरी 'बड़ी माँ' एक विशाल कुर्सी पर बैठी पान हौले-हौले चबाते हुये या तो उनसे बतियाती होती थी या उनके तकलीफों को दूर करने की कोशिश करती थी । एक ही जगह पर बैठकर मेहमानों को वे अकेली ही संभालने को हुनर रखती थी । कक्काजी यानि हमारे बड़ाजी के आराम से लेकर स्नान तक की कार्यवाहियों का भी बेहतरीन ख्याल रखने वाली एक वही थी ।

कभी–कभी तो वे हमसे मजाक के मूड में भी मिलती थीं । उस वक्त उनसे बातें करने में बड़ा मजा आता था । मुझे कोरबा वाले डॉक्टर मामा के यहां की ममता बुआ की शादी याद आती है, बड़ी माँ भी शादी में शामिल होने आयी थी । वहाँ उनके साथ एक सप्ताह बिताये, वो दिन यूं गुजर गये पता नहीं चला । वहाँ उनकी मौजूदगी में हल्के-फुल्के नोंक झोंक से पूरा कमरा ठहाकों से भरा होता था । वहाँ पर हमें उनके मजाकिये लहजे से रूबरु होने का अवसर मिला ।

हमने बड़ी माँ और बड़ाजी (कक्काजी) की खट्टी-मीठी तकरारों का भी भरपूर लुत्फ उठाया है जब वे दोनों कभी-कभी हमारे यहाँ तशरीफ लाते थे ।

वे जब कभी-कभी ठेठ छत्तीसगढ़ी में इस अंदाज से डाँटती थी इन्हें टेपरिकार्डर में टेपकर बार-बार डाँट खाने की तलब होती थी, उस डाँट में भी एक मीठा प्यार छिपा होता था । वे जिन्दा-दिल थी और वास्तव में अपने लिये कम वरन् दूसरों के लिये ज्यादा जीती थी, वे विरानियों में प्रस्फुटित एक झरना थीं, जिनके अफसाने अभी भी अमर है । ऐसे व्यक्तित्व बार-बार जन्म नहीं लेते, उनकी कमी पूरी करना संभव नहीं । उनकी अनुपस्थिति हम सबों के लिये दुःखदायी है, जो अब पंचतत्व में विलीन हो चुकी हैं । पर उनकी खूबसुरत सी यादें अभी भी हमारे जेहन में ताजा है । ये चंद यादें मैं अपनी बड़ी माँ को समर्पित करती हूँ । उनके बारे में और बहुत कुछ लिखना चाहती हूँ पर लिख नहीं पा रहीं हूँ । यही मेरी एक छोटी सी कोशिश है । अंत में सिर्फ इतना ही-

ऊंची-ऊंची मिनारों पर, जब शाम के साये उतरेंगे ।
खामोश उदास सितारों पर, जब शोख उजाले उभरेंगे ।
उस वक्त तुम्हारी यादों के, कुछ तेज झरोखे आयेंगे ।
कुछ प्यार भरे अल्फाजों के, कुछ शोर हवा में छायेंगे ।



ममतामयी मां

कविता

अध्यापिका

महफिल से उठ जाने वालो
तुम लोगो पर क्या इल्जाम
(साहिर)

जीवन में कुछ बातें ऐसी हो जाती हैं, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता, ऐसा ही मेरे साथ हुआ, जब मैं कालेज के लोगों के साथ नेपाल, कामक्षा के दर्शन कर लौटी, मन में उत्साह था, घर जाकर माँ को बहुत सी बातें बतानी है। माँ हमारी सास ही नहीं, मित्र भी थी। जिनसे हम सब तरह की बातें किया करते थे।

पर यह क्या ! माँ नहीं रही, यह मैने पाण्डेय मैडम के घर पेपर देखकर जाना, आंखों के सामने अँधेरा हो गया। यह गलत है, काल चक्र अटल है सच भी है। यही दुनिया में सब कुछ वर्तमान है, न भूत हैं न भविष्य है, हर बात पूर्व निश्चित है। इसी बात को शाश्वत मान लिया जाय कि जो पैदा हुआ है, वह किसी भी कीमत में मृत्यु को प्राप्त होगा।

हमारा संयुक्त परिवार का घर बोधपुंज जिसे माँ ने अपनी ममता के आँचल में सबों को समेटा था, अब क्या होगा, माँ के बिना घर की कल्पना नहीं की जा सकती। माँ का हृदय विशाल था, वे महान थी, हर व्यक्ति उन्हें अपना समझता था। सबसे बड़ी खूबी माँ में थी वह यह कि वे सब की बातें सुनती सुलझाती उनसे मिलने वाला यही सोचता कि माँ उनकी हमराज है, उनकी अपनी है।

धर्म उनके लिये पूजा जैसा था, जिससे किसी का अपमान न करना, घर से किसीको भूखा न लौटाना, वे लक्ष्मी थी, अन्नपूर्णा थी। किसे परेशानी है वे सब बिना कहे जान जाती थी, घर की परेशानियों को उन्होंने कभी भी ककी जी को नहीं बतलाया, स्वयं ही शंकर जी की तरह गरल का पान किया उन्होंने।

माँ ने हमें बेटी सा प्यार दिया। माँ बिना कहे सब समझ जाती थी, उनके लिये पराया भी अपना था। उन्होंने भावना से कर्तव्य को ऊंचा समझा, हम अलग-अलग घर की ५ बहुयें हैं सगी बहनों में भी नहीं बनती। पर माँ ने हम सबों को, बहुओं को, बच्चों को अलग नहीं समझा, घर के सभी बच्चे माँ से हम लोगों की शिकायत करते थे। मां अपनी परेशानियों को कभी भी जाहिर नहीं होने दी। वे सागर की तरह विशाल हृदया थीं।

एक के बाद एक हादसा घर में होने के बाद भी उन्होंने अवसान नहीं खोया वे घर का संचालन करती कर्तव्य समझ अपने पुत्र (मेरे पति) की मृत्यु के बाद वे बाहर निकलना बंद कर दी। मेरे लिए तो उन्हीं का सहारा था। मां पिता का साया न रहने पर उन्होने मुझे बेटी सा प्यार दिया, मैं अपनी परेशानी मां को बता मन को शांत कर लेती थी, और मेरा कौन था।

मां को एक दुख था। उनकी लड़की नहीं उन्होने अपनी बहुओं को बेटी सा प्यार दुलार दिया जो अविस्मरणीय है। मां के साथ हम घन्टों बातें करते घर की, बाहर की, दीन दुनियां की। मां हमारे बच्चों की मां थी सब की मां थी, जो भी उनके करीब आताउनसे प्रभावित हो कर जाता। समाज के लोग, बाहरी व्यक्ति अपनी परेशानी ले, सलाह लेने मां के पास आते, मां दानी थी दिखावा उन्हें पंसद नहीं था।

हमारा यह बोधपुंज विरान हो गया। अकेले मां अपनी कुर्सी पर बैठ कर पूरे घर का संचालन किसी के न रहने पर भी करती थी। मां की चाह थी वह कि वे कका जी के सामने जाय, किसी से सेवा नहीं करवाना चाहती थीं। न ही बीमार हो होना, ईश्वर ने उन्हें ऐसी ही मौत दी। शूलों की सेज पर लेटे भीष्म पितामह ने उतरायण में मौत मांगा था, मां ने भी वही समझ मांगा।

मां जमींदार परिवार की बेटी थी, जैसा उनका नाम था उसी अनुरूप थी। श्री बाल कृष्ण पुरी जो कका जी के गुरु थे। हमारे रायगढ़ में दादी के भी गुरु थे, मेरी शादी तय होने पर उन्होंने मुझे मां के बारे में बतलाया था। उसने जो बताया, उससे अधिक यहां आकर मैने मां को देखा, उदार हृदया, सरल, व विशाल व्यक्तिव था उनका। हृदय की विशालता मन की निर्मलता से ही है, ऐसी थी मां–

मेरे पति (उनके पुत्र) ने शादी के बाद जबलपुर से पत्र लिखा था, एक तरफ मां के लिये दूसरी ओर मेरे लिये, मुझे लिखा था मां की गालियों में जो मिठास है, उसे शायद तुम समझ पाओगी। सच था ऐसा मां बेटे का प्यार देखने को नहीं मिलता। ऐसा पुत्र जिससे अपने परिवार की उन्नति मां पिता के सामने अपनी मौत चाहा। उन्हें मालूम था मां के रहने से ही शान है, इज्जत है। अपने से कहीं अधिक अपने भाइयों पर विश्वास था, उन्हें उनके बच्चों की देख रेख करेंगे। इसका जिक्र वे हर पत्र पर करते थे, मां नही रही आज हमारी आवाज सुनने वाला कौन है, कौन हमारी तकलीफों को देखेगा।

मां के बताये हुये, किये हुये काम को हम पूरा करें, इस परिवार की परम्परा को बनाये रखें ऐसा प्रयास हमारा रहेगा, मां के बिना ककाजी का सूना पन कौन पूरा कर पाएेगा। हर जगह मां को वे देखते हैं। अपनी किसे बताये? मां नहीं हैं, घर सूना है, वे श्री थीं, लक्ष्मी थीं उनका स्नेह, उनकी बातें हम कभी नहीं भूल पायेंगे। नश्वर संसार में तो एक दिन जाना ही है– ठीक ही तो कहा है –

न जन्म कुछ न मृत्यु कुछ,
बस इतनी सी सिर्फ बात है।
किसी की आंख खुल गई,
किसी को नींद आ गई ॥

पूज्य मां के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन।



सतवंती सत्यवती की स्मृति में

-श्रीमती कृष्णा शर्मा
विद्यानगर

जो लोग अपनी प्रतिभा, क्षमता, योग्यता के वल पर प्रसिद्ध होते हैं, वे श्रेष्ठ होते हैं, जो पिता के कारण प्रसिद्ध होते हैं, वे मध्यम कोटि के लोग हैं, जो लोग मामा के कारण प्रसिद्ध होते हैं, वे अत्यंत अधम कोटि के हैं और जो लोग ससुर के कारण प्रसिद्ध होते हैं वे अत्यंत अधम होते हैं। लेकिन प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए अपना सिर फोड़कर, अपने कपड़े फाड़कर, गधे का अभिनय करके याने किसी भी प्रकार प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहिए। यह प्रसिद्धि प्राप्त करने की भूमिका लोहर्सी के तिवारी परिवार की साक्षात् लक्ष्मी श्रीमती सत्यवती तिवारी को याद करने के लिए प्रस्तुत है। वास्तव में पंडित रामगोपाल तिवारी उन भाग्यशाली व्यक्तियों में से है, जिन्हें उपर्युक्त संगिनी, और सह धर्मिणी मिली। वास्तव में पंडित रामगोपाल तिवारी की ख्याति, यश, सफलता, प्रसिद्धि, समृद्धि के पार्श्व में उस गृहिणी का योग है, उस अन्नपूर्णा की अभ्यर्थना है, उस लक्ष्मी की लगन है, उस धर्मपत्नी का धर्माचरण है, उस वधू की विशिष्टता है, उस सहयोगिनी का श्रम है, उस पुजारिणी की पूजा है– जिसका नाम श्रीमती सत्यवती तिवारी था। किसी भी कन्या को विवाह के लिए चुनते समय कन्या के रूप, सौंदर्य, शिक्षा, कुलीनता, संस्कार, स्वास्थ्य तथा लक्षण जरूर देखना चाहिए। संभवतः जिस चतुर पंडित ने झुलना के इस कन्या रत्न को चयन किया होगा, वह निश्चित ही अच्छा ज्योतिषी रहा होगा- एक सुलक्षणा, सती, सुंदरी, सुभगा, सौभाग्यवती, पुत्रवती, ममतामयी सत्यवती थी।

जव पंडित रामगोपाल तिवारी पहले पहल वकालत करने जूना बिलासपुर में किराये के मकान में आये, तव उनकी समृद्धि का स्त्रोत संकुचित था, सीमित था। जैसे सरिता अपने उत्स में संक्षिप्त रहती है, फिर प्रवाह में, प्रवास में, प्रयास में क्रमशः सशक्त, समृद्ध होती जाती है, और एक दिन सागर दृश्य विशाल रूप हो जाता है। उसी प्रकार सत्यवती के शुभ चरण के साथ समृद्धि, सुख, संतान, सुहृय, स्वजन सवका समावेश होता गया। एक के बाद एक... क्रमशः पाँच पुत्र श्री योगेश, डॉ. प्रशांत, श्री विनोद, श्री अशोक तथा डॉ. हर्षवर्धन की मां वनी परिवार का परिसर विस्तृत होता चला। ममतामयी माँ पूरे जूना विलासपुर में ही नहीं पूरे जिले में वात्सल्यमयी 'काकी' के रूप में प्रसिद्ध हो गयी। वह सचमुच सक्षम वात्सल्यमयी जननी थी, जिसके संरक्षण में जिसके ममत्व तले जिसके प्यार दुलार में जाने कितने वच्चे परिजन पुरजन पलते चलते गये। जो भी तिवारी जी के यहां जाता, वह माँ के प्यार का प्रसाद अवश्य पाता। टोले, मोहल्ले की गरीव महिलाओं को सहायता वह भी विना ढिढ़ोरा पीटे, चुपचाप किया करती थीं। तिवारी जी तो धनार्जन

और राजनीति में इतने डूब गये थे कि गृहस्थी, खेती–वाड़ी, बच्चों–कच्चों, की ओर उनका ध्यान ही न था। उनके पैरों में पंख लग गये थे। इधर घर, खेत, परिवार, पर्व, त्यौहार, विवाह सबकी चिंता सिर्फ काकी को थी। वैभव का स्वर्ण कलश आकाश की ओर उठ रहा था और काकी की व्यस्तता बढ़ती जा रही थी। समृद्धि एक ओर शोभा श्री को बढ़ाती है, तो दूसरी ओर सिरदर्द भी पैदा करती है। बच्चे बड़े हो चले थे। अपने बच्चों के साथ भतीजों की, अन्य रिश्तेदारों की भी देख–रेख उनके स्वभाव का अंग था। सहज, सरल, ममतामयी माँ का उदार रूप निखरता गया।

जब मैंने उन्हें देखा तो वे सौभाग्य, सौजन्य, सौंदर्य, समृद्धि, सुयश के शिखर पर थीं, फिर तो वैवाहिक संबंध स्थापित हो जाने पर सौहार्द्र भी मिला। बड़ी बिटिया निरंजना माँ की भ्रातृज वधू बनी और मैंने समधिन के नये रूप को निरखा अत्यंत नम्र मृदु मिलनसार मर्यादित आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ने हमारा हृदय जीत लिया। साधारण लाई बरी, बिजौरी की भी प्रशंसा करतो, जैसे उन्हें रसमलाई मिल गई हो। सच है मन की उदारता मनुष्य को महान् बनाती है। पैसे से कोई प्रभाव नहीं कर सकता प्यार अकेले दिल को जीत लेता है। प्रिय, आत्मीय के मंजुल आचरण से मीठे संबोधन से ही हम आल्हादित हो जाते हैं। ऐसी थीं श्रीमती तिवारी जिनके मधुर व्यवहार से सबको ऐसा लगता था, जैसे काकी उनको अपनी विशेष अत्यंत निकट, अविच्छिन्न आत्मीय हों।

जीवन क्षणभंगुर है, कोई अमर नहीं है, फिर भी कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनकी याद कसकती है, मन करकता है, गला भर आता है, वाणी मूक हो जाती है। इस दर्द को कोई पंडित रामगोपाल तिवारी जी से पूछे, बुढापे में जीवन संगिनी बिछुड़ गई, माथे में सिंदूर लिए काकीजी चली गयीं, यह उनका सौभाग्य था।

सौभाग्य लक्ष्मी सत्यवती प्यार बांटती रहीं, ममता लुटाती रहीं, वात्सल्य बिखेरती रहीं, दुलार देती रही, हंसी की छटा फैलाती रहीं, तथा सबको प्यार, प्रीति, ममत्व, मान मनुहार, मीठी वाणी देती–देती, हँसती-हँसती चली गयी, हाँ लोग रोते रह गये, उनकी पुण्य स्मृति मन को सालती है। समधिन सत्यवती जी पुण्यात्मा थीं मुक्त हो गई उ-हें प्रणाम।



संस्मरण

ममतामयी स्वर्गीया सत्यवती

– आचार्य **छत्रपाल**
नंदेली

आप झुलना के प्रतिष्ठित जमींदार श्री अनंतराम पांडे की कन्या और सह–कारिता पुरुष श्री रामगोपाल की धर्म पत्नी थीं। इनकी उदारता का उदाहरण मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ। श्री रामगोपाल तिवारी नाफेड के अध्यक्ष रहे और अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित किए। श्री तिवारी जी की सफलता का श्रेय उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सत्यवती तिवारी को अधिक जाता है। बिलासपुर में बोधपुंज नाम से श्री तिवारी जी का भव्य निवास स्थान है। बोधपुंज में अनेक आगन्तुकों का तांता लगा रहता था और सबकी भोजन व्यवस्था श्रीमती तिवारी करती थीं। एक बार की घटना है कि श्रीमती तिवारी अपने गांव जेवरा किसी काम से गई थीं। जेवरा गांव के स्त्री–पुरुष अपनी ममतामयी मालकिन को अपने बीच पाकर कृत–कृत व धन्य हो गए और मालकिन से याचना किए कि वह उनकी मजदूरी को दिलाने में कुछ मदद कर दे। श्रीमती तिवारी ने एस. डी. ओ. को जांजगीर से बुलवाकर रात्रि बारह बजे तक गांव वालों को रुके हुए पैसों का भुगतान अपने सामने कीं। इस प्रकार गरीब किसानों को राहत मिला।

एक बार मैं स्वयं अपने चाचा के घर उनकी लड़की की शादी में बिलासपुर गया था, मैं बोधपुंज गया और निमंत्रण दिया। श्रीमती तिवारी अपने व्यस्त कार्यों को छोड़कर अपनी बहूओं को साथ लेकर शादी में आयी और उसमें उनका पूरा सहयोग रहा। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में भी वे निष्ठापूर्वक अपने कार्यों का निर्वहन करती थीं।



मां की स्मृति

डॉ. रीता
उपाध्यक्ष, इंदिरा प्रियदर्शिनी,
सहकारी बैंक, रायपुर

संसार में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिये जीते हैं तथा दूसरों के गम अपने अंदर समेटकर जीवन पर्यंत सबको खुशियों का खजाना बांटते रहते हैं। हमारी मां भी इसी तरह हवा के एक खुशबूदार झोंकें की तरह थी, जो कि अपने आसपास के लोगों में खुशियां तथा अपना असीम स्नेह बांटकर अनंत में लीन हो गई तथा हम सबके लिये छोड़ गईं अपनी स्मृतियां। उनका चले जाना इतना अप्रत्याशित था कि विश्वास ही न हो सका कि वो हम सबको छोड़कर चली गई हैं। मां के पूरे व्यक्तित्व का चित्रण तो शायद मैं नहीं कर सकूं परंतु उनकी याद में श्रद्धांजली के रूप में यह एक छोटा सा प्रयास है।

मां का स्मरण होते ही मां का सादगी पूर्व आडंबर रहित व्यक्तित्व हरदम आंखों के सामने कौंध जाता है। माँ के चेहरे पर सदैव स्नेहसिक्त मुस्कान विद्यमान रहती थी, जो कि उनकी पहचान ही थी। मां का व्यवहार अमीर गरीब छोटे बड़े सभी के लिये समान था। वो सबको अपना समझकर ही सबसे एक तरह का व्यवहार करती थीं। वो बहुत भावुक एवं संवेदनशील थी। दूसरों के दुख से शीघ्र द्रवित हो जाती थीं। अपने नाम के ही अनुरूप वे सत्य बोलने वाली एवं मृदुभाषिणी थी। अपने माता पिता की सबसे बड़ी लड़की थी, अतः अपने सभी भाई बहिनों के लिये मातृतुल्य थीं। सभी उनकी काफी इज्जत करते थे तथा हर कार्य उनकी सलाह से करते थे। अपने विवाह के पश्चात वो घर की छोटी बहू के रूप में थी वहां पर मां बड़े धीरज से सहनशीलता का परिचय देती रहीं। संयुक्त परिवार में रहने की वजह से उनपर काफी जिम्मेदारियां थी, जिनका सफलता पूर्वक वहन करके परिवार में अपने से बड़े छोटे सबको प्रसन्न रखती थी। ककाजी के वकालत प्रारंभ करने के पश्चात बिलासपुर में रही। वहाँ पर भी सदैव उनके पास पढ़ाई करने के लिये गाँव से भतीजे भतीजियां, भानजे भानजियां सभी लोग रहते थे, परंतु वे सदैव सबकी देखभाल अपने सगे बच्चे की तरह करती थीं तथा कभी अपने बच्चों और उनके बीच कोई भेदभाव नहीं रखती थीं।

ककाजी ने उत्तरोत्तर उन्नति करते हुये सहकारिता के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त किया एवं राजनीति में भी शीर्षस्थ पदों पर आसीन हुए। मां कम पढ़ी लिखी होने पर भी ककाजी के दायित्वों को भली प्रकार निभाती थीं। ककाजी के अत्याधिक व्यस्त

हो जाने पर मां पर घर व बाहर की दोहरी जिम्मेदारियां आ गई थीं पर वो सभी प्रकार से घर एवं बाहर दोनों क्षेत्रों को एक साथ सम्भाल सकने में पूर्ण सक्षम थी। सच्चे अर्थों में ककाजी की सहगामिनी थीं।

वास्तविकता तो यह थी कि मां एक आदर्श पत्नी, आदर्श जननी एवं कुशल गृहिणी थी। परिवार व समाज में लोग उन्हें अन्नपूर्णा कहते थे, जिनका भंडार सदैव सबके लिये खुला रहता है। अपने बेटों के लिये माँ क्या थी इसकी कल्पना कर सकना सहज संभव नहीं हैं। मां एवं बेटों के मध्य ऐसी गहरी समझ एवं प्रेम आज के युग में दुर्लभ है।

बहुओं के लिये मां सास नहीं वरन मां ही थी। बहुओं को बेटी की तरह प्यार करती तथा उनके सुख दुख का हरदम ख्याल रखती थी। अतिथि सत्कार में उनको कोई सानी नहीं थी। रुढ़िवादिता व अंध विश्वासों में वो विश्वास नहीं करती थी, परंतु पुरानी मान्यताओं एवं मर्यादाओं से पूर्ण रूपेण बंधी हुई थीं। इतनी अधिक मर्यादा कि उन्होंने अपने पिता की सबसे बड़ी पुत्री होते हुये मां अपने पिता जी से कभी बात नहीं की। अपने पिता की इतनी इज्जत करती थी। कभी उनके सामने नहीं बैठती थी। एक बार जब मेरे नाना ससुर कैन्सर के इलाज हेतु रायपुर में थे तथा मां भी उस समय यहां पर थी तब मां मुझसे कहती थी कि जाकर बाबा से पूछो वो क्या खायेंगे तथा ड्राईंगरुम की खिड़की के बाहर बैठ-कर इन्हें देखती रहती थी। मैं कहती आप स्वयं पूछिये ना, तो बोली मैं ह कभू बात नहीं करेंव तो अब का करहूँ"। मैंने आश्चर्य से पूछा क्या कभी भी आप बाबा से बात नहीं की हैं तो बतलाई कि "हमन कभू कोनो भाई बहिन कका संग गोठियाएन न ओकर आगू में बैठे हन"।

मुझे मां के साथ रहने का अवसर काफी कम मिला, परंतु उस समय में ही मां जी का जो प्यार एवं आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ, इसे मैं आजीवन नहीं भूल पाऊंगी। विवाह के पश्चात मैं अपने पति के साथ लंदन गई थी तथा वहां पर ही जब मेरा प्रथम पुत्र होने वाला था, तो अपने देश से तथा अपने लोगों से दूर मैं काफी एकाकी अनुभव कर रही थी। ऐसे समय में मांजब वहां पर आई तथा करीब ३ माह रहकर उन्होंने मां की तरह मेरी देखभाल की एवं मुझे साहस देती रही। उन्हें देखकर ही मुझ में काफी हिम्मत आ गई थी फिर भी जिस तरह वो ख्याल करके वहां पर न मिलने वाली आवश्यक वस्तुयें मेरे लिये ले गई थी वह सब घट-नायें मेरे लिये अविस्मरणीय रहेंगी।

वहीं की एक और घटना याद आती है। वहां पर ककाजी ने मुझे अपने लिए कुछ खरीद लेना कहकर कुछ पौंड दिये एवं मैं, मां एवं पति देव जब खरीददारी करने निकले तो मेरी असावधानी कहें या जेब कतरे की होशियारी रास्ते में पर्स से पैसा गायब हो गया। पता लगने पर मैं काफी दुखी हुई व वापिस घर लौट आई। मां ने ककाजी को यह घटना बताई तथा उनसे पुनः मुझे और उतने पौंड दिलवाई। इस प्रकार मां के व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों में मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, इनके आदर्श मातृत्व के रूप ने। मां सभी के लिए मां थीं उनके गरिमामय व्यक्तित्व को हम सब सदैव याद करेंगे तथा यदि उनके कुछ गुणों को एवं सीखों को अपने जीवन में उतार सकें, तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।



— झुलनाहिन काकी —

स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी

लेखिका- डॉ रत्नावली सिंह
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
महिला महाविद्यालय

तब इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकी होगी कि जिस देश में बसुदेव कुटुम्बकम् की अवधारणा का उद्भव हुआ, वहां कुटुम्ब का दायरा इतना सिकुड़ जायेगा कि पति-पत्नी और एक, दो नाबालिक बच्चों के अतिरिक्त किसी अन्य का समाव ही न होगा।

बहुत पहले की बात नहीं है, इसी सदी के पूर्वार्द्ध में यह भावना हमारे छत्तीसगढ़ के गांवों में साकार होती थी। सरल एवं भोले छत्तीसगढ़ियों के लिए गांव ही वसुधा का प्रतीक था। जैसे छोटे से शालिकराम विष्णु के प्रतीक होते हैं। गांव में जाति, धर्म के अंतर से परे एक पारिवारिक संबंध होता था। गांव का सियान सबका "कका" होता था। गांव की वधुएं भौजी, बहुरिया और बेटियां बहिनें, बेटियां होती थीं। हमारे घर में पिताजी के नौकर का नाम हमारी मां या चाचियां नहीं लेती थीं। बाबा के खोखा नामक नौकर को हम लोग 'खोखा बबा' कहते थे और तो और इसी सदी के ६ वें दशक में मेरी ससुराल में घरेलू काम करने वाला नौकर, जो पति से उम्र में बड़ा था, मुझे बहुरिया मानता था। और मुझे उसको कुवरा ससुर मान बहुरिया की भूमिका निभाना पड़ता था।

तब छत्तीसगढ़ के गांवों के सहज प्रेम को 'गियां' बदकर और प्रगाढ़ता मिलती थी, जो सुदृढ़ पारिवारिक बंधन का आकार लेता था।

इस अंचल के छोटे से गांव लाहरसी के संपन्न एवं विद्या प्रेमी तिवारी परिवार के श्री श्यामसुंदर जी से पिताजी के भाईचारे का प्रगाढ़ नाता था। वैसे भी वे ब्राह्मणों को सचमुच में भूसुर ही मानते थे और उसी अनुरूप सम्मान देते थे। अपने बेटे के समवयस्क मित्र को "पालागी बेटा" कह कर जहां वात्सल्य का परिचय देते थे, वहीं पैलगी द्वारा ब्राह्मण की महत्ता की स्वीकृति भी थी। ऐसे ठाकुर छेदीलाल के लिए मित्र श्यामसुंदर जी के लघु भ्राता रामगोपाल तिवारी संगी एवं प्रिय अनुज ही थे। इसी नाते उनकी पत्नी श्रीमती सत्यवती देवी उनकी बहू थीं। छत्तीसगढ़ में बहुओं की पहचान मैके के गांव के नाम

से होता है। अस्तु पिताजी की झुलनहिन बहुरिया हमारी झुलनहिन काकी थीं। जब से होश संभाला, तब से उनसे परिचय हुआ। गोरा रंग, छोटा कद,पहले कुछ दुबली, बाद में भरी देहयष्टि, आंचल से आवृत्त, सिर ऊंचे, ललाट के नीचे सजग, कजरारी आंखें, पान रंजित होठों की मृदु मुस्कान, चेहरे की गंभीरता को सौम्य सी करती ऐसी थी हमारी झुलनहिन काकी ।

पांच पुत्रों की सौभाग्यशालिनी माता का मन बेटी के पावन प्रेम के बिना रिक्त सा रहा। वह निर्मल स्नेह जहां परिवार की बेटियों पर प्रवाहित हुआ, कुछ अमृतमय कण मुझे भी मिला। पारिवारिक निकटता कहिए पास-पास घर होने के कारण अथवा पिताजी के आदर स्नेह के कारण काकी के स्नेह सुधा का प्रसाद मुझे बचपन में भरपूर मिला। बाद में यही स्नेह पुत्र वधुओं और पोतियों को उनके जीवन पर्यंत मिलता रहा। आज भी उनका स्नेहिल रूप बहुतों द्वारा याद किया जाता है।

काकी तो मां के समान होती है। उनमें गुणदोषों का विश्लेषण बच्चे कैसे कर सकते हैं। किंतु व्यक्तित्व में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो आदमी के न रहने पर भी याद रहती हैं। काकी के विषय में ऐसी ही कुछ बातें हैं, जो उन्हें आम औरतों से अलग और उपर उठाती है। कहा जाता है कि हर सफल व्यक्ति के पीछे एक स्त्री होती है। राम-गोपाल काका की सफलता के पीछे काकी का मृदु सुहृद व्यक्तित्व है। एक ओर उन्हें अपने प्रगति पथ पर अग्रसर होते पति का तो दूसरी ओर गांव की पुरानी मान्यताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करना था, जो उन्होंने सफलता से किया। घर के झंझटों से ककाजी को मुक्त रखकर उनकी प्रगति में पूरा योगदान दिया ।

गीता में स्थिति प्रज्ञ के लक्षणों में एक यह है कि व्यक्ति दुःख और सुख को समरसता से ग्रहण करें। ककाजी उन्नति की सीढ़ियां चढ़ते सहकारिता के क्षेत्र में अंतर-राष्ट्रीय महत्व के व्यक्ति बन गये। राजनीति में भी मंत्री से लेकर कांग्रेस अध्यक्ष के पद को प्राप्त किया। ककाजी की ऊंचाईयों से काकी का व्यवहार अप्रभावित रहा। दंभ से परे वहीं स्नेहिल सरलता उनकी अपनी विशेषता थी। प्रतिभा जैसी बहू की मृत्यु तथा योगेश एवं प्रशांत भाई की मृत्यु के समय उन्हें देखा युवा पुत्रों को चिरविदा करते उनका कलेजा फटता रहा, पर पीड़ा को दबा, बहुओं और बच्चों को आश्वस्त करती रही। लगता है गीता के दर्शन को पीकर दिखा दिया।

छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रति हीन भावना के कारण छत्तीसगढ़ियों में ही अरुचि पाई जाती है। हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के कारण यदि हिन्दी की ओर झुकाव हो, तो बात

दूसरी है, पर थोड़े पढ़ लिख कर छत्तीसगढ़ी जहां अपनी भाषा से मुंह चुराते हैं, काकी ने अपनी बोली का सदा सम्मान दिया। चाहे दिल्ली, भोपाल हो, चाहे हर्ष भाई के साथ लंदन वास हो भाषा उनकी छत्तीसगढ़ी ही रही। आजकल के छत्तीसगढ़ी भाइयों के लिए एक आदर्श है। इसी तरह छत्तीसगढ़ी त्यौहार हरछठ, तीजा, आदि विधिपूर्वक मानती रही हैं। छत्तीसगढ़ी पकवान खुरमी, ठेठरी, कुसली, अइरसा प्रेम से बनाती थी, उससे अधिक प्रेम से खिलाती थीं।

मृत्युपर्यंत सुहागिन रहना स्त्री का सबसे बड़ा सौभाग्य माना जाता है। अपने पुण्यों के बल पर हमारी काकी हाथ भर चूड़ी और मांग भर सिंदूर लेकर संसार से विदा हुईं। ईश्वर उन सा ही जीवन दे और उन जैसी मृत्यु भी।



卐 तीन यादगार बातें मां की याद में संकलन 卐
(जिसे माँ जीती थी)

संतोष यादव, (मुंशी)
रहौद

(१)

१) तीन लोगों पर दया करनी चाहिए–
"बालक, भूखा, गरीब"

२) तीन बातें बस में रखनी चाहिए–
"मन, इर्ष्या, लोभ"

३) तीन लोगों का आदर करनी चाहिए–
"माता–पिता, मेहमान, गुरु"

४) तीन चीजों से बचना चाहिए–
"बूरी सोहबत, स्वार्थ, निंदा"

५) तीन चोज निकलकर वापस नहीं आती है–
"तीर कमान से, लब्ज जबान से, प्राण शरीर से"

(२)

यदि पौधे हो तो लाजवंती का पौधा बनो।
यदि पक्षी हो तो कोयल जैसे मदमस्त बनो॥
यदि पुष्प हो तो, चम्मा चमेली जैसे सुगंध दो।
यदि पत्थर हो तो, पारस जैसे बहुमूल्य बनो॥
यदि मानव हो तो माता–पिता की सेवा करना सीखो।
यदि गुरु हो तो, शिष्य की समस्या सुलझाना सीखो।
यदि मुखिया हो तो मुखिया का कर्तव्य पालन करना सीखो॥

(३)

वह पथ, पथिक, कुशलता क्या,
जिस पर बिखरे शूल न हो।
नाविक को धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धाराएँ प्रतिकूल न हो।

स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी के विषय में

कु. दिव्या
बी. ए.
राघवेन्द्र नगर

काकीजी का आदर्शशील व्यवहार सभी को स्नेहसिक्त करने वाली थी। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था, काकीजी ने अपने जीवन में पूर्ण रूप से अपने दायित्वों को निभाया।

उनका पूरा जीवन अपने सभी भतीजे, भांजे, पुत्रों के प्रति स्नेह रखकर उन्हें सद-विचार दिया तथा एक आदर्श मां की भूमिका निभायी। काकीजी बिलकुल अपने नाम के अनुकूल वास्तव में ही सत्य को वर्तती थी। उन्होंने कभी परिवार के दायित्वों में कोई कसर नहीं छोड़ा, उन्होंने पूरे परिवार का विश्वास जीता व एक आदर्श पत्नी व आदर्श माँ का प्रतिरूप प्रस्तुत किया।

इतनी नि कपट व व्यवहार शील जिसने पूरे परिवार का हृदय जीत लिया। उसने अपने पुत्रों के अलावा अपने जेठ-जेठानी के पुत्रों को भी बराबर का स्नेह प्रदान किया। उसने सभी पुत्रों को अपने ही पुत्रों जैसा दर्जा दिया। इसके अलावा अपने नातो व अपने जेठ-जेठानी के पुत्रों के पुत्र व पुत्रियों को भी समान स्नेह प्रदान किया। उनको जैसी शायद ही अब कोई बन पायेगी। वे आदर्श ममतामयी मां, प्यार की देवी थीं। सभी को स्नेह प्रदान करना उनके अपने व्यवहार में शामिल थी, उसने ऐसी धनी को पाकर परिवार का जो आदर गरिमा पायी वह अपने पूरा तिवारी परिवार को स्त्रियों को गोरवान्वित कर दिया है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी जैसी मां तथा मेरी काकीजी सभी को मिले। इस विचार को मेरे अलावा किसी और ने सोचा है, तो मेरे पिता श्री दिनेश चंद्र तिवारी, विजयलक्ष्मी तिवारी, देवेश तिवारी, दिव्या तिवारी इनको भी इच्छा है कि स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी हमारे तिवारी परिवार में पुनः जन्म लें, फिर से उनका स्नेह हमें प्राप्त हों।

★
★ ★

मेरी मामी

– बहुत आयामी व्यक्तित्व वाली –

– कौशल
मेऊ

मामी सत्यवती (मेरी मां तुल्य) के जीवन को मैंने मामाजी की सचहरी के रूप में, त्याग एवं तपस्या की मूर्ति के रूप में देखा है। उनका यह जीवन अपने ससुराल लोहरसी के एक बहुत बड़े सम्मिलित परिवार से प्रारंभ होता है।

वैसे तो मामीजी बाल्यकाल से ही स्नेही स्वभाव, उदार प्रकृति एवं शील स्वभाव की थी, जो बहुत बड़े सम्मिलित परिवार में बहू बन आने पर, उनका आचार–विचार और अधिक विकसित होता गया। वे मामाजी के मार्गदर्शन के अनुरूप ही कार्य करती थी। मामाजी और मामीजी ने पति–पत्नी के रूप मे एक आदर्श साहचर्य के जैसा जीवन यापन किया, जो अनुकरणीय एवं अद्वितीय है

मामा जी, मामी जी को मर्यादित जीवन का सीख देते, मामा जी को मामी जी का जीवन अपेक्षा से अधिक मर्यादित मिलता। मामा जी के भाव को, उनके अतः मन को समझकर मामी जी तदनुरूप कार्य करती थी मामा जी बचपन से ही ओजस्वी स्वभाव के थे। जीवन के मूल्यों को प्रारंभिक समय से ही अपने जीवन में प्रतिपादित करने के पक्षधर थे। कायदा, मर्यादा, बड़ों का सम्मान, शारीरिक विकास, मानसिक विकास समय का सदुपयोग कर जीवन को गुरुतर बनाने का प्रयास उनका प्रारंभिक काल से ही रहा।

मामा जी बुद्धिमान थे, जबकि सत्यवती मामी सत्य की पुजारी थी। शील, संकोच, उदार हृदय वाली, दूसरों को सम्मान देने वाली, दया के सागर, लक्ष्मीवती थी। विद्या अध्ययन हेतु जब मामा जी स्कूल–कालेज जाते, तब मामी जी उनके पास जो दो-तीन सौ रुपए की राशि होती थी, उनके कपड़ों में दबा कर रख देती थी, यह बात मामा जी को अपने अध्ययन स्थान जाने पर ही मालुम होता था। इस प्रकार मामी जी उनके अध्ययन काल में मदद करती थी।

मामा जी बचपन से ही अपने से बड़ों के पास, मझिला मामा के पास एवं मामी के पास एवं मामी को पत्र लिखा करते थे। मामी जी के पास उनका पत्र जीवन के आदर्शों

से सीख से भरा होता था। मामी जी मामा जी के बताए हुए मार्गों पर चल उनके पत्र के एक-एक शब्द को ध्यान में, मानस पटल में रख कर मनन करती थी तथा उसके अनुरूप ही कार्य करती थी। उनसे आने के समय का, उनसे मिलने का इंतिजार करती थी। मामाजी, मामीजी को रामायण पढ़ने का सीख अपने पत्रों में देते। रामायण पढ़कर मामीजी गीता के आदर्शों को समझने की कोशिश करती थीं। वे पढ़ी-लिखी कम थी, पर रामायण पढ़ने से उनका शब्द ज्ञान बढ़ता गया।

वे मामाजी के पत्रों को अंत तक सम्हाल कर (जतन कर) रखी थी विद्या अध्ययन के अवकाश की घड़ी में जब मामा जी अपने गांव आते थे, तो मामी जी उन्हें किसी भी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं देती थीं। अधिक दुखित होने पर वह अकेले में रो लिया करती थी, लेकिन किसी को जवाब नहीं देती थी, बराबरी नहीं करती थीं।

धीरे- धीरे मामाजी का अध्ययन काल पूर्ण हुआ और वे वकालत पास करने के बाद अपना प्रेक्टिस शुरु किए। शुरु में मामा जी को पैसे की कमी का मुकाबला करना पड़ा, परंतु मामाजी अपने वकालत के व्यवसाय में लगन से जुटे रहे औ उत्तरोत्तर तरक्की करते चले गए। उनकी तकलीफ की घड़ी में मामी जी के मायके से उनके पिता श्रीमान अनंतराम जी पाण्डे झुलना से उन्हें सदा सहयोग करते रहे। इससे उन्हें बहुत राहत मिलता रहा।

जब उनकी स्थिति में सुधार हुआ तो मामा जी जूना बिलासपुर वाले मुख्य सड़क के सामने वाले मकान को किराए में लिए और उसी मकान में सन् १९४७ में मन्ना भाई ओर सन् १९४८ में मैं पढ़ने के लिए मामा-मामी जी के पास पहुंचें। और फिर सुरेश भाई, नरेश भाई, दिनेश, सुशील, लक्ष्मण पांडें जी, मोतीलाल पाण्डे, सुभाष, शशी, निर्मला शैली नरेन्द्र, श्याम राव, जीवाजी राव, शिवनाथ पंडित, अकलतरी की कुमारी एवं उसका लड़का पढ़ने के लिए पहुंचे। अपने पांच पुत्रों के अतिरिक्त आज किस मां का हृदय इतना विशाल होगा, जो अपने पुत्रों के साथ अन्यों की जिम्मेदारी उठाने की सोचे। विशाल हृदय वाली, ममता का सागर मामी जी सब लोगों को समभाव से व्यवहार करती थी, उनमें परायपन का आभास किसी को भी नहीं हुआ। वे सबों के लिए मां की ममता का सागर थी।

सब लोग मामी जी के ममत्व को पाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में विद्या अध्ययन कर रहे थे। मामा जी को सबों की चिंता से मुक्त रखी थी। वे चाहती थी कि मामा जो अपने

वकालत में अपने जीवन के उत्तरोत्तर विकास में स्वतंत्र रहे। ऐसे आदर्श पत्नी, सहचरी, सह-धर्मिनी थी मामी जी।

बड़े मामा जी जब बिलासपुर आते थे, तो उनका सत्कार पूरा-पूरा कर अपना फर्ज का पालन करती थी, मर्यादा का पालन करती थी। मामा जी की इच्छा के परिपूरक के रूप में। बड़े मामा इससे संतुष्ट होकर अपने घर में बोलते थे कि यहां से ज्यादा ख्याल मेरा योगेश की 'मां' करती है।

मामा जी की बहिनें जब बिलासपुर आती थी, तो एक-एक साड़ी देते, तोमामी जी अपनी ओर से एक-एक साड़ी और मिला कर उनका सत्कार करती थी और उन्हें सम्मान-पूर्वक बिदा करती थी। इस प्रकार मामा जी की सहधर्मिणी के रूप में अपने कर्तव्य का निर्व-हन करती थी।

मामी जी के देहावसान की खबर पाकर दीदी घंटों भर बिलख-बिलख कर रोती रही "झुलनिहीन तैं मोर मां ले बढ़कर रहे, ओ तोर बदला मां भगवान मोला कावर नहीं ले गईस, मोर भाई ल तैं बेसहारा कर दे हे ओ"।

उनके रिश्तेदार तो मामी जी से संतुष्ट थे ही, उनके पास आने-जाने वाले लोग उनके अनुगामी हो जाते थे, उनके भक्त हो जाते थे। वे सबों का दुख हर लेती थी, "दुख-हारन" थी मामी जी। मेरी नजर में, मेरी जानकारी में मामी जी ने अपने आर्कषक व्यक्तित्व से अपनी जीवन काल में अपना समर्थक ही बनाया, उनका विरोध करने वाला कोई नही था।

दिखावटी व्यवहार और बनावटी कर्तव्य को वह बिलकुल ही पंसद नहीं करती थी, जैसे वह भीतर थी, उसी के अनुरूप बाहर। शील, संकोच और मर्यादा तो वो धारण करती थी। उनमें एक आदर्श नारी, आदर्श मां के सभी रूप विद्यमान थे। मुझे एक घटना अभी याद है पूर्व मंत्री श्री मथुरा प्रसाद जी दुबे ने सन् १९४५ से ५० के बीच एक बार मामी जी से मिलने की इच्छा व्यक्त की। मामा जी तो उन्हें पहिले ही आभास दे दिया था कि वे आपसे मिलना शायद ही पसद करें क्योंकि वो आपको मुझसे बड़ा मानती है। दुबे जी के विचार जब मामा जी ने मामी जी के पास रक्खे तो मामी जी बोली मैं उनसे क्या बात करुंगी और जब बात ही नहीं कर सकती तो, मिलने का क्या काम।

मर्यादा का पालन जो करती थी। महिलाओं के स्वभाव के बिलकुल विपरीत वे मामा जी के रिश्तेदारों को प्रथम स्थान देती थी जबकि अपने मायके पक्ष को द्वितीय स्थान देती थी।

मामा जी के कार्यों में वे हस्तक्षेप करना आवश्यक नहीं समझती थी और न ही उचित और जहां मामा जी से कोई भूल हो जाय, वहां एक सहयोगी सहचर्या के कर्तव्य समझ परामर्श देती थी। वैसे तो अनेकों उदाहरण उनके परामर्श देने का है. लेकिन उनका एक परामर्श जो मेरे मानस पटल में अच्छी तरह से अंकित है वे हैं– जब मामा जी म. प्र. कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, तब मामा जी बिलासपुर आए हुए थे, मिलने वालों का तांता लगा हुआ था, एक के बाद एक मिल रहे थे, घर में भोजन तैयार हो गया था, सब लोग उनका इंतिजार कर रहे थे, डेढ़-दो बजे के करीब समय हो गया था, मामीजी अपने कमरे में बैठी उनका इंतिजार कर रही थी, अंत में उनका एक अनुयायी आया, अपनी समस्या रखा मामा जी उस महोदय पर झल्ला बैठे और वार्तालाप करने के बाद जब मामा जी भोजन के लिए बैठे तो मामीजी बोली– "महाराज उस आदमी पर क्यों झल्ला रहे थे, उनका काम भी नहीं किए और ऊपर से उनको झल्ला कर वापस भेज दिए।" ये छोटे–छोटे काम के लिए लोग मुझे परेशान करते हैं। मामी जी ने कहा– "जिस काम को आप छोटा समझ रहे हैं, उस आदमी के लिए वही काम सबसे बड़ा काम है। आम आदमियों को अपनी समस्याओं से मतलब होता है, उन्हें आपके देश की समस्याओं से कोई मतलब नहीं है। – कितेक बड़े आशा लगा के ओ तुंहर पास आये रहीस हावै अउ ओला निराश करके वापस भेज दिया।

मामाजी ने कहा– "भई, मैं भी तो आदमी हूं, मुझे खाने-पीने के लिए, आराम करने के लिए समय चाहिए कि नहीं, और फिर मैं छोटे–छोटे काम नहीं कर सकता।" मामी जी बोली– "जब आप छोटे–छोटे काम नहीं कर सकते, आराम के लिए समय चाहिए तो पद छोड़ दीजिए जब पद है तो काम करना चाहिए।

कितना सही दृष्टिकोण है मामी जी का, कितना उपयुक्त परामर्श दी मामी जी ने मामाजी को बहुत निष्पक्ष थीं। मामी जी सहीं बात के लिए वे अपने पराये में अंतर नहीं समझती थी, अनुचित का सदैव विरोध करती। अपने मन में जो उचित समझती थी, वही काम करती थी, अनुचित काम वे कभी भी करना पसंद नहीं करती थी। वे बोलती कम थी, और मामा जी को कभी आदमी पहिचानने में चूक होता, तो मामी जी उन्हें सावधान करती।

मामा जी के पद का अभिमान उन्हें कभी नहीं हुआ। अगल बगल के कमरे में मामाजी और मामी जी रहते थे, परन्तु बात बहुत कम करते थे। जब जरूरी होता तो मामा जी के कमरे में जाकर बात करती और जब जरूरी होता तो मामी जी मामाजी के कमरे में जाकर बात करते या अपने कमरे में उन्हें बुला लेते। मामाजी अपने से बड़ों के साथ सदैव सम्मानित,

संतुलित एवं मर्यादित बात करते थे, मामी जी उसी अनुरुप व्यवहार करती थी, उनको पद का कोई अभिमान नहीं था । उदा. पेश करता हूं :– वे एक दूसरे के परिपूरक थे । कभी कभी मामाजी को दिल्ली भोपाल में अधिक समय लग जाता था, किसी भी विषय में उन्हें परेशानी होती, तो वे मामी जी को फोन कर अपने पास बुलवा लेते, जब मामी जी घर के कोई समस्या के विषय में उन्हें बोलती तो वे सब काम को छोड़कर अपने पास बुला लेते । उन दोनों में एक दूसरे के प्रति बहुत लगाव था, असीम विश्वास था, एक गाड़ी के दो पहिये सदृश्य थे । मामी जी बहुत उदार थीं उनका दृष्टिकोण व्यापक था। वे मामाजी को उनके भाई, भौजाई, भतीजा, भतीजीन, बहिन, भांजे, भांजी के लिए कुछ करना चाहते, तो वे उन्हें कभी नहीं रोकती ।

गरीबों के लिए उनके हृदय में अगाध प्रेम था, कभी किसी का अपमान करना पसंद नहीं करती थी । इसीलिए मामीजी गरीब-अमीर, छोटे-बड़े, सभी के लिए श्रद्धा की पात्र थी।



– मातृत्व की प्रतिमूर्ति –

स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी

डॉ. ओंकार शर्मा
ग्राम – मेऊ
स्वास्थ्य अधिकारी, नगर निगम, बिलासपुर

श्रीमती सत्यवती तिवारी का जन्म ग्राम झुलना के सभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री अंनतराम पांडेय सत्य निष्ठ कर्मभोगी व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व एवं व्यवहार से प्रभावित होकर ग्रामीण जन उन्हें काफी आदर थे। उनके मानवीय एवं उदारवादी गुणों के कारण उनकी प्रसिद्ध समाज एवं आसपास के ग्रामीण अंचल में थी। सत्यवती तिवारी का बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता, वे कम पढ़ी लिखी थी। स्कूल शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। मेरे पिता स्व. गजानन गौरहा का ननिहाल भी ग्राम झुलना में है। श्री अंनतराम पांडेय उनके सगे मामा थे। श्रीमती सत्यवती बचपन में अपने बुआ के ग्राम मेऊ में हमेशा आती थी। हमारे गांव में वकीलीन फूफू के नाम से जानी जाती थी। जब वे मेऊ आती उनसे मिलने के लिए बहुत से लोग आते अपने विनम्रता एवं मातृत्व गुणों के कारण उनसे मिलने वालों का तांता लगा रहता। मिलने वालों में रिश्तेदार के साथ ग्रामीण महिला, पुरुष, एवं बच्चे भी शामिल रहते। वे ग्रामीणों की समस्याएं सुनती यथाशक्ति उन्हें मदद करती एवं सांत्वना प्रदान करती जो भी उनके संपर्क में आया उन्हें उनका अपार स्नेह प्राप्त हुआ। पति पं. रामगोपाल तिवारी बिलासपुर जिले के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता, समाज सेवी एवं एक सहकारिता पुरुष, कुशल राजनीतिज्ञ ही वे मध्य प्रदेश शासन में विधि सहकारिता मंत्री रहे, दो बार लोकसभा सदस्य रहे, भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ, अखिल भारतीय राष्ट्रीय विपणन संघ के शीर्षस्थ पदो पर रहे। श्रीमती सत्यवती तिवारी अपने पति के कार्यो में सदा योगदान सक्रिय रूप से देती। राजनैतिक, सामाजिक कार्यों में समान रूप से हाथ बटाती। संपन्नता, प्रतिष्ठा एवं पावर प्राप्त होने के बाद भी वे मानवीयता की मूर्ति बनी रही उनके जीवन में अभिमान लेशमात्र भी दिखाई नहीं देता। दूसरों की निन्दा करना, सुनना एवं दूसरों पर हँसना वे कभी पसंद नहीं करती। अपने सामाजिक जीवन में वे राजनैतिक छल प्रपंच से अलग रही।

अपने बोधपुंज स्थित घर के बरामदे में एवं अपने कमरे में बैठकर लोगों से मुलाकात करती उनका हृदय उदारता से परिपूर्ण रहता, सभी को आदर एवं सम्मान देती।

जब वे बिलासपुर से दिल्ली या भोपाल जाती रेल्वे स्टेशन में भिखारियों को देने के लिए अलग से पैसे निकाल बाहर रखती एवं उन्हें अपने हाथों से देती। गीता एवं रामायण का अध्ययन वे हमेशा करती थी। आध्यात्म एवं ईश्वर के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा एवं विश्वास था। वे अक्सर कहा करती ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण परिवार एवं समाज ने उन्हें मां के रूप में देखी।

फूफू के नाम का स्मरण करते ही विश्चल स्नेह प्रदान करने वाली आदर्श निःस्वार्थ, त्याग, ममता और अमूल्य आदर्श की स्वामिनी छत्तीसगढ़ी समाज को गोरवान्वित करने वाली आदर्श गृहणी की छवि सामने आती है। वे दूसरों के दुःख–दर्द और वेदना को करीव से देखती थी। वे विनोद प्रिय स्पष्ट वक्ता थी। उन्होंने समाज सेवा करते हुए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। अपने परवर्ती जीवन में उन्हें बड़े–बड़े दुख और कष्ठों को झेलना पड़ा वे मानों शक्ति की पर्याय थी। दूसरे के दुखो को दूर करने वाली अपने दुःख एवं कष्टों को भगवान शिव की तरह अपने तक ही सीमित कर ली। इन्हीं अविस्मरणीय व्यक्तित्व के कारण इन्हें हमेशा स्मरण किया जावेगा।



卐 सत्यवती जी एक आदर्श नारी 卐

केयूर भूषण
भूतपूर्व सांसद, रायपुर

स्व. श्रीमती सत्यवती जी, आदरणीय रामगोपाल तिवारी जी के व्यक्तित्व से इतनी जुड़ी हुई थी कि उनकी अलग पहचान बताना चाहें तो कठिन होगा। अगर हम इसे दूसरे रूप में कहे तो कहना होगा सत्यवती जी एवं राम गोपाल तिवारी जी का व्यक्तित्व परस्पर एक दूसरे के जीवन में इतना समाहित हो गया है कि उसका अलग अस्तित्व बना सकना असम्भव नहीं पर कठिन अवश्य हैं। सत्यवती जी भारतीय नारी की प्रतीक थी। भारतीय नारी एक साथ तीन कर्तव्यों का निर्वाह करती है। वह अपने पति के लिए आदर्श पत्नी, पुत्र के लिए मां और भाई के लिए बहन। इतना ही नहीं संस्कारित कर आदर्श के रूप में पढ़ने की जिम्मेदारी भी उसकी रहती है। बच्चों की सम्पूर्ण जिम्मेदारी माँ अपने पर ले लेती है। पति बहक न जाय इसकी भी जिम्मेदारी उसी की रहती है। भाई का साज संवार मां के घर में रहते तक वही करती है। और जीवन भर भाई से अलग नहीं हो पाती। हम इन सारे गुणों को मां सत्यवती जी में पाते हैं।

आदरणीय रामगोपाल तिवारी जी के व्यक्तित्व को शिखर तक पहुंचाने में श्रीमती सत्यवती जी तपस्या ही प्रमुख रहीं। वे अगर गृहस्थी की झंझटों से उन्हें मुक्त नहीं की होती, अपने स्वार्थों में उन्हें फंसा कर रखती, तो रामगोपाल तिवारी कभी ऊपर नहीं आ सकते थे। घर की सारी जिम्मेदारी अपने पर लेकर तिवारी जी को सार्वजनिक क्षेत्र में समर्पित रहने के लिए सहयोग ही करती रही। वे अपने सामने सदा आदर्श के रूप में सीताजी को मानती रही। रामायण ने ही तो यह सीख उन्हें दी थी। सत्यवती जी को रामायण पर अगाध श्रद्धा थी। वे नित्य रामायण का पाठ करती थी। इतना ही नही स्वयं उच्च कोटि की रामायणी भी थी। महिलाओं के बीच जागरण का माध्यम रामायण को ही बनाया था। एक सम्पन्न परिवार में जन्मी, दूसरे सम्पन्न परिवार में ब्याही गई पूरा जीवन सम्पन्नता में बीता। पर सम्पन्नों के अहंकार से वे कोसों दूर रहीं। उनका व्यवहार सदा ही समदर्शी रहा। जो भी गया ममत्व लेकर ही आया।

मुझे भी सत्यवती जी के दर्शन करने का अनेको बार अवसर मिला। अनेको बार तिवारी जी की हाजरी और गैर हाजरी में उनके निवास पर बिलासपुर में ठहरने का मौका मिला। सत्यवती जी से बहिन का प्यार पाकर भी लौटा। सत्यवतीजी तो ममत्व की मूर्ति थीं। प्यार बांटती थी और पीड़ा सहती थी। पर अपनी पीड़ा किसी से उजागर नहीं होने देती। सदा उनके मुख मण्डल पर प्रसन्नता ही खेलती रही।

आज भी जब मैं उनका स्मरण करता हूँ, तब मुझे उनकी मूर्ति दिखाई देने लगती है। जिसे मैं उनके मकान के स्वागत कक्ष के बाद, वकील साहब के कक्ष को पार कर उनके कक्ष में जाते ही देखता था उस स्वरुप को नमन करते हुए मैं उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

मां को प्रणाम

कन्हैया
अति प्रबंधक, जिला सहकारी-
केन्द्रीय बैंक बिलासपुर

दुर्ग जिले में झुलना गांव के दबंग और धर्मपरायण मालगुजार स्व. श्री अनन्त राम पाण्डेय के पूर्व पुण्य और सत्कर्मों के प्रसाद स्वरूप ही शायद हीरावती पाण्डेय ने उन्हें ज्येष्ठ कन्या के रूप में "सत्यवती" का अनुपम उपहार दिया था। यश–कीर्ति जन और धन से झुलना का पाण्डेय परिवार सम्पन्न हो गया था।

भारतीय नारी के विभिन्न रूपों को सफलता पूर्वक आदर्श रूप में साकार, करने वाली देवी स्व. श्रीमती सत्यवती तिवारी तुम्हें अंतर्मन से प्रणाम है स्वीकार करना।

बेटी के रूप में तुम्हारे बचपन और युवावस्था ने माँ–बाप और ससुर–सास को कितना मान–सम्मान और सेवा दी थी, मैं नहीं जानता। पर यहीं के धर्म अस्पताल में बीमार सास श्रीमती बोधकुंवर की सेवा करते और मिशन अस्पताल तथा बगीचा वाले घर में बीमारी की इलाज कराने आए पिता स्व. श्री अनन्तराम पाण्डेय और माँ श्रीमती हीरावती की सेवा करते अपनी आंखों से तुम्हें देखा है। बेटी की गरिमा को बढ़ाने वाली देवी तुम्हें प्रणाम है।

एक आदर्श बहन के रूप में श्रीमती रामप्यारी शर्मा, स्व. श्री गेंदलाल पाण्डेय, श्री मोतीलाल पाण्डेय, श्री लक्ष्मण पाण्डेय, श्री शत्रुघ्न पाण्डेय और श्री बाबूलाल पाण्डेय, पर निश्छल मन प्यार उलीचते और मुंह बोले बड़े भाई स्व. श्री गजानन गौरहा को सम्मान देते भी मैंने देखा है। राखी के धागे में भाई का प्यार पिरोने वाली बहन के रिश्ते को सार्थकता प्रदान करने वाली देवी तुम्हें नमन करता हूँ।

मृत्यु शैय्या पर धर्म अस्पताल में लेटी सास की सेवा करते समय भी अपने सिर से आंचल न गिरने देने की सतर्कता का दृश्य आज भी मेरे हृदय पर तुम्हारे प्रति श्रद्धा का अमिट छाप छोड़ गया है। वह वाकया भी मुझे याद है जब एक दिन स्व. श्री मुरली मनोहर तिवारी जोंधरा से आए थे। कुवंरा ससुर (जेठ) को उचित सम्मान देने तुमने भकला राऊत और महाजन की अनुपस्थिति में सेवा का सुयोग मुझे दिया था। तब नहीं, पर आज मुझे गर्व है तुम्हारे पूर्व निश्चित कुर्सी से उठकर दीवाल की आड़ में रखे तखत पर

बैठ, मुझे निर्देशित करते हुए छत्तीसगढ़ की आदर्श बहु के संस्कार को चरितार्थ करने के तरीके। ओ छत्तीसगढ़ की संस्कारवान बहू तेरा वंदन करता हूँ।

गृह लक्ष्मी के रूप मे चमत्कारी रहा है तुम्हारा स्वरूप। सुना हूँ कि जब तुम ब्याह कर आयी थीं तो आदरणीय श्री रामगोपाल जी तिवारी पढ़ रहे थे। वकालत पास कर जूना बिलासपुर मे देवांगन के मकान में किराये पर रहते थे। तुम्हारे सत्कर्मों का ही सुफल है कि हर कदम पर सफलता उन्हें वरण करते गई। कर्मयोगी श्री तिवारी जी एक नौसिखिये वकील से प्रदेश के अग्रणी वकीलों में गिने जाने लगे। सहकारिता के क्षेत्र में अन्तर्-राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। राजनीति के क्षेत्र में विधायक, मंत्री, संसद सदस्य और प्रदेश के कांग्रेसाध्यक्ष रहे। तुममें कोई अन्तर नहीं आया। स्वाभिमान तो जन्मजात था, पर अभिमान का भाव कभी किसी ने न देखा।

तिवारी जी की हर सफलता पर सर्वाधिक योगदान तुम्हारा ही था। महीने के २८ दिन प्रवास पर रहने वाले तिवारी जी के बोझपुंज को जिस साहस, आत्मविश्वास और सुघड़ता से तुमने संवारा वह अनुकरणीय है। पति के खान-पान, रहन-सहन और दैनिक नियमित जीवन को परिष्कृत लय देने वाली आदर्श जीवन संगिनी तुम्हें प्रणाम है।

मुझे याद है तुमने महिलाओं की एक मण्डली की स्थापना की थी, जो कहने के लिए तो दोपहर में भजन, कीर्तन और गीत संगीत से मनोरंजन करते थे पर उद्देश्य बहुत गहन और गंभीर था। तुम्हारी चाहना थी कि खाली समय में भी महिलाएं कुछ रचनात्मक कार्य करें। बाल विधवा, परित्यक्ता और दीनहीन बच्चियों को सम्मानपूर्वक जीने की तुमने राह दिखाई थी। उनकी प्रकृति जन्य प्रतिभा को महिला मंच में स्थान देकर निःसहायों को भी ससम्मान जीने की प्रेरणा दी थीं तुमने। अपने पाक कला की हुनर उन ललनाओं को भी बांटा है जिसने कभी उस व्यंजन को देखा नहीं था। तुम्हारे द्वारा बनाए पिड़िया, कुसली, देहरौरी पूरण वाले लड्डू, पपची, खाजा आदि का स्वाद आज भी जीभ में है। बरी, पापड़, बिजौरी और लाई-बरी बनाने की तुम्हारी कला अनुपम थीं। आज भी मुंह में पानी आ जाता है, तुम्हारे आलमारी में रखे नीबू, आम, आंवला, करौंदा, अमेरा, कटहल, जमीकंद, मिर्च आदि के अचार की बरनियों के कतार की कल्पना मात्र से। छत्तीसगढ़ के संस्कृति की संरक्षिका तेरा अभिवादन है।

तू माँ थीं, योगेश, प्रशांत, विनोद, हर्ष और अशोक की तुमने जन्म दिया था। पर तेरी ममता पर इनका एकाधिकार कभी न रहा। पारिवारिक जन के बच्चे ही नहीं मेरे

जैसे अनेकों सड़क छाप जरूरत मंद और सहारे के लिए भटक रहे लोगों को माँ की ममता लुटाने में कभी तुमने कंजूसी नहीं की। तेरा हृदय महासागर था। तेरी वाणी से अमृत झरते थे। आलोचकों और विघ्न संतोषियों के लिए भी कभी तुमको अभिषापित करते नहीं सुना। विदित है कि राह भटके पुत्र को पुर्नजन्म के कर्मों का फल स्वीकार कर सीने से ही लगाया था तुमने। तुमने बेटी नहीं जना था, लेकिन बेटियों का अभाव तुम्हें कभी नहीं रहा। श्रीमती कविता, प्रतिभा, सकुन, रीता और कल्याणी को वहू नहीं बेटी ही स्वीकारा था तुमने। तेरा निश्छल प्यार और अनुशासित दुलार ने वांध रखा था पूरे परिवार को। प्रथम नाती के रूप में "राजा" और नातिन के रूप में 'मिली' के आगमन पर तेरे मर्यादित हर्ष और उत्साह का दर्शन किया है, मैंने जिसे इस छोटे जीवनकाल में कहीं अन्यंत्र नही देखा। ओ माँ तेरी महिमा और यश लिखने के लिए शब्द भण्डार नहीं है मेरे पास। वस तेरी वन्दना ही मेरी पूंजी और सामर्थ है। पुत्रों और पुत्र–वधू का असमय विछोह तू सह नहीं पायी ओर बोधपुंज को सूना छोड़ विदा ले ली इस संसार से। अच्छा की अव मत आना क्योंकि तेरे आने की खुशी से ज्यादा दुखदाई तेरा जाना है। तुम्हें अंतिम प्रणाम है, वार–वार प्रणाम है, हजारों हजार प्रणाम है।



छत्तीसगढ़ वंदना

रामखिलावन

मोर छत्तीसगढ़ महतारी, तोर महिमा हावय भारी ।
हमन करंव गुणगान माय, तोर सुमरे गणेश मुरारी ।।

रंग बासंती तोर पिताम्बर, कोसा के लगे हे धारी ।
शहर गांव के फूल कढ़ाये, शोभा के बलिहारी ।।
नख सिख ले तोर सोन के जेवर, हवय खेत खलिहान ।
चांदी के जेवर नंदिया नरवा, कल-कल पैरी गान ।।

महानदी तोर पांव पखारे, मुकुट बने सतपूड़ा ।
माई नर्यदा माला बन के, उत्तर मां हे मूड़ा ।।
जेवनी हाथ मां धान कटोरा, डेरी मां जोंधरी लाई ।
रतनपुर मां तोर संहासन, वरदानी महामाई ।।

मेकल सिहावा चउंर डोलावै, दल्ली करै गुणगान ।
राजिम, डोगरगढ़, भोरमदेव, शिवरी नारायण महान ।।
बस्तर के दन्तेश्वरी माई, खरौद उऊ मल्हार ।
अमर कंटक तीरथ भारी, गाने तोर शृंगार ।।

बस्तर बालाघाट मंडला, सरगुजा शहडोल ।
राजनांदगांव दुरूग रायपुर, रायगढ़ सीमा मोड़ ।
बीच बसे हे नगर बिलासपुर सबो जगा से न्यारी ।।
चारों युग मा चार नाम से रतनपुर है प्यारी ।।

पांच रतन हैं तोर धरती मां, वन धन बड़े खदान ।
उपजाऊ जमीन जलधारा अऊ मेहनती किसान ।।
अकुत सम्पदा तोर धरती मां, छिपे हवय महतारी ।
लोहा तामा कोइला सिरमिट, सोना चांदी भारी ।।

दुइ करोड़ हे तुमरे लइका, दसो लाख मेहमान ।
करन कमाई मरन भूख हम, रवड़ी खावै आन ।।
हमरे घर मां कोरवा भिलाई, मिलै नहौ मजदूरी ।
काय धाम नई मिलै तो जाथन कुरिया छोड़ के दूरी ।।

आगू बढ़े के रसदा नइहे, बाहर ले आये लुटेरा ।
हमला पनके नई देवय, सब बइठ डहर ला घेरा ।।
अकल दे मइया होई इकट्ठा, लाई सुख के बेरा ।
शोषण अत्याचार मिटा के लाबो सुख के बेरा ।।

संवेदनशील मां का संस्मरण

दिनेश तिवारी
अधिवक्ता
लोहर्सी सोन

पूज्यनीया काकी जी सारे मानव–समाज के लिए करूणा की प्रतिमूर्ति थी। ऐसे मां का अवतरण सदियों में होता है, जिनके पास जीवन का लक्ष्य केवल देना ही होता है। वे आदर्श की एक मूर्ति थी, एक आदर्श कन्या, एक आदर्श पत्नी, एक बहू, आदर्श देवरानी, आदर्श काकी, आदर्श मामी, आदर्श भाई–पतोहू आदि थी।

उनका जन्म ग्राम झुलना (वैतलपुर) में सन् १९१८ के आसपास हुआ। उनके जन्म के समय ग्रह–नक्षत्र देखकर ज्योतिषियों ने उनके पिता स्व. श्री अनंतराम जी पांडेय को बताया था कि आपकी कन्या बहुत भाग्यशाली होगी ओर उससे आपका बड़ा नाम व ख्याति होगी।

स्वर्गीय काकी जी अधिक पढ़ी–लिखी तो नहीं थी, परंतु उनमें मानवीय गुणों का इतना विलक्षण अनुभूतियां थी कि वे एक नजर में देखकर ही समझ जाती थी कि वह आदमी उनके पास क्यों आया है, उसकी क्या समस्या है, वह किन तकलीफों से घिरा है। वे उनके पास जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को अक्षरश: समझ जाती थी व उसके अनुसार ही अपने अनुभव के आधार पर वह उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करती थी।

काकी जी सही मायने में अन्नपूर्णा थी। वे जब तक रही न उसे अन्न का अभाव रहा, न ही संपदा का। उन्हें यह भी मालूम हो जाता था कि उनके पास आनेवाले लोग – कौन खा कर आया है तथा कौन बिना खाए आया है। उन्हें अतिथि सत्कार का बड़ा शौक रहता था। उन्हें आगंतुकों को भोजन कराने में बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे यह भी जानती थी कि हमारे परिवार के सदस्यों की रुचि किस प्रकार के खाने में है, किसे तला हुआ चाहिए, किसे नीबू का आचार चाहिए, और कौन आचार का शौकिन, किसे मिर्च की चटनी बहुत पसंद है।

पाकशास्त्र में इतनी निपुण थी कि उनका कोई मुकाबला न था। सब्जी बनाने में वह माहिर थी। उनका बनाया हुआ खाना खाने का सौभाग्य जिसे मिला होगा, उसे उस मुकाबले का खाना जीवन पर्यंत उपलब्ध नहीं हो पाया होगा।

वह बचपन से ही सामाजिक कार्यों, गृह कार्यों को संपादन करने में अपनी मां, दादी, फूफी आदि का गृह कार्यों में बराबर सहयोग देती रहती थी। ऐसे किसी भी सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होने हेतु वे मेंऊ (पामगढ़) अपने फूफी गजानंद भाई की मां के यहाँ गई थी। वहां के स्वभाव, कार्यकुशलता, सौम्यता देखकर हमारी फूफी (कौशल भाई की मां) मंत्रमुग्ध हो गई। वे जब लोहर्सी आयी, तो अपनी मां, हमारी दादी (भौजी) पिता जी की मां को अपनी पसंद बताई व हमारे छोटे काका (वर्तमान काकाजी) के लिए उसे उचित बताते हुए उसे बहू बनाने की इच्छा व्यक्त किए। भौजी पहले से ही हमारे काकी जी के फूफा की लड़की को गजानंद भाई की बहन (रमन–दुपर) जो लंबरदार घर (लक्ष्मण भाई) के लिए आयी थी, वह भी बड़ी सुशील स्वभाव, लक्ष्मीवती व सरल स्वभाव की थी। वह गृह कार्यों में पूर्ण दक्ष थी। उस समय लोहर्सी में उन्हें (रतनपुर) को ही माना जाता था।

हमारी दादी (भोजी) हमारे पिताजी स्वर्गीय श्री श्याम सुंदर लाल जी तिवारी से जिद करने लगी कि मैं बहू बनाऊंगी व राम गोपाल का विवाह करूंगी, तो वही झुलना में ही करूंगी। उस समय भौजी की बात काटने का साहस हमारे कुटुम्ब के किसी सदस्य में नहीं था। अंत में १९३२ में काकी जी का पाणिग्रहण हमारे काका जी के साथ हो गया। यद्यपि उस समय काकाजी की उम्र १६ वर्ष की थी तथा काकी जी की १५ वर्ष की थी। शारदा एक्ट बड़े भाई प्रभावशाली ढंग से उस समय लागू था। कई लोग जो हमारे कुटुम्ब वे द्वेष रखते थे, वे इस प्रकरण का प्रचार कर इस संबंध को नहीं होने देना चाहते थे। किंतु ईश्वर की अनुकम्पा से यह कार्य संपन्न हो गया।

जब काकी जी का विवाह हुआ, समय हमारे काका जी ९ वीं अंग्रेजी में पढ़ते थे। उस समय का वातावरण ऐसा था कि विवाह के उपरांत पढ़ाई अक्सर समाप्त हो जाती थी। समाज में ऐसे असंख्य उदाहरण मौजूद थे।

किंतु काकाजी के साथ ऐसा नहीं हुआ। काकाजी से विवाह के पश्चात् भी वे कभी उनकी पढ़ाई बंद करने के लिए हतोत्साहित नहीं की, अपितु वे उन्हें पढ़ने तथा यशस्वी बनने हेतु प्रेरणा अवश्य देती रही। अंत में काकाजी बी. ए. व लॉ की उपाधि

पाकर वापस आय । उन्होंने फरवरी १९४२ में वकालत शुरू की । कई कठिनाइयां उनके सामने आयी, जैसे कि किसी भी स्वतंत्र न्यायालय में होता है । काकाजी सर्वप्रथम अग्निहोत्री जी के साथ वकालत किए, फिर वाद में ठाकुर छेदीलाल जी बैरिस्टर के साथ फौजदारी वकालत का काम किए, जो निरंतर बैरिस्टर साहब के जीवन पर्यंत चलता रहा तथा दिवंगत होने के वाद काकाजी उस मुकाम पर पहुंच चुके थे कि वे उत्तरोतर व्यवसाय में, राजनीति में सहकारिता के शिखर पर उत्तरोतर अग्रसर होते गए । उनकी इस उपलब्धि में पूज्यनीया काकी जी की धर्मपरायणता का अधिक योगदान रहा है । काकीजी पूज्य काका जी को सदैव घरेलू झंझटों से मुक्त रखा करती थी । सारे झमेले परिवार के अपने हृदय में छिपा कर काकाजी उन्हें सिर्फ निरंतर आगे प्रगति के लिए देती रही ।

पूज्यनीया काकी जी में अपने– पराए का कोई भेदभाव नहीं था । वह अपने वहू, अपने बेटों को जितना प्यार व महत्व देती थी, उससे अधिक कहीं दूसरों को भी महत्व और प्यार करती थी ।

काकी जी जव से काका जी, के वकालत के पेशे में विलासपुर आए, उनके साथ अपने ३ वच्चों के साथ–साथ, सन् १९४२ में उनके तीन वच्चे थे । ज्येष्ठ के पुत्र सुरेखा चंद, भाई लक्ष्मण प्रसाद, शत्रुघ्न प्रसाद, गेंदलाल, मोतीलाल, व कुछ समय तक हमारे बड़े भाई रमेश चंद भी इनके साथ रहे । उन्हें पूर्ण रूपेण मातृत्व मिला । जिसका साक्षी है कि उन्हें अपना घर तक कभी याद नहीं आते । सन् १९४९–५० में काका जी पांच बच्चों के अलावा कौशल भाई, मन्ना भाई, मैं सुशीला, सुरेश भाई ईत्यादि गरीवराम वैद्यवाले मेन रोड के मकान में रहते थे । उस समय उनके पास नौकर–चाकर का अभाव था, किन्तु फिर भी वे स्वयं सारे गृह कार्य दक्षता पूर्वक करती थी । इसके वावजूद उन दिनों मेहमानों का भी आना–जाना लगा रहता था । मेरे पिताजी स्व. श्यामसुन्दर लाल जी तो अक्सर सप्ताह में दो–तीन वार आ ही जाते थे । काका स्व. मुरली मनोहर, वंशीलाल फूफा, श्याम फूफा रामस्नेही इत्यादि अक्सर आते–जाते ही रहते थे । कभी–कभी गजानन गौरहा, झूलना वाले भी आकर गेंदलाल, मोतीलाल, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, वावूलाल वगैरह आकर रहते थे ।

किंतु काकी जी की यह महानता थी कि वे कभी न नाराज हुए और न ही कभी मैंने यह कहते हुए सुना कि इतने मेहमान हमेशा क्यों आते हैं, मैं तंग आ गई । वल्कि वे प्रतिदिन ५ वजे सवेरे उठ जाती और सवेरे से हम वच्चों को चाय, नास्ता वनाकर देती थी । पिताजी के लिए चाय, काकाजी के लिए चाय–नास्ता आदि तैयार कर लाती थी । ८ से ९

बजे तक स्नान कर लेती थी । नहाते वक्त वे बाथरूम की सफाई भी कर लेती थी । फिर सवा दस बजे तक भोजन तैयार कर बच्चों को भोजन देती थी । काकाजी को कचहरी जाने के लिए तैयार करती थी तथा भोजन आदि करा उन्हें विदा करती थीं । मेहमान व हमारे पिताजी ११.३०–१२ बजे तक भोजन करते थे । जो जैसा भोजन करना चाहते थे, उनके लिए वैसा ही भोजन तैयार करती थी । जबकि उन दिनों न गैस चूल्हा था और न ही स्टोव्ह थे । यह कार्य वह सिर्फ लकड़ी के चूल्हे से ही किया करती थी ।

दो बजे आधी छुट्टी में हम लोग पुनः आते थे । हम लोगों के लिए फिर कुछ न कुछ नास्ता बनाकर रखती थी । साढ़े चार बजे व ५ बजे शाम को चाय फिर रात को ६बजे से ७ बजे तक उनका भोजन तैयार हो जाता था ।

काकी जी का हृदय विशाल था । हर कोई उनके पास कुछ न कुछ लेने आते थे, तथा काकी जो उन्हें सहृदयता से देती थी । किसी को कपड़ा, किसी को बर्तन, किसी को रुपए किसी लड़के की पढ़ाई हेतु नगदी राशि, किसी लड़के को नौकरी समस्या, किसी की फीस की समस्या इन सब समस्याओं का निराकरण काकी जो सहज कर दिया करती थीं । उनके पास दुखी के साथ दुखी, समस्या ग्रस्त के साथ संवेदनशील रहती थी । उनका दिल इतना नम्र था कि किसी को दुखी देखकर द्रवित हो जाती थीं, वह रो पड़ती थी, उनका मन द्रवित हो जाता था । ऐसी महती आत्मा के विषय में इतनी याद आती है कि अगर उसे लिखा जाए तो वह एक महाकाव्य का रूप ले ले । अतः मैं ऐसी ममतामयी माता को हृदय से प्रणाम करते हुए अपनी लेखनी को विराम देता हूँ ।



संस्मरण

स्व. सत्यवती तिवारी के सम्पर्क

डॉ. विमला सुकुमारन
सेवानिवृत्त भारतीय नवसेना,
चिकित्सा अधिकारी, रायपुर

मेरा परिचय सहृदया स्व. सत्यवती तिवारी से १९६२ में हुआ। मैं उस समय दुर्ग से बिलासपुर ट्रेन से होकर गई थी और स्व. डॉ. रमेशचंद्र तिवारी (जो मेरे साथ मेडिकल कॉलेज नागपुर में पढ़े थे और दुर्ग चिकित्सालय में सर्जन थे।) वे मेरा परिचय श्रीमती तिवारी से करवाया था।

मुझे स्व. तिवारी से बहुत ही ज्यादा सहायता मिली। मैं बिलासपुर में अकेले रहती थी। जब भी कोई समस्या आती थी, मैं श्रीमती तिवारी के पास पहुंच जाती और मेरी समस्या का समाधान बहुत उचित तरह से कर देती थी। मै उनके परिवार के सदस्यों की चिकित्सकथी। श्रीमती तिवारी हमेशा हम सब की सहायता करने तत्पर रहती थी। अपनी नाम के अनुरूप सभी कठिनाईयों को दूर करती थी।

स्व. श्रीमती तिवारी के सहयोग के कारण वहाँ अकेली रहती हुई भी किसी प्रकार की कष्ट नहीं होने देती थी। वे बड़ी करूणामयी एवं दृढ़ निश्चयी थी। मुझे उनकी निधन से ऐसी महसूस हुई जैसे घर की मुखिया की छाया सर से हट गया हो। मैं भगवान मे प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आत्मा को सदा शांति दे।

卐 युग महिला वकीलीन मां 卐

(स्व. श्रीमती सत्यवती)

संतोष कुमार दुबे
(ग्राम - धमनी वाले)

वकीलीन मां कहने से एक ममताममी मुस्कुराती हुई अनंत स्नेह का भंडार लिए सुरत दिखाई देने लगती है यद्यपि आज वो हमारे बीच नहीं है। किंतु उनका आदर्श उनका स्नेह हर किसी के लिए समानता का भाव। दात्री माता का मुस्कराता चेहरा दिखाई लगता है। जैसे पारस पत्थर के संपर्क मात्र में आने से लोहा सोना हो जाता है। वैसे ही वकीलीन मां के सामने बैठने से लोग उनके स्नेह से इतना सरा भोर हो जाते थे। कुछ पल के लिए अपने आप को भुला देते थे। मुझे उनके गोद में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। साथ ही अंतिम क्षणों में कांधा भी दिया हूं। इस बोच की पूरी तस्वीर जब सामने उभर कर आती है' तब मानो ऐसे लगता है कि एक देवी स्वरूप युग महिला के बोच में रहने का सौभाग्य मिला। यदि आज हम उनके आदर्शों के रंच मात्र का भी प्रयोग अपने यथार्थ जीवन में करे, तो हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। मैंने आज तक उनके सामने से किसी को खाली हाथ जाते नहीं देखा चाहे वह गरीब हो, अमोर हो चपरासी हो या बड़ा आफिसर, बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ हो या गांव का एकअदना किसान। मां के पास कुछ देने के लिए रहा हो या न हो। लेकिन लोग उनसे मिलने के बाद खाली हाथ नहीं गए यदि माँ के पास कुछ नहीं रहा हो तब भी मां अपने अंजुली में स्नेह भर कर दे देती थीं जो कभी खत्म नहीं होने वाले सम्पत्ति पाकर लोग भाव विभोर हो मां के पास जाते थे।

वकीलन मां में धरती मां जैसे सहन शीलता थी। उनके जीवन काल में उन्हें अनेकों संघर्षों का सामना करना पड़ा बड़े-बड़े दुख उठाने पड़े किन्तु कभी विचलित नहीं हुई।

लोग उनके पास गुस्से से या ईर्ष्या भावना से भी जाते तब भी मां उसे अंजली भरकर प्रेम ही देती।

मां की ममता पर एक कहावत है कि किसी बेटे को किसी ने कहा कि तुम अपनी मां का कलेजा काटकर लाओ तो तुम्हें अपार ऐश्वर्य और सुख की प्राप्ति होगी। तो बेटे ने अपने सुख की प्राप्ति के लिए अपने मां की काटकर उसका कलेजा थाल में लेकर प्रशन्नचित जा रहा था कि अचानक उसे ठोकर लगी तब थाली में कटे उस कलेजे से आवाज आई बेटा चोट तो नहीं आई :"

वाह रे जैसे मां की ममता जो दूसरों के सुख के लिए गम के सागर में सराबोर रहते हुए भी स्नेह वांटती रही। जैसे धरती मां पापियों अत्याचारियों और महात्माओं को समान प्रेम देती है। वैसे ही धरती मां स्वरुप वकीलीन मां सवको समान भाव से स्नेह देती थी ऐसी मां युगों में पैदा होती है। ऐसे विलक्षा महिला के वारे में सुनने को मिलता था लेकिन हमें उनके समीप रहने का गौरव प्राप्त हुआ।

वकीलीन मां वच्चों और वहुओं के लिए ममता स्वरूप थी, तो श्री रामगोपाल जी तिवारी (वावाजी) के लिए एक आदर्श पत्नी थी। समाज के लिए दुखियों की दाता असहायों के लिए भी जव तक मां जीवित थी। लोगों को खुशी वांटती रही। जव मां संसार से विदा हुई मैं वहां उपस्थित सभी लोगों के आंखों में आंशु देखा। कहते हैं मर्द रोते नहीं लेकिन मां ने उसे झुठला दिया, औरत हो वच्चे हो बुढ़े हो जवान हो मैंने हर किसी के आंखें में आंशु देखा। क्योंकि एक वच्चे के लिए मां सव कुछ होती है। वच्चा सव कुछ सकता है। किन्तु मां को नहीं छोड़ता मां को छोड़ने पर वच्चों को अपार पीड़ा होती है। और वह रोने लगता है। ऐसे ही मां की अंतिम यात्रा पर सभी के आंखों में आंशू थे जो कह रहे थे। मां हमें छोड़कर मत जाओ हमें स्नेह कौन देगा। ऐसी ममतामयी वकीलीन मां को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।



मां

–डा. प्रमोदकुमार पाण्डेय

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्रीमती तिवारी जी की यादगार में एक स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है. उन्हें हम प्यार से "मां" कहकर पुकारते थे । सही अर्थों में ककाजी की सफलता का एक बहुत बड़ा श्रेय मां को जाता है । वे सारे परिवार को एक सूत्र में पिरोकर रखती थी । सभी अतिथियों एवं अभ्यागतों का स्वागत सत्कार का दायित्व भी मां पर था । ककाजी ज्यादातर अपनी वकालत, राजनैतिक कार्यकलापों एवं सहकारी संस्थाओं के कार्यकलापों में व्यस्त रहते थे और इसलिए घर का सारा भार मां को ही उठाना पड़ता था । वे इस कला में दक्ष थी और उन्होंने किसी को यह महसूस होने नहीं दिया कि ककाजी इतने व्यस्त हैं । चाय पानी से लेकर भोजन एवं आवास तक का ख्याल उन्होंने हर अभ्यागत का रखा ।

वे एक भरेपूरे परिवार की पुत्री थीं और भरे पुरे परिवार में बहू बनकर आयी । उनके प्रवेश मात्र से परिवार धन्य धन्य और खुशियों से भर उठा । उन्होंने पांच पुत्र रत्नों का उपहार अपने परिवार को दिया । उनका हृदय नवनीत की तरह कोमल और इच्छा शक्ति वज्र की तरह कठोर थी । परिश्रय और जीवट उनका स्वभाव था । जीवन को वे कर्मभूमि मानती थी । उनकी वाणी मृदु और सारगर्भित थी । चेहरे पर हमेशा एक मधुर शांत मुस्कान व्याप्त रहती थी । अपने कर्तव्यों के पालन में वे अत्यंत सजग थी ।

मेरा सम्पर्क मां से बहुत बचपन में हुआ था । उन दिनों मैं उन्हें ममता की मुर्ति के रूप में देखता था । उन्हें हमेशा छोटी–छोटी बातों का बहुत अधिक ध्यान रहता था । उदा–हरण के लिए अपने विवाह के बाद जब पहली बार मैं उनसे सपत्नीक मिलने गया तो उन्होंने एक कोसे की साड़ी उपहार स्वरूप भेंट की । ऐसा न जाने कितने इष्ट मित्रों और सम्बन्धियों का वे अन्तर्मन से ध्यान रखती थी । विवाह में साड़ी देना,पुत्र जन्म पर बधाई के रुपये भेजना, त्यौहारों एवं विशेष पर्वों पर रीति रिवाजों का निर्वाह करना आदि कार्यों का उन्हें हमेशा ध्यान रहता था । वे वस्तुत: लक्ष्मी स्वरूपा थी । उनकी उपस्थिति मात्र से ऐसा लगता था कि घर भरा पूरा है । नौकर से लेकर ड्राईवर तक का वे सदैव ध्यान रखती थी और उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को हमेशा पूरा करने का प्रयास करती थी । उनके असामयिक निधन से न केवल परिवार की क्षति हुई है बल्कि उन सभी इष्ट मित्रों, शुभचिंतकों और आने जाने वालों को सूनेपन का आभास हो रहा है । ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे और उनका अदृश्य आशीर्वाद परिवार पर सदा बना रहे ।

★

ममतामयी माँ

संग्राम सिंह अहीर
मु. जेवरा (पामगढ़)

जब मैं सन् १९७४-७५ में जेवरा के खेती का काम करते करवाता था तब जेवरा से बिलासपुर आना जाना होता था ।

तब से पुज्य माँ को दर्शन होते रहे । पुज्य माँ जी दीन दुखियों के ऊपर सहानुभूति सदैव रखती थी । जब - जब कोई आदमी पुज्य माँ जी से अपने सुख दुख के समय में कुछ मांगता था तो अवश्य जाना ही उन्हें स्मया पैसा कपड़ा लत्ता जैसा जिसे सामान की जरूरत पड़ती थी जरूरत मिलता था । पुज्य माँ जी कमी भी किसी को निराश नहीं लौटाई ।

एक दिन की बात है आचार बनाने के लिए आम को सरोता से काटने के लिए मुझे कहा गया तब मैं सरोता से आम काट रहा था उसी समय सरोता से मेरी अंगुठी थोड़ी से कट गयी मां जी को पता चला वह तुरन्त मेरे पास का गई और कहने लगी "अंगुली ल कैसे काट डारे" और मुझे दवाई कराने के लिए उस दिन उनने ५० रु दिये ।

भिखारियों के ऊपर तो जी जान से मदद करती थी । बड़ी दुख की घड़ी है पुज्य माँ आज हमारे बीच नदी है लेकिन ऐसा लगता है कि माँ हमारे नजरों के सामने दिन रात दिखाई दे रहीं है एवं साक्षात देवी का स्म धर कर हमे हर - पल मदद (सहायता) कर रहीं है । ऐसी देवी स्वस्म माँ को कमी भी नहीं भुलाया जा सकता है ।

स्वर्गीया श्रीमती मां सत्यवती तिवारी जी



का

जीवन-परिचय

माँ
की अनकही कहानी
बेटे
हर्ष की जुबानी
नई नहीं
कहनी है
सब यादें हैं, पुरानी ।

१९९० का वह दिन, सुबह से ही लग रहा था कि कुछ ठीक नहीं होने वाला है। ऐसा लगता था कि कुछ छूट रहा है, कुछ टूट रहा है, दूरियां बढ़ रही है, समय टूट रहा है।

फिर हमें पूर्वाभास का प्रमाण मिला। बिलासपुर से अशोक का टेलीफोन आया मां अचेत है, सुबह बाथरुम में गिरी और अचेत हो गई। तुरंत परिवार के डाक्टर, मिशन अस्पताल के डाक्टर एम. के. बनर्जी को बुलाया गया। ब्रेन हेमरेज की संभावना दिख रही थी। अचेतावस्था का और कोई कारण नहीं लगता था। काकाजी सुनते ही गुमसुम हो गए। मुझे निर्देश था, तुरंत भिलाई स्टील प्लांट के बड़े अस्पताल में ब्रेन विशेषज्ञों को पूर्व सूचना देने की तैयारी कर ली जाय। मैं शीघ्र ही एक टेक्सी किराए पर ले मन्ना भाई, भाभी एवं रीता को साथ ले भिलाई अस्पताल की ओर निकल गया और वहां पहुंचते ही आपात कक्ष के डाक्टरों एवं भिलाई अस्पताल के डाईरेक्टर डा. आर. जे. चौबे को जो हमारी मां के समधी भी है, से मां के ब्रेन हेमरेज मे अचेत अवस्था में आने की पूर्व सूचना दे प्रतीक्षा में बैठा रहा।

उनके अचेतावस्था के कारणों की विस्तृत जानकारी भी नहीं थी, अनागत की शंकाओं एवं कुशंकाओं का ताना–बान बुनते उधेड़ते समय कट रहा था। मां की याद आती जाती थी, लगता था काले बादलों को सूर्य की किरण चिर कर मुझ तक पहुंचना चाहती हो। कभी–कभी प्रतीक्षा के समय भी काटे नहीं कटते। लगा, समय भी फैलते सिकुड़ते और टूटते–फूटते भी हैं। मन की वृत्ति, समय को वृत्ति के अनुरूप ही लगने लगता है।

अस्पताल के परिसर में ३–४ घंटे प्रतीक्षा के बाद लगा मां को अब तक तो भिलाई पहुंच जाना था, अब तक कैसे नहीं पहुंची। बिलासपुर फिर फोन लगाया। काकाजी का निर्देश मिला मां म. प्र. शासन के विशेष वायुयान से जबलपुर ले जाई जा रही है, वहां के मेडिकल कालेज में परीक्षण हेतु। मुझे बिलासपुर रवाना होने के लिए कहा गया।

महाप्रयाण की तैयारी

उन दिनों जबलपुर मेडिकल कालेज में मस्तिक के डाक्टरों का राष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा था। डा. बनर्जी ने सुझाव दिया कि यदि तत्काल मां को वहां पहुंचाया जा सके, तो देशभर के विशेषज्ञों की डॉक्टरी सलाह मिल जाएगी। उस समय म. प्र. के मुख्यमंत्री श्री श्यामाचरण जी शुक्ल थे। केवल वायुयान से ही कम से कम समय में मां को डॉक्टरी परीक्षण हेतु जबलपुर पहुंचाया जा सकता था। डा. बनर्जी मां को बहुत मानते थे, उनकी पत्नी जो विदेशी थी, वह भी मां को बहुत मानती तथा आदर करती थी। वह हिन्दू त्यौहारों पर

अवश्य मां से मिलने आती थी । मां भी उन्हें बहू की तरह अन्य सामग्री के साथ कोसे की साड़ी दिया करती थीं । मिशन अस्पताल में प्राय: हमारे घर के अनेक सदस्यों को अस्वथ्य होने पर डॉ. द्वारा विशेष सुविधा मिलता था । यहां तक कि मां के पिताजी याने हमारे नाना जी भी इन्हीं के अस्पताल में अंतिम समय पर थे ।

अत: डॉ. वनर्जी ऐसा कोई अवसर खोना नहीं चाहते थे, जिससे उन्हें लगे कि मां के लिए कोई चिकित्सीय व्यवस्था अधूरी रहीं । वे भी मां को मां ही कहा करते थे । उसने ही मुख्यमंत्री श्री श्यामाचरण शुक्ल से फोन करवा म. प्र. शासन के वायुयान की व्यवस्था करवाई । शुक्ल जो भी तुरंत इस पर सहमत हुए तथा सूचना दी कि मां को जवलपुर पहुंचाने वे हवाई जहाज भेज रहे हैं । पर जवलपुर की हवाई यात्रा उनकी अंतिम महाप्रयाण की यात्रा सिद्ध हुई । शायद तपस्विनी नदी नर्मदा के तट पर ही जवलपुर में प्राण त्यागने उनका अवोषित संकल्प रहा हो ।

जवलपुर में मां के साथ गई थी हमारी भतीजी कीर्ति और वकीलीन भाभी । शाम को वे उस दिन जवलपुर पहुंच पायी थी । न्यूरोलाजिस्ट एवं विशेषज्ञ डॉक्टरों का जवलपुर के मेडिकल कालेज में परिसंवाद चल ही रहा था । उनके एक अन्य कार्यक्रम के वाद विशेषज्ञ डाक्टरों का उनका परीक्षण तय था । पर मां इसके पहले ही रात्रि करीव ८ वजे अपनी अंतिम महायात्रा में निकल पड़ी ।

रात को ही यह सूचना विलासपुर पहुंच गई । लगा वोधपुंज का पावर हाऊस फेल हो गया, जैसे ब्लेकआउट में अंधेरा छा जाता है । सुवह यह खवर विलासपुर में सर्वत्र आग की तरह फैल गई, जिन्हें भी मां की करूणा, सहृदयता का परिचय उनके जीवन में कहीं भी, कभी भी हुआ था, उनके अवसान की सूचना से उद्वेलित हो गए । सुवह से लोगों का आना शुरू हो गया और शोक–संवेदना देने का तांता लग गया । सभी वर्ग के स्त्री–पुरुष उनके अवसान की सूचना पाकर बोधपुंज की तरफ खींचते चले आए ।

उनकी इच्छा मृत्यु-

मुझे अच्छी तरह याद है कि मां एक वार नहीं कई वार कहा करती थी । मेरे सामने, घर के लोगों के सामने जव भी वे पारिवारिक ग्लानि में भर जाती थीं, असहाय हो जाती थी, वे कहती थी – "अव मोर एके इच्छा वांचे हे, तोर काकाजी के सामने म ही चल देतेंव, औ मैं कभी वीमार पड़ के नहीं मरतें, मैं नइ चाहौं ककरो सेवा सुश्रुषा

मोला ले वर पड़ै ।" उनकी यह इच्छा–मृत्यु शब्दशः स्वयं सिद्ध हुई । एक भारतीय नारी की "सदासुहागिन भव' का आशीर्वाद ही उनके जीवन की अंतिम इच्छा बन जाती है और मां का सुहागिन के रूप में ही जाने की अंतिम इच्छा पूरी हुई । पर उनकी इच्छा मृत्यु की दूसरी कड़ी भी ज्यादा महत्वपूर्ण थी । वह थी कि वह बीमार होकर, दूसरों की सेवा लेकर न मरूं । यह उनके जनसेवा, समाजसेवा की उस बुनियादी दर्शन से उपजती है, जहाँ वे मरते समय भी परवश या दूसरों की सेवा पर आश्रित नहीं रहना चाहती थी, भले ही उन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के कल्याण में लगा दिया – याने दिया, पर वापस लेने की इच्छा लिए बिना दिया ।

११–१२ बजे विशेष एम्बुलेंस से मां का शव जबलपुर से बिलासपुर लाया गया । बोधपुंज उस दिन आंसुओं से गीला हो चुका था । घर का कोई कोना बचा नहीं था, जहां लोगों के शोक संवेदना के हस्ताक्षर न हो । सामने भी सड़के, गलियां भी शोकाकुल लोगों के शोक–संतप्त चेहरे से भरा हुआ था । न जाने कब मां की संवेदनशीलता के मानवीय तंत्र ने भी सभी के दिलों को कभी कहीं छुआ था, सहलाया था और अपनी स्मृति बनाई थीं । गरीब से गरीब, अमीर से अमीर सब रिश्तेदार, राजनीतिज्ञ, प्रेस वाले, मुहल्ले वाले महिलाएं – यह कहना कठिन था कि किस वर्ग के लोगों का उनकी अंतिम यात्रा में प्रतिनिधित्व नहीं था । क्रंदन आंसू, सिसकियां, बुझते चेहरों, खामोश निगाहों का बोधपुंज में उस दिन पड़ाव लग गया था, जैसे किसी के जाने से बोधपुंज में संवेदना का उफान ला खड़ा किया हो ।

बोधपुंज कुम्हार पारा से जूना बिलासपुर मेन रोड, फिर दयालबंद मेन रोड गव–र्नमेंट स्कूल के कोने से अरपा के तट पर श्मसानघाट के राह तक भी शवयात्रा की भीड़ देख लोग ठिठक जाते कि जननेता की यह शवयात्रा है । पर थी तो वह मां की, जो जननेता तो नहीं, पर जननेता की पत्नी थी, जो सहृदयता एवं करूणा में, सामाजिक कार्य क्षेत्र में अपने पति से कहीं आगे थी ।

दाहक्रिया के चलते श्मशान घाट में ही शोक सभा संपन्न हुई । सभी वर्ग के प्रतिनिधियों ने एक स्वर से माँ की दया, समाजसेवी भावनाओं, गरीबों एवं जरुरतमंदों की मदद में, उन्होंने अपने अनुभव के संस्मरण बताए और मां को अंतिम विदाई दी ।

इधर बोधपुंज क्रांतिहीन, विषादग्रस्त, दिन में भी अंधेरा–सा दिख रहा था, जैसे बिना पूर्णचंद्र का रात होता है ।

पर यह तो मनुष्य जीवन का अनवरत क्रम है, अपने जीने का। मनुष्य जीता है जाने के बाद दूसरों की याददास्त में, दिलों में, कृतियों में या उन मूल्यों में भी जिसे जीते जी किसी ने जिया हो ऐसे होअमरत्व की तलाश आदमी अपने जीते जी करता है और समाज सेवा, दया, करुणा, पर दुख कातरता, पर हित और गांधी जी के "वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाने रे" की जीते हैं, फिर अमर हो जाते हैं, क्योंकि इन्हीं मूल्यों को जीने वाले इस दुनिया के क्रम में कोई तो होते ही हैं ।

जब तक वे लोग जीवित हैं, जो मां के संपर्क में आए थे, उनकी स्मृति के एक अंश बन गए, उनकी उस स्मृति के साथ जीवित हैं। उन शाश्वत मूल्यों के साथ जीवन दर्शन समाज दर्शन के साथ जिसे कभी रामकृष्ण, ईसा, पैगम्बर, सीता–सावित्री, गाँधी एवं विनोबा ने जीया । कोई छोटे अंश में या कोई बड़े अंश में जिसे ग्रहण किया। यही तो आत्मा के अमरत्व का शाश्वत नियम है, जिनके जीवन–आदर्श की चर्चा लोगों की जबान पर रहती है।

तीसरे दिन मां के पुष्प लिए हम, मन्ना भाई और पुटपुरा वाले के साथ अवशिष्ट राख विसर्जन हेतु प्रयागराज निकल पड़े। टैक्सी से अमरकंटक के रास्ते, बिना कहीं रुके, रींवा के रास्ते से होते हुए दूसरे दिन १०–११ बजे हम लोग इलाहाबाद पहुंचे । हम लोगों ने पारिवारिक पण्डे का पता लगाया। उनके यहां ठहरे और उसी दिन अस्थि विसर्जन तथा मां के अवसान के अन्य पिंडदान आदि के कर्मकांड कर रात को ही वापस लौटने का कार्यक्रम बनाया । उस दिन गंगा–यमुना एवं सरस्वती की धाराएं तट से सिकुड़ गई दिखी। देश भर के अनेक क्षेत्रों से पंडित, पुजारी, श्रद्धालु हिन्दू, हजारों की संख्या में यहां पहुंचे रहते हैं तथा अपने धर्म ग्रंथ के अनुरूप आचरण करने कटिबद्ध हो कर कम से कम अपने संबंधी दिवंगत आत्मा की अंतिम क्रिया संपन्न करते हैं।

बिलासपुर से इलाहाबाद की रोड से यह यात्रा मेरे लिए चिरस्मरणीय थी। उन दिनों उत्तर प्रदेश के रास्ते के उन परिक्षेत्रों के बीच गुजरना, जो रींवा एवं इलाहाबाद के बीच में पड़ता है, खतरनाक माना जाता है। पर हम क्या सोते, क्या जागते, मां की याद में मां को आद्योपरांत याद करते प्रयागराज १०–११ बजे तक पहुंच गए। उस रात भर में मां का पूरा जीवन वृतांत जो मानस पटल पर आदि से अंत तक उभरकर मेरी स्मृति का एक अंश बन गया वह निम्नानुसार है।

मां के पूर्वज खैरा गांव के मालगुजार थे । उनके पिता श्री अनंतराम पाण्डे, अपने परिवार के इकलौते एवं विलक्षण धर्मपरायण व्यक्तित्व के थे । पारिवारिक कलह के कारण उसने अपने पूवर्जों की जगह छोड़ दी एवं अपने हिस्से में बैतलपुर के पास स्थित झुलना नामक गांव की करीब १५० एकड़ कृषि जमीन एवं संपत्ति तथा मालगुजारी, तथा टेमरी के पास टोंहड़ी गांव की १००–५० एकड़ कृषि जमीन खरीदी । झुलना में वे अकेले ब्राह्मण परिवार थे । अपने मुख्तियार के रूप में उनके एक ब्राह्मण परिवार को स्वयं की कृषि जमीन देकर वसाया । वे नाम से रामशरण तिवारी थे । ६ फीट से ऊंचे छोटे घोड़े की सवारी करते थे । तथा उसी से उनका मालगुजारी काम निपटाते । झुलना से जूना विलासपुर अपने घोड़े में आते–जाते थे । उम्र में हमारे नाना से १५–२० साल वड़े थे, पर अच्छे ग्रामीण प्रशासक थे, मां पर उनका वड़ा स्नेह था ।

हमारे नाना का व्यक्तित्व वड़ा विलक्षण था । हमारी मां सत्यवती उनकी पहली संतान थी । हमारी मां का ननिहाल गनियारी के पास विलटुकरी गांव था तथा उनके नाना भी कट्टर ब्राह्मण एवं सामाजिक प्रतिष्ठा संपन्न थे । मां के तीन मामा थे, ये लोग मां को विशेष सम्मान देते थे । मां अपनी छोटी वहन को वहुत प्यार करती थी । मां के पिताजी श्री अनंतराम जी पांडे का उल्लेख विशिष्ट है । उनके व्यक्तित्व की छाप उनके अन्य वच्चों की तुलना में मां पर विशेष रूप से पड़ी थी । गांव में लोग उन्हें गौंटिया ही कहते थे । जितने श्रद्धा उन पर गांव वालों को करते हुए मैंने देखा, अन्य कहीं दूसरे गांव में ब्राह्मण मालगुजारों का मैंने नहीं देखा । इससे उनकी धार्मिक परायणता, अत्यंत आत्मोन्मुखी स्वभाव दूसरों के दुःख–सुख में भागीदारी की स्वाभाविक विशिष्टता थी । वे अपने घर के वाहर एक अन्य छोटे से निवास में रहते थे । तथा साथ के कमरे में कोई न कोई साधू–संन्यासी, ब्राह्मण वैरागी की आवासीय व्यवस्था चौमासा या अन्य ऋतुओं में किया करते थे । घंटों पूजा–पाठ, जप–तप, चंदन–वंदन उनका दैनिक अपरिहार्य कार्यक्रम रहता था । वहुत कम सुनना उनकी आदत थी । वे ऊंचा भी सुनते थे, जिससे एक नई दार्शनिकता को उनमें जन्म दिया था । घर में भी वे अपनी मां, अपनी पत्नी या हमारी नानी, हमारी मां तथा अन्य वच्चों से या परिवार जनों से वहुत कम वात करते थे । दूसरी ओर नानी हमारी वहुत व्यवहारिक, मधुर एवं विनोदी स्वभाव की थी । मां इन दोनों के स्वभावों का अभूतपूर्व मिश्रण थी । सवसे वड़ी लड़की के रूप में माँ जन्म १९१८ में बैशाख शुक्ल नवमी के दिन हुआ । यह जन्म तिथि जो मां को वाद में स्वयं याद नहीं थी मैंने कैसे मालूम की वाद में लिखूगा ।

मां का नाम सत्यवती, नाना के किस सोच की उपज थी, यह सोच पाना कठिन है । पर सत्य से संबंधित नाम सत्य पर आस्था एवं विश्वास वाले व्यक्ति ही रख सकता है,

यह तो स्पष्ट है । मां की दादी बहुत सफ़ाई पंसद थी, पर असक्त होने पर भी अपना भोजन अलग बनाती थी । मां पर उनका विशेष प्यार था, घर की पहली संतान होने के नाते मां को अपने घर तथा गांव ननिहाल में विशेष आदर प्यार सत्कार मिला । पर इस वरीयता, सहज आदर एवं प्यार से मां में दर्प नहीं, दया का प्रादुर्भाव हुआ, जो अनोखा था ।

हमारे नाना का घर झुलना में बहुत विस्तृत था । तीन बड़े खंड, उनके स्वयं का निवास था चौथा खंड तथा अतिथिगृह का पांचवा खंड, गांव में धार्मिक अनुष्ठानों, रामायण भागवत आदि के कार्यक्रमों में उनका विशिष्ट योगदान रहता था तथा गांव के इस धार्मिक परिवेश का मां के बाल्यकाल पर गहरा असर अवश्य हुआ था । मुझे स्पष्ट याद है कि गांव में ग्रामीण कलाकारों से रामायण एवं गीता-भागवत के अनेक भित्ति-चित्र उनके घरों में चित्रित हुए बचपन में मैंने देखा है ।

वहीं दूसरी ओर की सबसे बड़ी लड़की होने के कारण मां के पाठशाला जाने से छुट्टी मिल गई । उन्हें उनकी दादी के निर्देश से स्कूली शिक्षा से अलग रखा गया । शायद सहशिक्षा वर्जित था । तथा स्कूल उनके गांव में नहीं, गांव से ३–४ किलोमीटर दूर चक्रवाय नामक गांव में था । उनके पिता घर में उन्हें पढ़ाने शिक्षक नियुक्त किए थे । उनके प्राथमिक शिक्षा की यह बुनियाद उनके भावी जीवन में केवल काकाजी को पत्र लिखने, समाचार पढ़ने था धार्मिक ग्रंथ पढ़ने तक सीमित था । बचपन में किसी ने मां को एक ग्रंथ का बरगद वृक्ष के नीचे पढ़ना श्रेष्ठ बताया । बहुत दिनों तक उसने बचपन में यह क्रम अपनाया ।

गांव में दो तीन तालाब थे । बचपन में मां ने तैरना सीखा था । काकी जी ने तैरना नहीं सीखा था, मां ने इसी संदर्भ में शादी के बाद काका जी को कहा – मजाक में मैं आपको तैरकर पार लगा दुंगी, जब भी आप मझदार में पड़ेंगे । उनका मजाक सच भी था ।

मां बचपन से ही अमीर–गरीब, तथा जात–पात के भेदभाव को बिना सामने रखे, अपनी सहेलियां बनाती थी, जो आखिर तक उसी भाव से उनके संबंधों में रहे । एक ओर पास के गांव के मारो के मंहत की लड़की उनकी सहेली थी दूसरी ओर उनके मुखियार की लड़की थी । अपने मुखियार को भी वे तिवारी बड़ा ही कहा करती थी ।

पूरे झुलना गाँव में उनका, घर और बाहर एक नाम था बड़े नोनी । मां, पिता, भाई, नौकर–चाकर, सब रिश्तेदार उन्हें 'बड़े नोनी' ही कहा करते थे तथा इसी 'बड़े' उपसर्ग की निरंतर प्रतिध्वनि ने उन्हें तो बड़ा बना दिया, पर उनके भाई जो बड़े बाबू कहलाए, उन्हें बड़े बाबू से ही रिटायर होना पड़ा ।

बचपन से बड़े होने तक मां का जीवन निर्विवाद रहा। विवाद से वे बहुत दूर रहती, उनके ऊपर भी कोई कठिनाई आए, तब भी विवाद को वे टाल देती। इसी चारित्रिक विशेषता के कारण वे 'यदा जीवेत, निर्विवाद जिवेत' रही तथा स्वभाव की उनकी सौम्यता, क्रियाशीलता, समर्पण तथा जिम्मेदारी संयुक्त परिवार की आधार पृष्ठभूमि तैयार करती रही तथा समवयस्क–बड़े बुजुर्गो में उनकी तारीफ फैलने लगी।

मां विवाह योग्य होने लगी। नाना के बहिन का ब्याह मेउ के मालगुजार परिवार में हुआ था, जिनकी एकलौती लड़की का विवाह लोहर्सी के लंबरदार परिवार में हुआ। इस तरह विवाह योग्य होने पर खानदान एवं स्वभाव की विशेषता माँ की, हमारे पिता के गांव लोहर्सी भी पहुंच गई, हमारी दादी के कानों तक। हमारी दादी मां की स्वाभाविक गुणों को सुनकर, उनकी सहनशीलता की बात सुन बहुत प्रभावित हुई थी। विवाह संदेश झुलना से लोहर्सी पहुंचाया गया। कुछ रिश्तेदार टाल– मटोल कर रहे थे। दादी ने अंतिम निर्णय जारी कर दिया रामगोपाल की शादी होगी तो झुलना में ही होगी। संदेशवाहकों को उनने आदेश दे दिया जाओ कह दो, शादी की तैयारी करें।

मां की शादी के संदर्भ में दो–तीन बातें ही मुझे बताई थी, जो अब तक मुझे याद है। पहला तो यह कि उन दिनों बरात बैलगाड़ियों में जाया करती थी। काकाजी घोड़े में आए थे। लौटते समय विदा के बाद की यात्रा रात में घिरे बादलों के बीच, पूरा अंधेरा था। सड़कों के रास्ते भी बराती गाड़ियों को बिजली चमकने–कौंधने पर ही आभासित होते थे। शायद यह पूर्व सूचना थी। मां के एक संयुक्त परिवार की वधु बन कर प्रवेश हेतु त्याग– तपस्या तथा सहनशीलता के परीक्षण का। आजकल तो लोग कार भी शादी में दहेज दे देते हैं, उस समय मां के घर वालों ने दहेज में बैलगाड़ी दी, जिसका उल्लेख एक दूसरी किताब में काकाजी के कालेज की फीस पटाने के संदर्भ में भी आया है।



'बड़ी मां का बड़प्पन'

प्रफुल्ल
हेडमास्टर, बिलासपुर

वे अपने नाम 'सत्यवती' को अपने कर्म जीवन दर्शन से अर्थ देने में सफल रहीं। एक भारतीय नारी के सभी आयामों को उन्होंने सत्यार्थ दिया। एक बेटी के रूप में, बहन के रूप में, पत्नी के रूप में, एक बड़े कुल की वहु के रूप में, मां के रूप में, सास के रूप में, एक समाज सेवी महिला के रूप में उन्होने एक आदर्श स्थापित किया।

हिमांचल प्रदेश का वह रसोइया, दिल्ली का कार ड्राइवर, झुलना की मती रौताइन, विधायक, मंत्री सभी के लिये वह वड़ी मां, या बड़ी नोनी थी।

जहां नारियां अपने स्वभावगत कृपणता के कारण आलोच्य होती हैं, वही वड़ी मां की उदारता, विस्तृत मातृछाया में मैंने बड़े नामी व्यक्तित्वों को समर्पित होते देखा।

दशहरे की शाम हम सभी उन्हें सोनपान देते थे। वे हमें एक रुपये का सिक्का देती थीं, कुछ खिलाती थीं। हम लोग एक ही उम्र के बड़ी संख्या में होते थे। उनका सभी के प्रति एक समान व्यवहार होता था।

मेरी दादी का वह वहुत ख्याल रखती थी। वड़ा को (श्री तिवारीजी) और वड़े भैया (स्व. योगेश तिवारी) को हर दशहरा में उनसे मिलने भेजती थी।

हर अभाव ग्रस्त के लिये, हर दीन निर्बल के लिये वे वड़ी मां थी। सामाजिकता का निर्वाह करना कोई इनसे सीखे। पूरे ब्राह्मण समाज और अन्य समाज को बांधकर रखा। पूरे समाज में यह कहीं देखने को नहीं मिलता।

किसी की दीनता या हीनता को उन्होंने कभी नहीं माना। अपने पराये का भेद उन पर कभी नहीं आया। वे अजात शत्रु थीं। मैंने कभी किसी की आलोचना या निन्दा करते उन्हें नहीं सुना।

छत्तीसगढ़ी बोली में ही आशीर्वचन देती थीं-एंहवाती हौ, सदासुहागिन हौ, पुत्रवती हौ।—उनका कर्म, उनका जीवन दर्शन वहुत ऊंचा था।

हम पुनरागमन पर विश्वास करते हैं। उनका पुनरागमन हो चुका है। प्रभु यही मांगता हूँ कि मरने के वाद फिर जन्म लूं तो फिर मां का सम्बंधी वनूं।

★

विवाहोउपरान्ते कर्म क्षेत्र

लोहर्सी का तिवारी परिवार अपने आप में बहुत बड़ा भरापूरा परिवार पिछले १५० वर्षों से है । सभी हिस्सेदारों के घर एक दुसरे से लगे हैं। छत्तीसगढ़ के अनेक ब्राम्हण परिवारों की बहुयें या तो उस परिवार में आई या यहां की लड़कियां वहां ब्याही गई । एक अलग पहचान यहां के संबंधों का है और बड़ा कठिन है इतने बड़े परिवार में एक नई बहु का सभी का दिल जीतना, अपने सौम्य निर्विवाद व्यक्तित्व का छाप छोड़ना । इसकी शुरुआत होती है हमारे लोहर्सी के संयुक्त परिवार से ही । उस घर में छोटी बहु के रुप में वे प्रशंसित रही कर्तव्यनिष्ठ रहीं, निर्विवाद रहीं ।

विवाह के समय ककाजी की उम्र १५ वर्ष तथा माँ की १४ वर्ष थी उस समय की रीति के अनुसार उनका गौना या द्विरागमन भी हुआ जो बहुत रोचक था ।

सास के रुप में माँ को हमारी दादी मिली जो पुरे गांव में अपने रोबीले व्यक्तित्व के कारण अपनी अलग पहचान बना रखी थी । हमारी दादी बोध कुंवर, सारंगढ़, बेहार परिवार की एकलौती संतान थी इसलिए स्वभाव से कठिन तथा उग्र रही । ककाजी पर उनका पूर्ण अधिकार था अपने दोनों बड़े लड़कों की तुलना में तथा ककाजी की उन पर अगाध श्रद्धा । माँ ने उनके इन संबंधों को उनके परिवार में एक उदार सहनशील बहू के रुप में मजबूत ही किया कमजोर नहीं । कभी सास की बातों में वे रो डालती पर आजीवन उनके प्रति अपने कर्तव्य में वे कभी चूकी नहीं कभी विमुख नहीं हुई । अंततः माँ हमारी दादी का भी दिल जीत सकीं । जिसने अपने पुरे जीवन में हमारी दो फूफू, ककाजी के अतिरिक्त किसी अन्य को कभी पसंद नहीं किया । मैंने उन्हें लोहरसी गांव के जिस कमरे में आजीवन देखा पूर्णतया अकेली रहती अपना भोजन आदि भी अलग ही बनाती । उनके जैसे कठिन व्यक्तित्व के मन को जीतना मैं माँ के पारिवारिक जीवन की बड़ी सफलता मानता हूँ । माँ ने ककाजी के दोनों बहनों तथा दोनों भाइयों के आदर सत्कार में कभी कोई कमी नहीं आने दी चाहे वे लोहर्सी में हों या बिलासपुर में।

बहु और सास के रिश्ते या रिश्तों की कसौटी

स्कूली शिक्षा के काल में ही विवाह हो जाने से ककाजी एवं माँ का गृहस्थ जीवन प्रायः १९४२ तक मिलन एवं विछोह का था । बिलासपुर के हाईस्कूल की पढ़ाई के बाद ककाजी स्नातक की पढ़ाई राबर्टसन

वे केवल अपने पुत्रों की ही माँ नहीं रहीं ऐसा भी समय आया जब अपनी सास, माता पिता, बहन, भाई के लिए भी उन्हें माँ की भूमिका निभानी पड़ी । उनकी माँ का संसार बड़ा विस्तृत था उसमें सब समाहित थे एक भिखारी से लेकर राजनेता उच्च अधिकारी तक वही भूमिका आपने आजीवन निभाई और वहीं उनकी सबसे बड़ी सफलता थी उनका मापदंड था । धरती की तरह उदार हृदया सहनशील कल्याणकारी वे जीवन पर्यंत अपने ही बच्चों के लिए ही नहीं, नाती पोतों एवं रिश्तेदारों के लिए ही नहीं जो भी उनके संपर्क में आया सबके लिए वे रही । जो जितनी अधिक तकलीफ में होता वे उसकी उतनी ही करीब उतनी ही बड़ी मां वे बनती । दानवीरता उनके जीवन का अंग था ।

माँ की उदारता एवं दानवीरता विलक्षण रूप में थे तथा बिना उजागर किये गरीबों, जरूरतमंदों के लिए उन्हें कुछ न कुछ करने की आदत सी थी । इसके लिए उन्हें किसी से उधार भी लेना पड़े तो वे निःसंकोच किसी से मांग कर भी दिया करती थीं । ककाजी को भी उनके दानलीला का आभास नहीं हो पाता थोड़ा झुंझलाते फिर स्वीकार कर लेते माँ ने किसी को दिया होगा । माँ की उधारी अंत तो गत्वा ककाजी के ही खाते में जाती ।

सहनशीलता धरती की तरह

माँ ने धरती माँ की तरह अपना जीवन जिया । दिया ही दिया सहा ही सहा सब कुछ सहा । टूटते तक सहा । यह उनके मातृत्व की पराकाष्ठा थी । पहिचान थी, परिभाषा थी वे उतना सहती थी कि उन्हें अपनी कहानी का पूर्वाभास था । उनने कई बार कहा था मुझे देखना हर्ष मेरे सिर की नसे एक आध दिल फट जायेंगी और वह हुआ । मैंने अपने आपको कई बार मां के अतंरग वृत्त में पाया पर वे कई बातें अपने सहने की मुझे भी नहीं बताती थी कि मैं असहनशील था वाले थी जो "मन की मन ही माही रही" पर झलके मुझे मिल ही जाती थी ।

एक रथ के दो पहिये मां और ककाजी

माँ एवं ककाजी के कर्म रथ, धर्म रथ, अर्थ रथ, काम रथ एवं मोक्ष रथ या सबको मिलाकर दोनों के जीवन रथ के दोनों बराबर के वजनी पहिये रहे । उस रथ से उन दोनों ने न जाने जीवन यात्रा में कितने

कॉलेज जबलपुर एवं उसके बाद लॉ कालेज नागपुर में कानूनी शिक्षा की पढ़ाई पुरी हुई । १९४२ में वकालत तो प्रारंभ किया ही उसके साथ ही साथ राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे । बहु के रूप में लोहर्सी परिवार में मां की स्थिति अत्यंत संवेदनशील रही क्योंकि उन्हें अपने मायके में सबसे बड़ी लड़की होने की मानसिक पृष्ठ भूमि को लोहरसी अपनी ससुराल में सबसे छोटी बहु होने की भूमिका में तिरोहित करनी थी और उन पर हमारी दादी (भौजी) की छोटी बहु जो अपने सामने अपने लबंरदार मालगुजार लड़के क्या गांव में किसी को कुछ नहीं समझती थी । उनसे उनकी इच्छा के विरूद्ध बात करने का साहस परिवार या गांव में किसी में नहीं थी । अपनी माँ की सेवा सूश्रूषा का बटंवारा ककाजी ने हमारी माँ के भरोसे ही अपने उपर लिया जिसे बड़े धैर्य एवं श्रद्धा से माँ ने निभाया । हमारी दादी (भौजी) का दिल जितना उनकी सबसे बड़ी उपलब्धी मैं मानता हूं जो सहनशीलता की सबसे बड़ी कसौटी तथा हिन्दू रीति - रिवाज में सास-बहू के नाजूक रिश्तों का परीक्षण प्रमाण उनके जीवन भर कायम रहा । वही मां जब बाद में सास बनती हैं तो अपनी बहुओं को पुत्री जैसा मानी और उम्मीद उनसे कुछ नहीं रखी । अत: रिश्तों की इन सबसे कठिन माप दण्ड मैं बहुत कम लोगों की तरह वे सफल रही ।

माँ के जीवन काल में विवाह के बाद १९४२ वे १९५६ का समय जूना बिलासपुर में मुख्य मार्ग वाले किराये के घर पर । १९५६ से १९६६ का काल कुम्हारपारा के बोधपुंज निवास तथा १९६६ से १९९० का काल खण्ड अलग अलग जीवन शैली एवं उत्तरदायित्वों का रहा तथा विशेषकर १९६६ से १९९० के खण्ड में जब प्राय: उनकी घरेलु जिम्मेदारी पूरी हो चुकी थी और वे बहु से सास की श्रेणी में आ चुकी थी उसी बीच उनने राजनैतिक तो नहीं पर सामाजिक सेवा के क्षेत्र में एक राजनेता की धर्मपत्नि एवं राष्ट्रीय सहकारिता नेता की पत्नि के रूप में अपनी अलग पहचान बनायी जो ककाजी के जीवन में उनके सिक्के की दुसरी पृष्ठ भूमि या उनके रथ का दुसरा पहिया बन सकी ।

१९४२ से १९५६ का काल खण्ड उनके कार्यकुशलता के प्रमाण हैं जब वे अकेली अपने ४-५ बच्चों के अतिरिक्त परिवार के भतीजे भांजों के अतिरिक्त १०-१२ बच्चों के, जो गांवों से शहर ककाजी के छत्रछाया में रहकर स्कूल एवं कालेज की पढ़ाई के लिए उनके साथ रहते थे । उन सबों का भेद रहित रख रखाव, भोजन शयन व्यवस्था अपने आप में आज ऐसा उदाहरण है जो उस समय के संयुक्त हिन्दु परिवार में भी दुर्धर्ष कार्य था । उसी बीच उनकी भूमिका कर्तव्यनिष्ठ पति सेवी पत्नी की ममत्व भरी माँ की बहन की मामी की, बहु की, चाची की सब एक साथ प्रमाणित होती थी । ऐसा जीवन, ऐसे कुंटुब का प्रारंभ कोई नई नवेली छोटे मोटे दिल वाली बहु आज तो सपने में भी नहीं कर सकती । इस समय की कुछ घट नायें तथा माँ की बातें मुझे अभी भी अभिचित्रित सी याद हैं । कभी कभी मैं जब उलाहना सा देता कि माँ

मेरा ख्याल नहीं रखती तो माँ मुझे ऐसा जवाब देती जो मुझे महिनों निरुत्तर किये रहती वे कहतीं "क्या करोगे हर्ष मैं तुम्हारी सौतेली माँ जो ठहरी" उनके इस जवाब में जो मेरे उलाहना पर कटाक्ष हैं वह हमारे उस संयुक्त हिन्दु परिवार के परिवेश के सभी बच्चों के साथ अपने बच्चे का भेद न कर पा सकने की मजबूरी का अहसास भी है । उनकी यह दार्शनिकता मुझे आज समझ में आती है । न जाने क्यों प्राकृतिक रुप से मैं बचपन से ककाजी के आजीवन करीब रहा भले भौतिक दूरियां रही हों नीति एवं व्यक्तिगत समझ में भेद हो । ऐसे ही माँ के दिल में भी बचपन से मैंने अपनी अलग जगह बना रखी थी । कभी - कभी माँ एवं ककाजी के बीच मैं एक सेतु सा बन जाता था और कभी कभी निर्णायक भी रहता था कि घरेलु निर्णय में किनका पक्ष ज्यादा सही हैं ।

इतने बड़े सामूहिक परिवार में उस घर में मां की मदद के लिए खाना बनाने एक रींवा के पंडित जी एवं कुमारी की दीदी थी । पर अपने रहते रसोई का काम में उस घर में किसी को दी हों मुझे याद नहीं । माँ यदा कदा जब थककर झुलना आ जाती तो इन दोनों को घर में बच्चों के भोजन आदि की व्यवस्था पहाड सा आ बनता और जैसे तैसे माँ के आते तक कायम रहता । किसी को संदेशवाहक भेज मां को मायके से बुलाना पड़ता । मां झुलना जाती तो बचपन में प्रायः मैं और अशोक छोटे होने के कारण उनके साथ ही निकल जाते ।

इस बीच का समय माँ के लिए चुनौती पूर्ण था । वकालत का प्रारंभ ककाजी १००-१५० रुपये अपने घर से लेकर किये थे । प्रारंभिक समय से ही उनकी प्रतिभा को बैरिस्टर साहब का मार्गदर्शन मिला वे ख्यातिलब्ध होने लगे । जमते जमते कम आमदनी में भी उतने बड़े सम्मिलित परिवार के बच्चों की व्यवस्था नीतिपूर्वक करनी पड़ती । ककाजी डायरी में तबसे अपनी आय एवं व्यय का एक एक विवरण रखते तो दुसरी ओर व्यवहारिकता के धरातल में सभी घरेलु चीजों की व्यवस्था माँ करती। जीवन के स्तर के संबंध में ककाजी कालेज के दिनों से जागरुक थे और मां वैसी ही व्यवस्था करती उनके अनुरुप तथा अनुकूल । माँ के व्यक्तित्व में शुरुसे अंत तक नम्रता करुणा थी । ककाजी प्रारंभ में घर के नीति एवं नियम से कठिन थे । एक बार चाय उनके अनुरुप नहीं बनी तो पूरा चाय पत्ती का डब्बा उनने सड़क पर फेंक दिया था । माँ निर्विकार रही तबसे ककाजी के चाय पर घर में शिकायत का मौका नहीं मिला । माँ एवं ककाजी साथ - साथ सैर सपाटे में निकले हों यह मेरे याददास्त में नहीं। दो यात्रायें ही याद हैं ककाजी माँ का दादी के साथ हरिद्वार वृंदावन की तीर्थ यात्रा तथा दुसरी बार उड़ीसा में ककाजी के पेटदर्द के लिए अंगुली में एक संत द्वारा जड़ी बुटी का वितरण । उसमें उनके कालेज के सहपाठी गजानन मामा भी साथ गये थे । उस समय भी हम लोग तीर्थ यात्रा जगन्नाथपुरी का कर आये । ककाजी एवं अतिथियों

के अनुरुप भोजन में माँ की अच्छी प्रतिभा थी । ककाजी के गुरुदेव बालकृष्णपुरी जो सन्यासी थे एवं बिलासपुर के आवास के समय हमारे यहां ही ठहरते थे । उनने भी कई नये व्यंजन माँ को बताये थे तथा उनकी पाक कला सदैव सब रिश्तेदारों द्वारा प्रशंसित रही । उन दिनों अमोद प्रमोद मित्र मंडली में जाने आदि की फुर्सत माँ को बहुत कम मिलती थी और घर में ही बहुत व्यस्त रहा करती थी ।

१९५६ बोध पुंज में गृह प्रवेश

१०-१२ वर्ष में वकालत, राजनीति में ककाजी ने क्रमशः अपना स्थान सुदृढ़ किया एवं बिलासपुर के नामीगिरामी वकीलों में गिने जाने लगे । उनका सर्कल भी बढ़ता गया उस दायरे के अनुरुप माँ का स्थान भी व्यापक होते गया इस बीच ककाजी ने पर्याप्त बचत नये जमीन एवं स्वयं के मकान के लिए की और बोधपुंज का निर्माण कराया उस समय जूना बिलासपुर में वह भवन अच्छे भवनों में गिना जाता था । उसके नामकरण में मेरा प्रस्ताव मान्य रहा जब ककाजी के माँ एवं पिता बोधकुंवर एवं बोधराम के संयुक्त नाम बोधपुंज, मैंने सुझाया । बड़े घर में अतिथियों की, साथ पढ़ने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ी माँ का अतिथि सत्कार भी बढ़ा । नीक और छुआ मानने वाले बड़े बुजुर्ग रिश्तेदारों के लिए वे नीक में भोजन बनाने की व्यवस्था करती । घर में बहिन न होने के कारण मुझे ही पोतिया पहन बुजुर्गों को परोसना पड़ता । बाकी भाई ऐसे समय में नदारत रहते ।

माँ की मित्र मंडली सीमित थी रजमीहिन, रमा देवी, जानकी पास के मंदिर की दो भक्तिन जूना बिलासपुर अग्रवाल परिवार की कुछ एक महिलाओं तक वे सीमित थी । पर उनसे मिलने जुलने वाले प्रशंसक बहुत थे ।

विधवाओं का सम्मान

माँ के जीवन में एक नहीं अनेक विधवा महिलाओं ने सम्मान एवं परवरिश माँ के साथ पाया । यह उनके व्यक्तित्व के एक विशेष पहेलु को उजागर करती है जिसमें विधवाओं के जीवन को अभिशप्त न मान उन्हें विशेष सम्मानजनक स्थान उनने उपलब्ध कराया । कई विधवायें, परित्यक्तायें, भक्तिन उनसे समय - समय पर जुड़ते रहे । यह एक महज संयोग नहीं था ककाजी के फूफू जो सारंगढ़ नेगी परिवार में ब्याही गई थी, ने अपने अंतिम समय में माँ की छाया एवं सम्मान को अपने अनुकूल समझा । कई

विधवाओं को उनने आजीविका तथा समय समय में सहारा भी दिया उनके साथ शुरु में जुड़ी कुमारी नीदीदी एवं न्याय प्राप्त करने, अपने लड़के की शिक्षा हेतु कुछ वर्ष तक समाज की कुमारी नाम की महिला ने भी माँ का आश्रय पाया । मैं नहीं सोचता जितना अपने जीवन में विधवाओं के लिए माँ ने किया समाज में किसी और ने किया हो और उनके इस कार्य में उनके आजीवन करुणा की भावना इस वर्ग की महिलाओं के लिए क्रियाशील रहती थी ।

अपनी छोटी बहन रामप्यारी के लिए उनके जीवन के लंबे काल तक वे एक बहुत बड़ी संबल रही और उनके गृहस्थी को नये सिरे से संवारने में उनका योगदान एक माँ, पिता या बड़े भाई से भी कम नहीं था । माँ के ऐसी कई सुधारवादी कार्यों में ककाजी का आदर एवं सहयोग उन्हें सदैव मिलता था।

दर्प रहित कीर्ति की सीढ़ियों पर जिम्मेदारियों को निभाया

१९६६-६७ के विधान सभा चुनाव एवं उसके बाद सहकारिता मंत्री एवं विधि मंत्री के रूप में ककाजी की बढ़ती प्रतिष्ठा के अनुरूप माँ की सामाजिक जिम्मेदारियां दिनों दिन बढ़ती गई जब घर के बाहर ककाजी राजनीति वकालत तथा सामाजिक कार्यों में व्यस्त होते गये । इस बीच अतिथि, सामाजिक, सहकारी, राजनीतिक कार्यकर्ताओं का पर्याप्त ख्याल उनके घर आने पर माँ की जिम्मेदारी ही होती और कोई यह नहीं कह पाता कि उनका ख्याल नहीं रखा गया । बढ़ती सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ माँ के व्यवहार में शालीनता, करुणा का स्थान बढ़ा ही कम नहीं हुआ और उसी अनुपात में जिम्मेदारियां भी बढ़ी ।

१९६६ से क्रमशः ककाजी सहकारिता राजनीति के क्षेत्र में क्रमशः वर्ष प्रतिवर्ष नई उचांइयां हासिल करते रहे । १९७० में सांसद बने भोपाल से दिल्ली का निवास बदला तो मां कभी भोपाल, दिल्ली कभी बिलासपुर सम्हालती रहती । कुछ समय ककाजी के लिए, कुछ बच्चों के लिए और अधिकांश बिलासपुर एवं गांव की जिम्मेदारी के लिए । नये नये लोग ककाजी के साथ उनकी जिम्मेदारियों के नये नये सिलसिले में बिलासपुर, भोपाल, और दिल्ली में जुड़ते गये वे सभी मां के संपर्क में भी आते और सभी के मन में मां ने अपनी सरलता तथा निरार्भिमानता का जो स्थान बनाया वह ज्यादातर राजनेताओं के गृहणियों में कम ही मिलता होगा । मां के जीवन में यह अंत तक वैसा ही निरभिमानी बना रहा । उनके पास एक अदने से कर्मचारी और एक बड़े नेता के बीच ज्यादा मानवीय अंतर की मान्यता नहीं रहती थी ।

अतिथि देवो भव

हिन्दू परिवार की मूलभूत मान्यताओं में अतिथि को देव का दर्जा है । मां ने अपने यहां आने वाले अभ्यागतों का इतना ख्याल अवश्य आदतन रखा कि उनकी घर में सम्मान पूर्वक व्यवस्था की, खाने पीने की भोजन पानी की । अभ्यागतों में परिवार जन जो बहुत संख्या में थे । सामाजिक, राजनैतिक सहकारी कार्यकर्ता, विशिष्ट एवं बड़े बुजुर्ग जो भी आये हों उन्हें यह तो उस घर में अवश्य लगता रहा कि इस घर की व्यवस्थापिका गृहणी अतिथियों का सम्मान धार्मिक कार्य मान कर करती हैं । जरूरत मंद लोग ज्यादा आते जाते थे पर मां उनकी अवहेलना अपने घर में कभी होने नहीं देती थी । उनके परिवार के बृहद हो जाने के बाद भी अपनी इस जिम्मेदारी को उनने खुद ही निभाया जिसका ककाजी के राजनैतिक सामाजिक जीवन में विशेष प्रभाव रहा ।

वे कर्मयोगी थी

पारिवारिक सामाजिक व्यवहारों में उनकी भूमिका अपने कर्तव्य पर आधारित रहा करती थीं । किसी से या किसी की अपेक्षाओं पर नहीं । उनके दिल तथा दिमाग में यह प्रभावशील रहता था, कि उन्हें दुसरों के लिए क्या करना है यह नहीं कि दूसरे उनके लिए कर्तव्य निर्वाह कर रहे हैं या नहीं । उनके गृहस्थ की इस कर्तव्य परायणता के कारण ही ककाजी उत्तरोत्तर उन पर गृह व्यवस्था में निर्भर होते गये, आश्वस्त होते गये क्योंकि उन्हें विश्वास था मां जो भी करेंगी निर्विवाद कर्मयोगी की तरह करेंगी । परिवार जनों में अपने ससुराल एवं मायके पक्ष में जो भी रहा हो प्रायः शतप्रतिशत उनके लिए अपने जीवन काल में उपकृत की सीमा तक कुछ न कुछ उनने किया ही बिना इस उम्मीद के कि वे उनके लिए क्या करेंगे । आज के इस युग में इस मनोवृत्ति का व्यक्तित्व मिलना प्रायः मुश्किल ही है ।

माँ का परिवार मातृत्व का भार

जब कोई रिश्ते का संबोधन किसी के नाम का पर्याय बन जाय तो उस संबोधन में उस व्यक्तित्व का परिचय भी आभासित होता है जैसे कि हमारी दीदी का भौजी कहा जाना हमारे पिता जी का ककाजी कहा जाना । हर रिश्तेदार, नाती पोते से लेकर नवागुंतुकों का बिलासपुर भोपाल दिल्ली या जहां भी वे रहीं, मां का संबोधन निश्चय ही उनकी मां वाली व्यक्तित्व को उजागर उनके जीवन पर्यन्त करती रही ।

वे केवल अपने पुत्रों की ही माँ नहीं रहीं ऐसा भी समय आया जब अपनी सास, माता पिता, बहन, भाई के लिए भी उन्हें माँ की भूमिका निभानी पड़ी । उनकी माँ का संसार बड़ा विस्तृत था उसमें सब समाहित थे एक भिखारी से लेकर राजनेता उच्च अधिकारी तक वही भूमिका आपने आजीवन निभाई और वहीं उनकी सबसे बड़ी सफलता थी उनका मापदंड था । धरती की तरह उदार हृदया सहनशील कल्याणकारी वे जीवन पर्यंत अपने ही बच्चों के लिए ही नहीं, नाती पोतों एवं रिश्तेदारों के लिए ही नहीं जो भी उनके संपर्क में आया सबके लिए वे रही । जो जितनी अधिक तकलीफ में होता वे उसकी उतनी ही करीब उतनी ही बड़ी मां वे बनती । दानवीरता उनके जीवन का अंग था ।

माँ की उदारता एवं दानवीरता विलक्षण रूप में थे तथा बिना उजागर किये गरीबों, जरूरतमंदों के लिए उन्हें कुछ न कुछ करने की आदत सी थी । इसके लिए उन्हें किसी से उधार भी लेना पड़े तो वे नि:संकोच किसी से मांग कर भी दिया करती थीं । ककाजी को भी उनके दानलीला का आभास नहीं हो पाता थोड़ा झुंझलाते फिर स्वीकार कर लेते माँ ने किसी को दिया होगा । माँ की उधारी अंत तो गत्वा ककाजी के ही खाते में जाती ।

सहनशीलता धरती की तरह

माँ ने धरती माँ की तरह अपना जीवन जिया । दिया ही दिया सहा ही सहा सब कुछ सहा । टूटते तक सहा । यह उनके मातृत्व की पराकाष्ठा थी । पहिचान थी, परिभाषा थी वे उतना सहती थी कि उन्हें अपनी कहानी का पूर्वाभास था । उनने कई बार कहा था मुझे देखना हर्ष मेरे सिर की नसे एक आध दिल फट जायेंगी और वह हुआ । मैंने अपने आपको कई बार मां के अतंरग वृत्त में पाया पर वे कई बातें अपने सहने की मुझे भी नहीं बताती थी कि मैं असहनशील था वाले थी जो "मन की मन ही माही रही" पर झलके मुझे मिल ही जाती थी ।

एक रथ के दो पहिये मां और ककाजी

माँ एवं ककाजी के कर्म रथ, धर्म रथ, अर्थ रथ, काम रथ एवं मोक्ष रथ या सबको मिलाकर दोनों के जीवन रथ के दोनों बराबर के वजनी पहिये रहे । उस रथ से उन दोनों ने न जाने जीवन यात्रा में कितने

उतार चढ़ाव, नदी नाले, दिन रात, अंधकार, प्रकाश काटे और पार किये साथ साथ । लोहरसी तथा झुलना के ग्रामीण परिवेश से लंदन दिल्ली, भोपाल की यात्रा की । कई बड़े बड़े धार्मिक सामाजिक सहकारिता एवं राजनैतिक पड़ाव डाले । सभी को जो जहां तक साथ चल सकते थे उनके साथ, अपने साथ लिया। और फिर सबको भूला दिया कि किस के लिए क्या क्या नहीं किया । समय के चक्र के साथ उनका जीवन रथ भी चलता रहा उस गृहस्थ रथ का एक चक्र उठ कर १९९० में अनंत की यात्रा में चला गया फिर एक ही पहिये से गृहस्थी का भार चला कुछ और चला और चलेगा आत्म विस्मृति तक चलेगा क्यों कि जो बुनियाद इन व्यक्तियों की जड़ों में है, गहराइयों में है वे सतही नहीं शाश्वत है, परमार्थी हैं, निश्चल है, निश्छल हैं । दोनों के संबंधों की व्याख्या जीवन की व्याख्या है शब्दों या किताबों का विषय नहीं उनकी झलक उनके जीवन के दस्तावेज हैं । उनके बीच के पत्र हैं जो मां ने आखिर तक संहाल के रखे थे और मुझे दिया था । उन पत्रों में थी उन दोनों के जीवन रथ के, मंजिलों के पड़ाव के यात्रा के कठिनाइयों, जीवन के अर्थों की जीवन्त व्याख्या और समझ, उनमें रहती थी । बिलासपुर से बाहर जहां भी मां एवं ककाजी साथ साथ रहे हों भोपाल, रायपुर, दिल्ली या लंदन उनकी समरसता देखने योग्य रहती । उन दोनों के पत्रों का आदान प्रदान अद्‌भूत था अद्वितीय था । यदि यह कहा जाय कि माँ ने पढ़ना लिखना ककाजी के पत्रों को पढ़ने एवं उन्हें पत्र लिखने के लिए ही सीखा था तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । ककाजी का पत्र आदर्श का पर्याय होता था तब माँ के पत्र भावना के पर्याय बनते थे और दोनों के पत्र सदैव कर्म के पृष्ठों पर लिखे होते थे और यही दोनों की जीवन शैली रही । यही उनका गृहस्थ रहा । ककाजी माँ को देवी लिखा करते थे अपने पत्रों में एवं खुद को उनका जीवन और माँ लिखा करती थी उन्हें प्राण आधार और खुद को दासी । मैं सोचता हूँ यही उनके गृहस्थ जीवन दर्शन थे दांपत्य जीवन दर्शन थे ।

माँ ने मुझे मातृऋण से उऋण घोषित किया

अपनी उपलब्धियों में सबसे बड़ी उपलब्धि में माँ के अपने प्रति विश्वास को मानता हूं । उन्हें विश्वास रहा मैं कोई गलत काम नहीं करूंगा । उनकी जिम्मेदारियों के कई छोटे बड़े काम मुझे वे सौंपती थी और उनका मैं अपनी शक्ति के अनुरूप अंजाम देता था । उन्हें विश्वास था उनकी बातों को मैं टालूंगा नहीं और उन्हें मालूम था कि उनके कुछ निर्देशों को मैं मानूंगा भी नहीं । कभी कभी ककाजी की महत्ती जिम्मेदारी भी वे घर में मुझ पर ही छोड़ती थी । एक बार मेरे जन्मदिन पर उनसे मैंने अपने जीवन के लिए संदेश लिखकर देने को कहा और उनने लिखा "गुस्सा मत किया करो" आज मैं सोंचता हूँ मेरे जीवन के यह मन बहुत बड़ा संदेश हैं । इन सभी विश्वास अर्जन के बावजूद के वाद भी २-४ बार मुझे तथा अन्य कुछ लोगों को मोने मेरे बारे में कहा हर्ष को मैं मातृ ऋण से उऋण करती हूं । इसके लिए दो छोटे छोटे कारण

थे । १९७७-७८ में मैं इंग्लैंड में लंदन में कामने वेल्थ फेलो था मां ने बंबई से मुझे तथा रीता को बिदाई दी थी नम आँखों से । ककाजी अग्रगण्य सहकारिता के नेता के रूप में १०० बार विदेश यात्रा कर चुके होंगे । पर माँ को साथ नहीं ले जा पाये । लंदन में हमने एक घर फेलोशिप के दौरान किराया ले रखा था । मैंने सोचा यह मां के लिए विदेश यात्रा का स्वर्णिम अवसर होगा मैंने लंदन से ही एयर फ्रांस की हवाई टिकिट मां के आने जाने का बनवा कर भेज दिया ताकि ककाजी को उनको अपने साथ लंदन जाने की बाध्यता हो जाय । इसी समय रीता सत्यम के संसार प्रवेश की प्रतीक्षा में थी ।

माँ ककाजी के साथ लंदन आयी । हमारे साथ कुछ महिने रही हमारे लंदन के आवास में । सत्यम हमारा बड़ा लड़का भी उनकी उपस्थिति में हुआ । रीता एवं सत्यम ने अपने लेखों में उस समय का जिक्र किया है । पर मैं जो करना चाहता हूँ वह यह कि लंदन जैसे आधुनिक विश्व की बड़ी नगरी में माँ को कोई कौतूहल नहीं हुआ और न ही उनके वहां के कोई दर्शनीय स्थल देखने की इच्छा व्यक्त की उनकी स्थिति प्रज्ञता ही इस कौतूहल विहिन मानसिकता एवं प्राज्वल्यमान बौद्धिकता का परिचायक था ।

दूसरा कारण जो माँ लोगों को मुझे उनके मातृ ऋण से उऋण होने के लिए बताती हैं वह था उनके पिता के याने मेरे नाना के केंसर की रेडियेशन थेरेपी के लिए हमारे घर रायपुर के आवास में उन्हें रख उनकी सेवा सूश्रूषा करने की रही । यह रीता या मेरे लिए तो एक सहज कर्तव्य का काम था और विशेष कर हमारे नाना जैसे साधू प्रकृति के व्यक्तित्व का सान्निध्य और ऐसे समय में सेवा, हमारे स्वयं के लिए पुण्य का काम था । हमारे नाना ने इस निमित अपने अंतिम समय में माँ के प्रस्तावना पर जो हमारे साथ बिताये सेवा का अवसर दिया अर्न्तमन से आशीर्वाद दिया वह भी हमारे इस निमित्त माँ के आशीष की तरह बेशकीमती हैं और उनका इस तरह उऋण घोषित करने का उनका अपना अंदाज ही रहा जो भी रहा मेरे लिए वह एक सबसे बड़ी उपलब्धि हैं ।

माँ के पांच बेटों के परिवार की धुरी

माँ की भूमिका का सबसे बड़ा मूल्यांकन उसके मातृत्व का उसके बेटे ही करते हैं फिर ऐसी माँ का जिसे सभी माँ कहने लालयित हों पन्ती छन्ती नाती पोते से अजनबी तक और ऐसी माँ का मातृत्व कितना वजनी होगा भावनात्मक होगा, जिसने अनुभव नहीं किया हो उसके लिए कल्पनातीत हो सकता है ।

ककाजी ने अपने पुत्रों का नाम चयन तो खुद ही किया । जैसा नाम था योगेश, प्रशांत, विनोद, हर्ष, अशोक वैसा ही उनसे व्यवहारित किया माँ ने । माँ एवं बेटे का संबंध मार्मिक भावुक एवं आजीवन होता है और दोनों के लिए इस खून के संबंध का विछोह सबसे अधिक पीड़ा दायक होता है । माँ के सामने दो जवान पुत्रों का जाना बड़े भाई एवं वकील भाई का तथा मन्झली बहु का बड़ा हृदयविदारक था । उनके अपने बच्चों को अपने मातृत्व के मापदण्ड में छोटे या बड़े के क्रम में नहीं माँ और बेटे के संबंध में देखा और यह संबंध बहुत कठिन है उसी बराबरी से आभासित कर पाना । माँ एवं बेटे का संबंध बड़ा या छोटा नहीं होता केवल वही होता है । फिर जैसे जैसे परिवार बढ़ा बहुयें प्रतिभा, कविता, शकुन, कल्याणी, रीता आई फिर माँ दादी पर-दादी बनी और उसके बाद भी मीली, कीर्ति, राजा, विवेक, संजय, सूचिता, वैभव, अपूर्व, रजनीश, दीपांजलि, पुष्पांजलि, बाबी, सत्यम, सुजाता, यश जब उनके परिवार की गिनती में जुड़ते गये पन्ती छन्ती भी आने लगे तो माँ ही बनी रही दादी पर दादी नहीं । यह कहना कठिन नहीं असंभव है कि माँ ने किस बेटे, बहु, नाती को ज्यादा प्यार किया या किसे कम । लम्बे जीवन के अंतराल में ऐसे भी अवसर आते हैं जो झंझटों, परेशानियों में एक दुसरे के अनुस्य न पाने या कर पाने पर दुख हो, ग्लानि हो पर सर्वार्थ में अपने सब बच्चों के प्रति उनकी करुणा, दया, कृपा, प्यार, दुलार, विचार, व्यवस्था में टुटते तक अपना योग दान माँ ने दिया और बच्चों को बच्चा माना अच्छा या बुरा नहीं । फिर अपनी इतने व्यापक जिम्मेदारियों के बीच ऐसे संबंधों को अटूट, अडिग, अखंड बनाये रखना किसी भी माँ के त्याग एवं तपस्विनी व्यक्तित्व का भी परिचायक है ।

माँ का "राम निवासू" हृदय

रामायण में ककाजी एवं माँ दोनों की अगाध श्रद्धा थी तथा दोनों की मर्यादा का आधार रामायण ही था । यह संयोग नहीं संस्कार था कि रामायण के भगवान राम को जिन मनुष्यों के हृदय में वास करने वाल्मिकी जी ने कहा था वह न केवल राम भगवान के वास के लिए पर्याप्त था वरन् ककाजी के लिए भी था । रामायण की उन पंक्तियों का उदाहरण जो माँ के जीवन में जीवन्त हुआ यहाँ रखना उनके जीवन परिचय में उनके व्यक्तित्व की बनावट समझने युक्ति युक्त होगा ।

काम मोह मद मान न मोहा

माँ ने कभी कोई कामना नहीं की पर कईयों की कामना पूर्ति में सहायक बनीं । इतनी शांत स्वभाव की थी कि दूसरों पर उनने गुस्सा कभी नहीं दिखाया । ककाजी के सहधर्मिणी के रूप में उनके साथ सर्वोच्च प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर के पदों में रहते उन्हें कभी पद का मद या मान सम्मान पाने, कराने का मोह या वृत्ति उनके मन में नहीं आई । उनके उदान्त स्नेह ने कभी उन्हें मोहित नहीं होने दिया ।

लोभ न छोभ न राग न द्रोहा

विशाल हृदया माँ को जीवन पर्यन्त लोभ रंच मात्र नहीं रहा । जब वे कठिन से कठिन आर्थिक परिस्थिति में रही हों तब या जब सब कुछ पा सकने की स्थिति में रही हों तब भी । शांत मन वाली माँ को किसी बात का न छोभ था न किसी के प्रति अनुराग । उनने उनके लिए भी कभी लेशमात्र द्रोह नहीं किया जो यदा कदा उनके विपरीत आचरण करते या पीठ पीछे बुराई करते ।

जिनके कपट दया नहीं माया, तिन्हके हृदय बसहु रघुराया

सरल हृदया माँ व्यवहारिक जीवन के छल कपट के स्त्री सुलभ प्रपंच से सदैव अछूती रही । अपनी तथा पति की प्रतिष्ठा उपलब्धि का कोई भी दंभ उनके आचरण में जीवन भर कभी किसी ने भी नहीं देखा होगा । जीवन को वे सच्चाई से जीती थी एवं माया या मायावी आडम्बर उन्हें कभी पसंद नहीं रहे । ऐसे हृदय में माँ के भगवान राम रहे या हमारे ककाजी, सार्थक ही है ।

सबके प्रिय सबके हितकारी

सबके प्रिय बने रह सकना एक असाधारण व्यक्तित्व की उपलब्धि है जो मां में थी और वैसे ही सब के हित का चिंतन और हित करने की क्षमता रखना भी साधारण व्यक्तित्व से संभव नहीं अपने आप ऐसे

लोगों को त्यागी व तपस्वी बनना ही पड़ता है । खुद कांटों में चलकर दूसरों का रास्ता प्रशस्त करना पड़ता है । माँ ने ऐसा किया भी ।

दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी

गीता की इस मनः स्थिति को जीने के लिए योगी सा जीवन जीना पड़ता है । यहीं सिद्ध किया माँ ने अपने जीवन में, कि पढ़ने लिखने से गुनना ज्यादा सार्थक है । माँ हमेशा समभाव रहीं जब उनने दुख झेले या सुख झेले उसी तरह समभाव रही जब उनकी लोगों ने तारीफ की या उनकी आलोचना की। इस द्वन्दातीत जीवन में ककाजी और माँ ने बराबर की महारथ हासिल की थी ।

कहंहि सत्य प्रिय बचन बिचारी

माँ सुनती ज्यादा थी लोगों से बोलती कम थी और जब भी बोलती यह सोंच विचार कर बोलती कि उनकी बात से किसी को ठेस न पहुंचे पर उसे अच्छा लगे और साथ में सत्य भी हो, मिठलबरी वे न बनी । अपने जीवन में व्यक्तित्व का यह आयाम उनने पढ़ाई नहीं चिंतन एवं विचार से प्राप्त किया था ।

जागत सोवत सरन तुम्हारी

ईश्वर पर माँ का अटूट विश्वास था और ईश्वर की इच्छा को ही वे निर्णायक मानती थी और शायद इसीलिए निश्चिंत रही आजीवन कि जब सब कुछ ईश्वर को ही करना रखना है तो उनके द्वारा चिंता करना कितना निरर्थक होगा ।

जो हरषहिं पर सम्पत्ति देखी

दुसरों के सुख में वे सरीक होती थी और दूसरों की उन्नति में तहे दिल से उत्साहित करती थी और प्रसन्न होती थी । ये केवल उदान्त मना व्यक्तित्व के ही परिचायक हैं । छोटी एवं ओछी मानसिकता वाले लोग दुसरों की तरक्की या वैभव नहीं देख पाते ।

दुखित होंही पर बिपति विसेखी

दुसरों के दुख से दुखी होना माँ का स्वाभाविक गुण था, स्वभावतया उसमें यह सोचने की जगह नहीं थी कि उनके दुखी होने से दूसरे के दुख तो कम नहीं हो जाते । पर दुखी व्यक्ति को यह अहसास तो करा देते हैं कोई व्यक्ति उनके लिए संवेदनशील हैं । अपने परिवार जनों के लिए तो सभी ऐसा कर लेते हैं पर किसी को भी दुख एवं कष्ट या विपत्ति में देखकर दुखी होना ऊंची मानसिकता और बड़े हृदय का परिचायक है जो माँ में थी ।

तिन्हहीं राम तुम प्राण पियारे, तिन्ह के मन शुभ सदन तुम्हारे

ईश्वर के उपयुक्त ऐसे मन और हृदय की माँ स्वामिनी थी अत: उनका जीवन देवत्व की ओर धार्मिकता एवं हिन्दू संस्कार से अभिभूत रहा । आध्यात्म एवं व्यवहार का अद्‌भूत संगम माँ के व्यक्तित्व में था । ईश्वर को वे तार्किक रूप में ककाजी की तरह ज्यादा मानती थी कर्मकाण्डी रूप में कम, पर धर्म कर्म में हमेशा लगी ही रहती थी ।

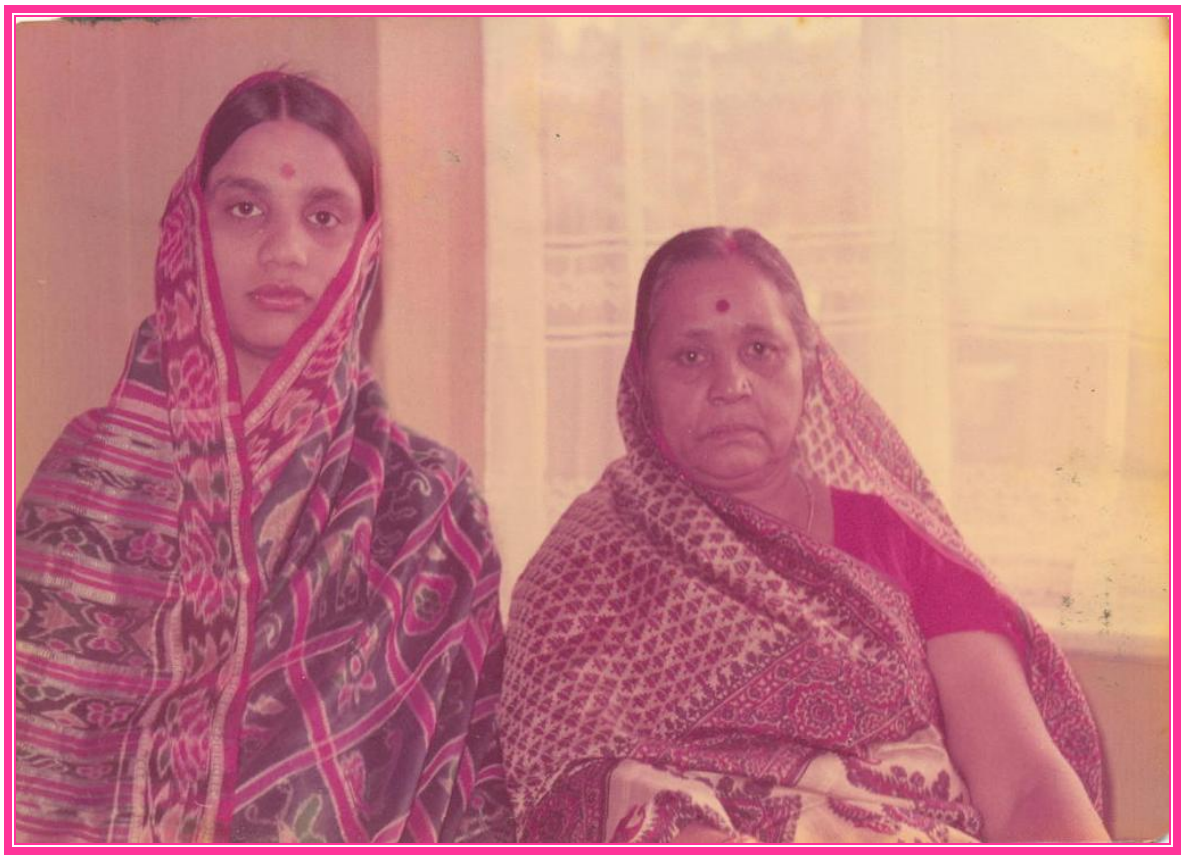
अनगुन तजि सबके गुन गहहिं
विप्र धेनुहित संकट सहहिं

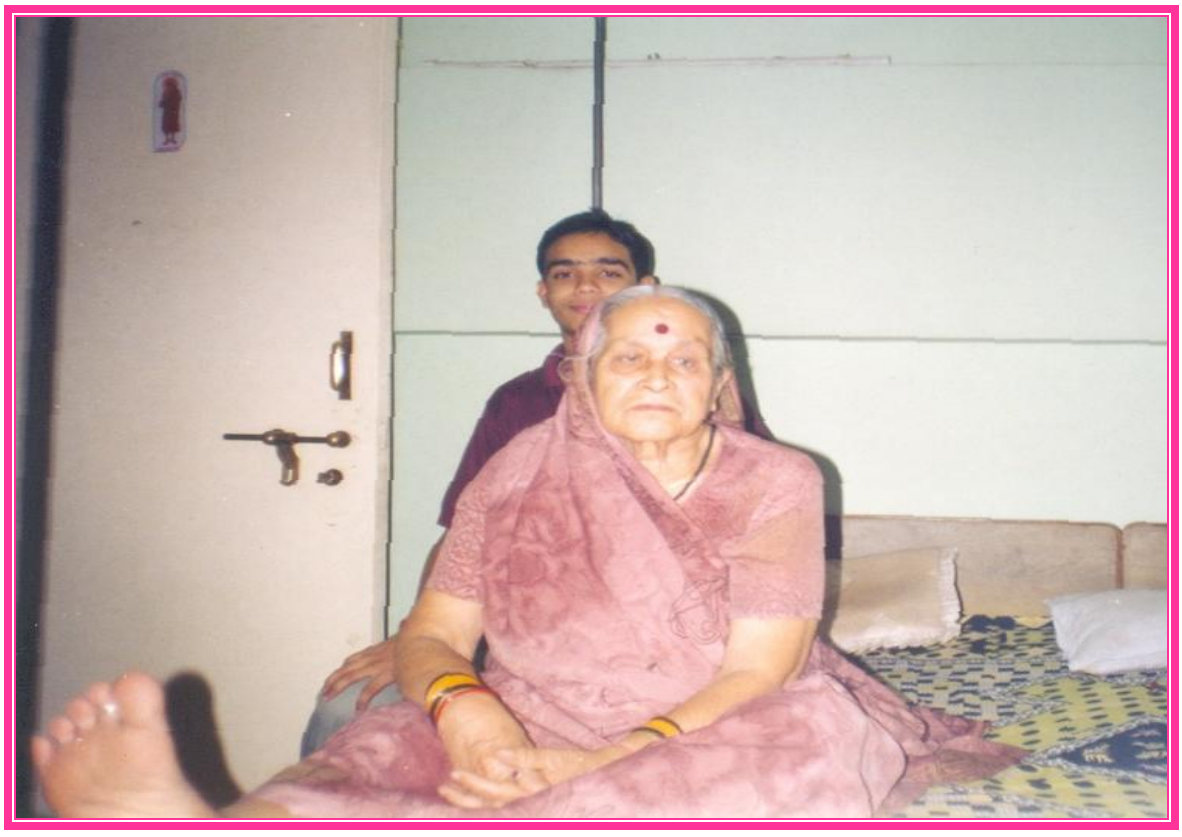
माँ गुणग्राही थी परन्तु सम्पर्क में आने वालों की इसलिये भी अवमानना नहीं करती थी कि वे अवगुणी हैं । उनके हृदय की विशालता में उनके व्यवहार में गुणी एवं अवगुणी के बीच का भेद भी नहीं रहता

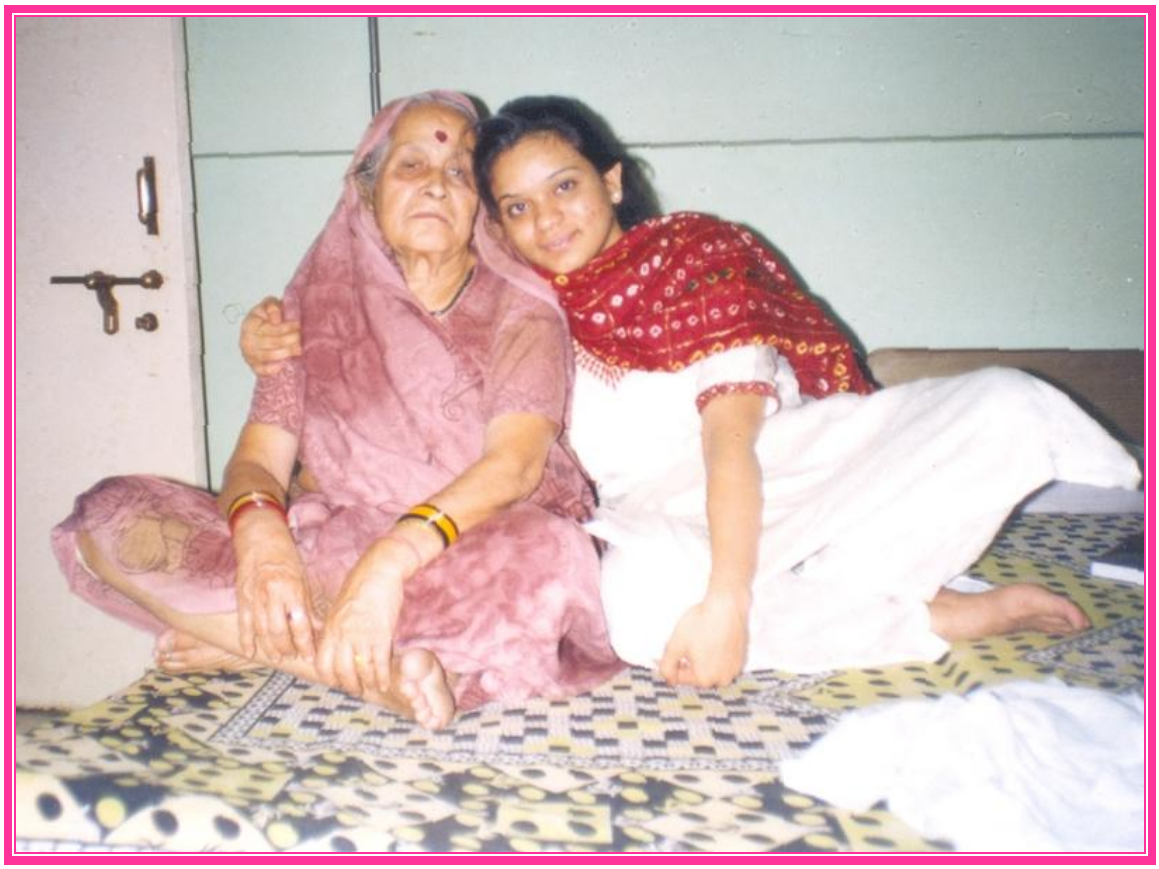
था । दुसरी ओर हिन्दू धर्म की संस्कारों में बडी होने के कारण विप्र सम्मान एवं गाय की सेवा उनकी धार्मिक क्रियाओं के अंग थे । रायपुर से एक बार अपनी डेयरी (गोधन) जो मैंने एकत्रित किये ते छोटे घर में जाने पर मैंने माँ को उनसे लिये ऋण के बदले लौटाया । उनके रहने तक उनकी व्यवस्था बहुत अच्छी रही पर उनके बाद कोई उन्हें सम्भाल नहीं पाये सब विच्छिन्न हो गये ।

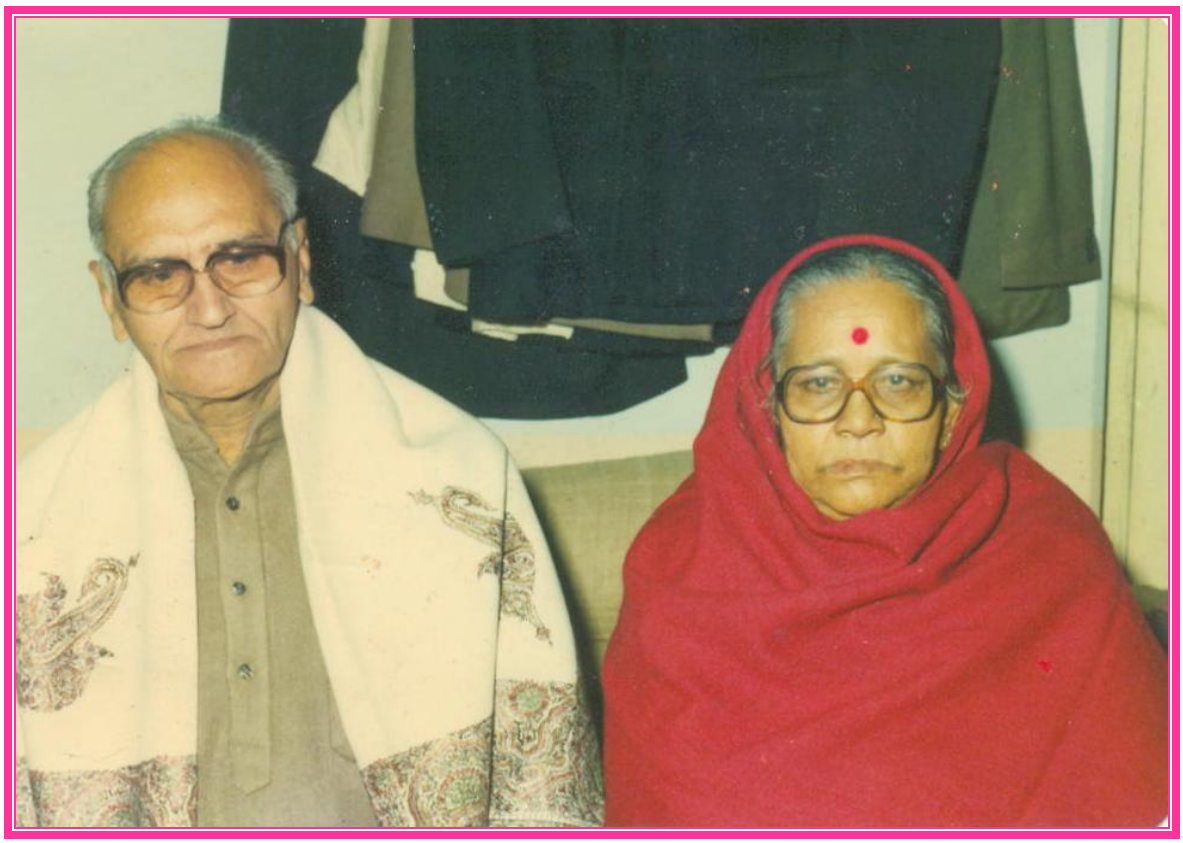
नीति निपुन जिन्हके जग लीका,
घर तुम्हार जिन्ह कर मनु नीका

माँ नीति निपुण थी । कई बार उनकी नीति निपुणता का लाभ अपरोक्ष रुप से ककाजी को मिलता था सलाह के रुप में या गृहस्थी के संचालन में । नीति निपुणता भी उदस्त विचारों का जीवन में अनुसरण, पालन कर ही संभव हो पाता है । इस तरह सभी दृष्टिकोण से उदार, करुणामयी, नीति, कर्मज्ञ माँ का हृदय या मन आध्यात्म में भी उनकी पृष्ठ भूमि बनाने सक्षम था और इस तरह उनके हृदय में रामायण के राम का निवास तो था ही ककाजी का भी उतना ही साधिकार आवास था दोनों का माँ बराबर ख्याल जीवन पर्यन्त करती थी।









Photograph of Shri and Smt. R.G. Tiwari at Delhi M.P. residence.



Photograph of Shri and Smt. R.G. Tiwari taken at London residence of Dr.H.V. Tiwari while he was COMMON –WELTH ACEDEMIC STAFF fellow 1977-78.

Back